Bill No. 3/07-08

149.

2008-0314

-माधवनिदान of माधवकर -
Edited with the commentary in old Hindi by Pt. दत्तराम माथुर.
Lithoprint edn., 2/e, मथुरा, 1886 A.D.

1276

50

माधवनिदान of माधवकर
Ed. with Comm. in Hindi by दत्तराम
Lithoprint edn., 2/e,
मथुरा, 1886

■भारतीय टीम जू. विश्व...

...को सिडनी में वेल्स के खि... आगामी 6 अक्टूबर को होने... जैसे पेनाल्टी कार्नर, रक्षा... प्रशिक्षण शिविर के दौरान इ... स्काटलैण्ड, स्पेन और क... भारत को अपना पहला... इण्ड और आयरलैण्ड क... कि अर्जेन्टीना, जर्मनी, ... य प्रशिक्षक ने यह माना ... जैसी टीमों से जबर्दस्त...

...ला स्तरीय जू...

वाराणसी

29 सितम्बर

सिगरा स्टेडियम में खेल... य खेल विभाग के तत्वा... जिला स्तरीय जूनियर बा... आज लाईट फ्लाई वेट ... प्रथम व सरफराज अंसारी द्वि... जय प्रकाश यादव प्रथम, आ... द्वितीय, वेन्टम वेट में प्रेमचन्द... राणा गौरव सिंह द्वितीय, फेद... कुमार सिंह प्रथम, प्रीतेश ... द्वितीय, लाईट वेट में अभिषेक... प्रथम, राजकुमार यादव द्वितीय... वेट में राजेश्वर सिंह प्रथम, ... द्वितीय, वेल्टर वेट में विनय ... जगदीश सिंह द्वितीय, लाईट ... राजीव कुमार प्रथम, जय ... मिडिल वेट में आलोक कुमार... यादव द्वितीय, लाईट हैवी वेट ... प्रथम, रमाकांत द्वितीय, हैवी ... कुमार प्रथम, राधेश्याम सिंह द्वि...

...ली, द्वितीय ...शुतोष शर्मा

...र की बालाओं का उत्कृष्ट प्रदर्शन

...इलाहाबाद, ...तीय शार्वी ...का: प्रथम ...नऊ, तृतीय ...टाइल सी. ...य साहनी ... 400 मी. ...ाली खन्ना ...पुर, तृतीय

...फ्रीस्टाइल ...स, द्वितीय ...राधेश्याम ...बालिका ...ंकी निषाद ... 200 मी. बैकस्ट्रोक सी. बालक: प्रथम फराज खाँ बरेली, द्वितीय अमित शर्मा लखनऊ, तृतीय संजू कुमार गोरखपुर, 200 मी. बैकस्ट्रोक जू. बालक: प्रथम रितेश यादव बरेली, द्वितीय गोपाल गौतम बरेली, तृतीय अर्जुन कुमार लखनऊ, 200 मी. बैकस्ट्रोक सी. बालिका: प्रथम सोनाली खन्ना लखनऊ, द्वितीय कृतिका लखनऊ।

200 मी. बैकस्ट्रोक जू. बालिका: प्रथम शालिनी लखनऊ, द्वितीय महिमा सिंह कानपुर, तृतीय प्रियंका गोरखपुर, 100 मी. बटरफ्लाई सी. बालक: प्रथम श्यामसुन्दर निषाद मिर्जापुर, द्वितीय अशोक शर्मा गोरखपुर, तृतीय महेन्द्र ...

...निषाद इलाहाबाद।

100 मी. बटरफ्लाई जू. बालिका: प्रथम समीक्षा अवस्थी कानपुर, द्वितीय संध्या गोरखपुर, तृतीय प्रीति निषाद इलाहाबाद, 200 मी. व्यक्तिगत सी. बालक: प्रथम नवीन कुमार गोरखपुर, द्वितीय अमित शर्मा लखनऊ, तृतीय राजेश कुमार कानपुर, 200 मी. व्यक्तिगत जू. बालक: प्रथम गौतम गोपाल बरेली, द्वितीय सियाराम बरेली, तृतीय मुकेश शर्मा गोरखपुर, 200 मी. व्यक्तिगत सी. बालिका: प्रथम सोनाली खन्ना लखनऊ, द्वितीय ज्योति निषाद इलाहाबाद, तृतीय हर्षिता सेठ लखनऊ, 200 मी. व्यक्तिगत जू. बालिका: प्रथम समीक्षा अवस्थी कानपुर, द्वितीय प्राची श्रीवास्तव लखनऊ, तृतीय बृजबाला भारती गोरखपुर,

...अली गोलकर स्कोर 1-0 कर दिया। खेल के 21वें मिनट में आरिफ अली ने शानदार गोलकर स्कोर 2-0 कर दिया। यही स्कोर प्रथम हाफ तक बना रहा। खेल के दूसरे हाफ में सी डिवीजन एकादश पर यंग हिरोज हावी रही, लेकिन खेल के 65वें मिनट में सी डिवीजन एकादश प्रवीण सिंह ने गोलकर स्कोर 2-1 पर ला दिया। मुमताज अली खेल के 69वें मिनट में गोलकर स्कोर 3-1 कर दिया। आरिफ अली ने गोलकर स्कोर 4-1 पर ला दिया।

खेल के अन्त में आत्मघाती गोल सके यंग हिरोज का स्कोर 5-1 पर ला दिया। इस प्रकार यंग हिरोज 5-1 से विजयी रही। हीरालाल, मुकेश सिंह, अवधेश प्रकाश, चित्तर प्रसाद आज के निर्णायक थे।

एफ्रो खेल स्थगित होने के कारण निर्माण कार्य में देरी : उमा

नयी दिल्ली, 29 सितम्बर : एजेंसी। केन्द्रीय खेल मंत्री उमा भारती ने आज स्वीकार किया कि एफ्रो एशियाई खेल स्थगित होने के ... कार्य में थोड़ा विलम्ब हुआ।

पांच स्टेडियमों का निरीक्षण करने के बाद ... मंत्री ने पत्रकारों को बताया कि पहले ... एफ्रो एशियाई खेल स्थगित होने ... कारण स्टेडियमों के सुधार कार्य धीमा पड़ गया है लेकिन ... पूरा करने के लिए ... उन्होंने कहा कि इससे अधिक ... समय नहीं दिया जाएगा।

... असमंजस ... स्टेडियमों ... ही तय है।

...क पिछली ...हसूस की ...ने के लिए ...के मैदान ...पिछली ...ल किये ...कराया ...जायेगी। ...उम्र पर ...न दिया ...नर रहे ...विकेट ...जाय ...ी है।

अवधेश व नासिर ने वाराणसी को जिताया

खेल संवाददाता, कानपुर

29 सितम्बर

सलामी बल्लेबाज अवधेश श्रीवास्तव की शानदार बल्लेबाजी (93 रन 10×4, ×6) और ... नासिर ... नाबाद ...



...(×4, ×6) के बीच दूसरे विकेट की साझेदारी में बने बहुमूल्य 140 रनों की बदौलत वाराणसी ... क्रिकेट ... खिलाड़ियों ...

इलाहाबाद की शुरुआत अच्छी नहीं हुई थी। लेकिन इसके पश्चात बलराम सिंह (43), अजय सिंह (28) और संजीव जखमोला की अर्द्धशतकीय पारी की बदौलत उसने निर्धारित 40 ओवरों में ... रनों का ... स्कोर खड़ा किया ... जवाब ... वाराणसी टीम ने जीत के लिए आवश्यक रन महज अपने तीन खिलाड़ियों के नुकसान पर तीन गेंदों का खेल शेष रहते पूरा कर लिया। सुबह विकेट में नमी होने के कारण मैच 45 ओवरों के बजाय 40 ओवरों का ... कुलभाष्कर ... का आंकड़ा पार कराने में प्रशान्त खेर ... बाद (20) और रामबाबू पाल (18) ने भी उपयोगी योगदान दिया। वाराणसी की ओर से चंद्रप्रकाश वर्मा ... गेंदबाज रहे। जिसने 8 ओवर में 46 रन देकर सर्वाधिक 4 विकेट हासिल किये। जबकि सीमान्त सिंह, अब्दुल गनी और अमित ... ने एक-एक विकेट हासिल किया। प्रतिउत्तर में वाराणसी की ओर से पहला विकेट ...

चीन का फाइनल... पहुंचना लगभग...

रियाद, 29 सितम्बर : एजेंस... फुटबाल के क्वालीफाइंग मैचों में ... अरब को 2-2 की बराबरी पर रोक... दोहा में कतर ... उजबेकिस्तान ... ... कतर और उ... मैच बराबर रहने का लाभ इस ग्रुप ... बने चीन को मिल सकता है। इ... कतर चीन से चार अंक पीछे दूस... ... था। ... उजबेकिस्तान तीसरे स्थान पर ...

संस्थापक - स्व. पूर्णचन्द्र...
जागरण प्रकाशन लिमिटेड की...
वीरेन्द्र कुमार द्वारा दैनिक जागरण...
एम-14/1 अन्धरापुल, वारा...
मुद्रित एवं प्रकाशित ...
प्रधान सम्पादक- नरेन्द्र ...
स्थानीय सम्पादक - वीरेन्द्र ...
दूरभाष-20795, 62, 53, विज्ञा...

MADHAV NEDAN.

माधवनिदान.

श्रीयुत

माधवकर प्रणीत

इस संस्कृत मूलग्रंथका

हिन्दीभाषान्तर

स्वदेशहितैषी

श्रीयुतपाठककन्हैयालाल माथुर

तत्पुत्र

दत्तरामनेकरी

जिस्को दत्तरामकी आज्ञासैं

वैजनाथनें दूसरीवार

मथुरामें

छपाकर प्रकाशित करा.

संवत् १९४३ ज्येष्ठशुद्ध १० सन १८८६

समाप्तोयंसूचीपत्रम्

भूमिका

प्रगट होय कि यह माधवनिदान सब निदान के ग्रंथों में श्रेष्टतम है सो लिखा भी है

निदाने माधवः श्रेष्ठ सूत्रस्थाने षुवाग्भठः॥ शरी
रे सुश्रुतप्रोक्तः चरकस्तु चिकित्सितं

अर्थात् निदान के ग्रन्थों में माधव श्रेष्ठ है सूत्रस्थान में वाग्भट श्रेष्ठ है शारीरक में सुश्रुत कहा है और चरक चिकित्सा के विशय में उत्तम है। इस्की भाषा टीका काशी आदि नगरों में भई बी है परन्तु वो टीका उत्तम नहीं भई कि जिस्से श्लोकों का अर्थ बहुत शीघ्र ही समझ में आजाय इस कारण हमने इस्की भाषा टीका बनाई और इस्में मधुकोश आतंकदर्पण जो इस्की संस्कृत में टीका है उन्की पंक्तीन्का भाषा में हमनें अर्थ करदीना है और प्रथम बज्रतेरवी में अन्वय भी करी है। प्रथम सब श्लोकों का शुद्ध अर्थ कर पीछे शंका और समाधान उस्का लिखा है और बहुत से निदान जो आजतक किसी टीका कर्त्ता ने नहीं लिखे सो प्रसंग बस से हमने लिख दीने हैं जैसे चरक के मत से क्लीब का निदान और बहुत से निदानों में विशेष हमने टीकांतर का आशय लिखा सो सूचीपत्र में उस रोग के प्रथम ❊ ऐसा फूल का चिन्ह करदीना है इस टीका के गुण दोष देखने से बुद्धिमानों को मालूम होंयगे और इस्के छपने में जो अशुद्धता हो गई हो उस्को बुद्धिवान सुधारलेवेंगे मुझको दोषारोपण न करैं अलमितिविस्तरेण

हस्ब फ़रमायश लाला बंशीधर के छपा

MADHU BNIDAN

مادہو ندان

माधवनिदान

श्रीमान्

माधवकरप्रणीतंरोगविनिश्चयग्रंथइससंस्कृत
मूलग्रंथका हिन्दुस्तानीभाषान्तरलोककल्या
णार्थ

श्रीयुतपाठकज्ञातीयमाथुरकन्हैयालालतत्पुत्र
दत्तराम मथुरानिवासीने अनेकभाषा
संस्कृतटीकान्का आशयलेकरकरा

मथुरा

जिनसज्जनोंकोलेनाहोयवो पंडितबैजनाथ पुस्तकवालेकेपासमि
लैगा ठिकानानईसड़क मथुरा +
मुन्शीकन्हैयालालकेलघुभ्राताला्लावंशीधरकेवि
द्योदयनामशिलायंत्रमैंछापकर प्रकाशित
किया

वैसाखकृष्णा ७ सम्वत् १९४३

प्रथमचिष्कासि ११०० मौल्य ...... ३।)

श्रीः
श्रीरामचन्द्रे
कुञ्जविहारिणे नमः

नरवरवपुधारी गोकुलानंदकारी व्रजयुवतिवि
हारी रासलीलाप्रचारी प्रणयहृवनचारी कंस-
क्षोभमानमारी सकलविपनटारी लीजिये सुधिहमारी

तथाच

कर्लाभक्तीनथाहर्त्तोभोगमोक्षैकदायिनम्॥
वन्दे श्रीगिरजाकान्तं शङ्करं लोकशंकरम् २

अथ परमकारुणिक श्रीसदाशिवचरणचंचरीक श्रीमाधवाचार्य्यनि,
पंशेषविघ्नविघातार्थ और ग्रन्थकी निर्विघ्नपरिसमाप्तिकेनिमित्तग्रन्थ
के आदिमें मंगलाचरण करते हैं

युग्मम्

प्रणम्यजगदुत्पत्तिस्थितिसंहारकारणं स्व
र्गापवर्गयोर्द्वारं त्रैलोक्यशरणंशिवं १नाना
मुनीनांवचनैरिदानींसमासतः सद्भिषजां-
नियोगात्सोपद्रवारिष्टनिदानलिङ्गोनिवध्य
तेरोगविनिश्चयोऽयम् २॥
मया अयंरोगविनिश्चयो• ग्रन्थो• इदानीं• समासतः निव

ध्यते · किंकृत्वा · शिवंप्रणम्य · कथंभूतंशिवं · जगदुत्प
त्तिस्थितिसंहारकारणं · पुनःकथंभूतं · शिवं · स्वर्गापव
र्गयोर्द्वारं · पुन · त्रैलोक्यशरणं · किंविशिष्टोग्रन्थः सो
पद्रवारिष्टनिदानलिंगः कैः नानामुनीनांवचनैःकस्मा
त्सद्भिषग्ज्ञानियोगात्इत्यन्वयः २

अर्थ – जगत्कीउत्पत्ति पालन और प्रलयकेकारण - स्वर्गकहियेसुख अपवर्गकहियेमोक्ष इनके द्वार अर्थात्दाता और त्रिलोकीके आश्रय भूतजोशिवहैं तिनकोप्रणामकर अनेक चरक सुश्रुत आदि मुनीश्वरों के बचनोंके अनुसार उत्तमवैद्यों की आज्ञासें अब मैं संक्षेपसें रोगविनिश्चय नामग्रन्थकीरचनाकरताहूं जिसमें · उपद्रव · अरिष्ट · निदान · और · चिन्ह इनकालक्षणअच्छीरीतिसें कियागयाहै ॥ २ ॥

÷ शंका ÷ क्यौंजीयह अतिश्रेष्ठ निदानपंचक सर्वज्ञऋषिमुनीनके जाननेयोग्यहै उनकेवाक्यौंकोनिरादरकर मनुष्यकृतनुआरग्रन्थमें मनुष्योंकीप्रवृत्तिकैसेंहोयगी इसकारणमाधवाचार्य्यने (नानामुनीनांवचनैः) इसपदकोधरा अर्थात् अनेकमुनीश्वरोंकेवचनोंकाआशयलेकर मैंनेयह ग्रन्थनिर्माणकियाहै - मैंरेमनकीउक्तिसेंकल्पितनहीं हैं ÷ शंका ÷ कोईकहै कि पहले ही बहुतग्रन्थनिर्माणकरेभये हैं फेरतुमनेरचनेका सोइसग्रन्थकौ कौनपढैगा – इसकारणमाधवाचार्य्यने (इदानीम्) यहपदमूलमैंधरा – इसपदकाआशययह है कि हमहीं अनेकमुनीश्वरोंकेवचनोंसें अब ऐसा अलौकिकग्रंथरचनाकरते हैं किपहिले किसी आचार्यने अद्यापिऐसाग्रन्थ नहींनिर्माणकरा ÷ कोईवादी शंकाकरे

उपद्रवो - रोगारंभदोषप्रकोप जन्योविकारः २ नियतमरणख्यापकलिंगमरिष्ट ३ निदानंरोगोत्पादकोहेतुः ४ लिंग - रोगव्यापको हेतुः तेनलिंग्यतेज्ञायते अनेनेति व्युत्पत्त्यापूर्वरूप - रूपो - पशय - संप्राप्तयो विज्ञायंते +

किंतु मैंने ग्रन्थ की रचना भी करी परंतु किसीने नहीं पढ़ा तो आपका ग्रन्थ करना व्यर्थ होयगा - इस कारण माधवाचार्यने (सद्भिषग्ज्ञानियोगात्) यह पद धरा - इस पदका आशय यह है कि हमारे पढ़नेके निमित्त कोई निदान ग्रन्थ निर्माण करो ऐसैं बुद्धिमान् वैद्योंके कहनेसैं यह ग्रन्थ रचना करी है ✣ **शंका** ✣ श्रीमहादेवजीके हर - मृड - रुद्र - शंभु - इत्यादि नामोंको त्यागकर - शिव - इस नामको क्यौं प्रणाम करा ✣ **उत्तर** ✣ इस रोगविनिश्चय ग्रन्थके पठन पाठन करनेवालेनका कल्याणकी इच्छा कर सर्व कामना देनेवाला कल्याणवाचक शिव नाम बिचार इसीको ग्रन्थके आदिमैं माधवाचार्य्यने प्रणाम करा ॥ २ ॥

नानातंत्रविहीनानां भिषजामल्पमेधसां
सुखं विज्ञातुमातंकमयमेव भविष्यति ३

अयमेव आतंकं अल्पमेधसां भिषजां सुखं विज्ञातुं भविष्यति - किं विशि॰ भिषजां॰ नानातंत्रविहीनाना-मित्यन्वयः

अर्थ - अन्य निदान ग्रन्थों से इस ग्रन्थकी उत्तमता दिखाते हैं अनेक ग्रन्थोंके विचार करनेमें असमर्थ ऐसैं मन्दबुद्धिवाले वैद्यों को सुखपूर्वक रोगज्ञानके निमित्त यही ग्रन्थ कारण होयगा क्यौं कि रोगका जानना ही मुख्य है सो ग्रन्थान्तरोंमैं लिखा भी है ॥

रोगजाननेके पाँच उपाय उनको कहते हैं

निदानं पूर्वरूपाणि रूपाण्युपशयस्तथा
संप्राप्तिश्चेति विज्ञानं रोगाणां पंचधा स्मृतं ४

रोगमादौ परीक्षेत ततोनन्तरमौषधं ततः कर्म भिषक् पश्चात् ज्ञानपूर्वं समाचरेत् ॥ रोगज्ञानार्थमेवादौ यत्नः कार्यो भिषग्वरैः सति तस्मिन् क्रियारम्भः पुण्याय यशसे श्रिये ॥ २ ॥

रोगाणां विज्ञानं पञ्चधास्मृतम् इत्यन्वयः ॥

अर्थ - निदान-पूर्व्वरूप-रूप-उपशय- और संप्राप्ति- ए पांच प्रथक् प्रथक् औंर समस्त व्याधिके बोधक होतेहैं ऐसैं रोगका जानना मुनीश्वरों ने पाँच प्रकारका कहा है - इस श्लोक में (**उपशायस्तथा**) यह जो पद धरा इसका यह आशय है कि जैसैं निदान - पूर्वरूप - और - रूप - सैं रोग जाना जाय है - उसी प्रकार - उपशय - सैं और संप्राप्तिसैं रोग जाना जाय है (**सम्प्राप्तिश्चेति**) इस पदमें च औंर इति - के धरने सैं यह प्रयोजन है कि रोग जानने के इन पाँचो से विशेष और उपाय न हीं हैं - अब कहते हैं कि रोगों का निदान संनिकृष्ट अर्थात् समीप - और - विप्रकृष्ट - अर्थात् - दूर इन भेदों से दो प्रकारका है + **संनिकृष्ट** - उसे कहते हैं कि जैसैं वातादिक कुपित ज्वरादिक रोगों को प्रगट करे हैं + और **विप्रकृष्ट** - उसे कहते हैं - जैसैं - हेमंत ऋतुमें संचित भया - कफ बसंत ऋतुमें कुपित होय है + **पूर्वरूप**) उसे कहते हैं - जैसैं ज्वरके ही आलस्यादि धर्म + **रूप** + उसे कहते हैं जैसैं १६ के श्लोक में लिखा है + **स्वेदावरोध इति** + अर्थात् पसीने का अवरोध होना इत्यादिक **उपशय** - उसे कहते हैं + जैसैं वात रोग तैल आदि के लगाने सैं शान्ति होय है - **सम्प्राप्ति** - उसे कहते हैं जैसैं १० के श्लोक में लिखा है - **यथा दुष्टेन दोषेणेति** - इत्यादि - **शंका** - क्यों जी ए पांच जो व्याधि जानने के उपाय कहे हैं इनमें सैं एक ही सें रोग का निश्चय हो सके है फेर माधवाचार्य ने पांच प्रकार व्यर्थ क्यों लिखे - क्योंकि पांचो का प्रयोजन केवल रोग का जानना है - **उत्तर** - तुमने कहा सो ठीक है परंतु इन पां- चों का पृथक् पृथक् प्रयोजन है जैसैं (**निदान** सैं यह प्रयोजन है कि जिस वस्तु के खाने सैं या लगाने सें रोग प्रगट हो उसका त्याग करने सैं रोग

---

१ अर्थात् नाडी नेत्र जिह्वा मल मूत्र आदि परीक्षाओं से रोगका ज्ञान यथार्थ नहीं हो

नहींवहै उलटा शांतिहीहोय है और (पूर्वरूप) केजाननेसैं यह प्रयोजन है जैसैं सुश्रुत[1]- मेंलिखाहै किवातज्वरकेपूर्वरूपमें घृतपानकरानेसैंवातज्वरकीउत्पत्तिनहींहोय ÷ रूप केजाननेसैं यह प्रयोजनहै - किव्याधिअर्थात्रोगकासाध्याऽसाध्यऔरकष्टसाध्य निश्चयहोय है- जैसेंजिसरोगकाअल्परूपहोयवहसुखसाध्यहै - औरमध्यरूपकष्टसाध्य* और संपूर्णरूप असाध्यजाननेसैं असाध्यकापरित्यागकरना* औरकष्टसाध्य- तथासुखसाध्यकीऔषधकरना उचितहै - उपशायके जाननेसैं यह प्रयोजन हैं किसुपरीक्षितव्याधिके संपूर्णलक्षण नमिलनेसैंव्याधिकायथार्थज्ञाननहींहोय उसको उपशाय के द्वारानिश्चयकरे सो ÷ चरक[2] में लिखाभी है किजिसव्याधिकेलक्षणप्रगटनहोय उसकोउपशाय- और अनुपशायकेद्वारापरीक्षा करे उसी प्रकार ÷ सुश्रुत[3] मेंलिखाहै जैसैंउबटना तेललगाना स्वेदनविधि इत्यादिक कर्मकरनेसैं वातरोग शांतनहोयतोउसकेरुधिरका विकारजानेऔर संप्राप्ति केजाननेसैं यह प्रयोजन है किसंप्राप्तिके विनाजानेपूर्वरूपादिकोंकरकेजानीभई भीव्याधिचिकित्साकेयोग्य भीहैं परंतुअंशांश- विकल्प- बल- काल- आदिकोजबतक नहीजाने तबतकचिकित्सायथार्थनहींहोसके इसीसैं निदानपंचककोवैद्य अवश्यहीजाने

निदान

निमित्तहेत्वाऽऽयतनप्रत्ययोत्थानकारणैः
निदानमाहुः पर्यायैः

१ वातिकज्वरेपूर्वरूपे घृतपानमितितथाच साध्यासाध्यत्वमपिज्ञायते

२ गूढलिंगंव्याधिमुपशयाऽनुपशयाभ्यांबुद्ध्येतइति ३ अभ्यंगस्नेहस्वेदाद्यैर्वातरोगोन शाम्यति विकारस्तत्रविज्ञेयोदुष्टमत्रास्तिशोणितमिति * कष्टसाध्यकेलक्षण चरकमेंलिखेहैं- यथा- निमित्तंपूर्वरूपाणिरूपाणांमध्यमेवंचइति

अर्थ- अबनिदानकेपर्यायवाचकशब्दोंकोकहते हैं - निमित्त- हेतु- आयतन- प्रत्यय- उत्थान- और कारण- येनिदानकेपर्या यवाचक शब्द शास्त्रव्यवहारके अर्थ - मुनीश्वरकहते हैं कारण इनके कहनेकायहहै किव्यवहारकेवास्ते अर्थात् शास्त्रमेंइनकहींशब्दोंमेंसैं कोईशब्द आवेउस्कोनिदानवाचकहीजाने

पूर्वरूप

प्राग्रूपंयेनलक्ष्यते॥५॥उत्पित्सुरामयो
दोषविशेषेणाऽनधिष्ठितःलिंगमव्यक्त
मल्पत्वात्व्याधीनांतद्यथायथम्॥ ६ ॥

येन-उत्पित्सुःआमयःलक्ष्यते- ज्ञायतेतत्प्राग्रूपम् किं भूतः आमयः दोषविशेषेणानधिष्ठितः अतएवव्या धीनां अल्पत्वात् अव्यक्तं लिंगंतत् यथायथंकुह्य

इत्यन्वयः

अर्थ- जिसजंभाई- आलस्य- आदिकरकेउत्पत्तिहोनेवालीव्या धिकाज्ञानहोयउसकोप्राग्रूप अर्थात् - पूर्वरूप - कहते हैं फेर वो व्याधिकैसीहोय - किदोषकहिये (वात-पित्त-कफ) इनसें व हुधा अप्रगटहोय - शंका क्योंजीजबवातादिकदोषोंसें अप्रगट होयतौरोगका प्रगटहोना असम्भवहै क्योंकि कारण तो वातादिकदोष हैं जबदोषहीनहीं तोरोगकैसैं प्रगटहोसकेहै ।

(उत्तर) इसपदका यह अर्थ है कि- दोष-कहिये वात पित्त कफ- इनका अप्रगटरूपहोना अर्थात् थोड़ाथोड़ाहोनाकहतेसैं कि व्याधिकी अल्पहोनेसैं - तत्तत् व्याधिकातैसातैसाही अप्रका- शरूपहोयहै - अबकहतेहैं कि - पूर्वरूप- दोप्रकारकाहै एकसामान्य - दूसराविशिष्ट- सामान्यप्राग्रूप (पूर्वरूप) उ सैकहतेहैं - जिस्सेदोष (वात-पित्त-कफ-) सैंदूषितधातु

तिसधातुके विगड़नेसैं प्रगट होनहार ज्वरादि व्याधिमात्रही की प्रतीतिहोय- और वात आदि दोषों के चिन्ह नमालूम हों ॥ जैसैं (श्रमोरतिर्विवर्णत्वमिति) अर्थात् ज्वरमें- श्रम- मनकानलगना- देहकाविवर्ण- इत्यादिकलक्षण + और जिसमें होनहार रोगके आरम्भक दोष तिन दोषों के चिन्ह तिसकाएक अंशकी प्रतीतिहो उसको विशिष्ट प्राग्रूप कहते हैं जैसैं (जृंभात्यर्थंसमीरणात्) अर्थात् जंभाईका आनाकेवल बातकेदोषसैं होहै- इसमें होनहार रोग कौन ज्वर उसका आरम्भक दोष कौन बात- उस बातका एक अंश कौन जंभाई- ऐसैं औरभीजाननेचाहिये- इसविशिष्ट पूर्वरूपमें जंभाई आदिरूप देखकर कदाचित् पूर्वरूपको रूप न समझना चाहिये- क्योंकि यहतौ केवल व्याधिके आरम्भक दोषमात्रका सूक्ष्म चिन्ह है- इसबातको दृष्टान्त देकर समझाते हैं दृष्टान्त जैसैं तृणके समूहमें छोटी चिनगारी अग्निकी गिरनेसैं धूम (धुआँ) मात्र प्रकट देखकर हाथ- वस्त्र आदिके मारनेसैं ही शान्ति करसकते हैं- परन्तु जब अग्नि एकसाथ जोरसैं प्रज्वलित होगई तब शान्ति नहीं होसके- ऐसैं ही विशिष्ट पूर्वरूपको अल्प होनेसैं चिकित्सा करनेसैं शान्ति होसके है- परन्तु जब- रूप- होगया तब उसका उपाय नहीं होसके है- इसीसैं पूर्वरूप और रूपमें भेद है ॥ अब कहते हैं पूर्वरूप- और रूप इन दोनोंमें कोई- शारीरक अर्थात् शरीरसैं सम्बन्ध रखते हैं- और कोई मानसिक अर्थात् मनसैं सम्बन्ध रखते हैं- शारीरक जैसैं- ज्वरमें- मुखका विरस होना- देहभारी- नेत्रसैं जल गिरना- इत्यादिक + और मानसिक जैसैं मनका एक जगह न लगना- और अपने हितकारक वचनोंसैं शान्ति न होना- तथा खट्टे- चरपरे पदार्थ- पर मन चलना इत्यादि

औं नमो भगवते वासुदेवाय

तंदेवव्यक्ततांयातंरूपमित्यभिधीयते ॥ संस्था
नंव्यञ्जनंलिंगंलक्षणंचिन्हमाकृतिः ७

अर्थ- जवपूर्वोक्तप्रागूप प्रगटहोजायनबउस्कोरूपऐसैंकहतेहैं- और संस्थान- व्यंजन- लिंग- लक्षण- चिन्ह- और आकृति- यहछः शब्दरूपकेपर्यायवाचकहैं ॥७॥

उपशायकेलक्षण

हेतुव्याधिविपर्य्यस्तविपर्य्यस्तार्थकारिणां ॥
औषधान्नविहाराणामुपयोगंसुखावहम् ८
विद्यादुपशयंव्याधेःसहिसात्म्यमितिस्मृतः

व्याधेः सुखावहंउपयोगं उपशयंविद्यात्स- हि- सात्म्यंइति स्मृतःकेषां- औषधान्नविहाराणां- किंभूतानां- हेतुव्याधि विपर्यस्तविपर्य्यस्तार्थकारिणाम् ।

इत्यन्वयः

अर्थ- उपयोगः सुखावहस्तमुपशयंविद्यात्- जानीयात्- उपयुज्यत इतिउपयोगः सुखमावहतिसम्यगनुवंधेनसुखमुत्पादयतीति- सुखा वहः केषामुपयोगः औषधान्न विहाराणां- औषधंच अन्नंच विहारश्च औषधान्नविहाराः तेषां- औषधं- हरीतक्यादि- अन्नं- रक्तशाल्यादि- विहारो- देहमनोनिवर्त्तितचेष्टाविशेषः व्यायामोजागरणाध्ययनादि रूपः किंभूतानां औषधान्नविहाराणां॰ हेतुव्याधिविपर्यस्तविपर्यस्तार्थ कारिणां हेतुश्च- व्याधिश्च- हेतुव्याधीतयोर्व्यस्तसमस्तयोः- विपर्यस्ता व्याधिनिदानयोर्विपरीताः- तथाविपर्यस्तानां अर्थो विपर्यस्तार्थः तयो र्व्यस्तसमस्तयोरेवविपरीतमर्थम् कुर्वंतीतिविपर्यस्तार्थकारिणः - हेतु- व्याधिविपर्यस्ताश्चविपर्यस्तार्थकारिणश्चहेतुव्याधिविपर्यस्तविपर्य स्तार्थकारिणः तेषां-केषां - विपर्यस्तानां- अर्थं कुर्वंतीति प्रकृतत्वात्- हेतुव्याधिविपर्यस्तानां- सदायमर्थः- निदानरोगयोर्व्यस्तसम-

स्तयोर्विपरीता अपिकारणरूपाद्यवभासमाना: व्याधिरूपाद्यवभासमाना: हेतुव्याधिविपरीतानां अर्थव्याध्युपशम लक्षणंकुर्वन्तीति- यथाहेतुविपरीतैः औषधान्नविहारैः व्याध्युपशमः क्रियते प्रतिपक्षत्वात् - एवंविपर्यस्तार्थ - विपर्यस्तार्थकारिभिरपीत्यर्थः तथाचहेतु विपरीतानां - व्याधिविपरीतानां - हेतुव्याधिविपरीतानां - हेतुविपरीतार्थकारिणां - व्याधिविपरीतार्थकारिणां - हेतुव्याधिविपरीतार्थकारिणां - औषधान्नविहाराणांयः सुखावह उपयोगः स उपशयइतिपिंडार्थः अथैषांक्रमेणोदाहरणानिभाषायांवेदितव्यानि-

अर्थ- अबउपशयकेलक्षणकोकहते हैं - हेतुविपरीत- व्याधिविपरीत - हेतुव्याधिविपरीत - हेतुविपर्यस्तार्थकारी - व्याधिविपर्यस्तार्थकारी - हेतुव्याधिविपर्यस्तार्थकारी- ऐसैंजो औषध अन्न (पथ्य) विहार- अर्थात् आचरणइनका सुखकारक उपयोग उसकोव्याधिका उपशयकहते हैं - इसकातात्पर्ययहहै किरोगऔररोगकाहेतुइनको सुखकारकजो औषधि- पथ्य- आचरण- रूपप्रयोग- उसकोउपशयकहतेहैं और व्याधिसात्म्य- येपर्यायवाचक नामउसीउपशयका है सुखकारक के कहने सैंयहप्रयोजन है कि- दाह औरप्यासयुक्त नवीनज्वरमैं शीतलजलकापीनाव्याधिकाबढानेवाला है - यातैं शीतलजलसुखकर्त्तानभया- यासैं शीतलजलकोउपशयनसमझनाचाहिये- परंतुदाहयुक्तप्यासमेंशीत लजलउपशयमानाजायगा क्योंकि सुखकारकहोनेसैं ॥

आगेअब क्रमसेउदाहरणलिखते हैं

हेतुविपरीत- औषधजैसैं शीत- कफ- ज्वर सें सोंठसे। इसमेंप्रथम समझनाचाहियेकि यहांहेतुकौनहै कि वात (सर्दी) उसवातका

शीतलधर्म है- सो अब शीत- कफ यह कब शांतिहोय किजबस दी औरकफके विपरीत औषधमिले- ऐसी औषधकौन कि शुंठीये सर्दीको औरकफदोनोंकोशान्तिकरेहै सोशीत-कफ-ज्वरमेंहेतु विपरीतऔषधसोंठहुई ॥ * ॥ ऐसैंही **हेतुविपरीत**-अन्न जैसैं-श्रम- औरसरदीसैंप्रगटज्वरमैंमांसकोरस औरचावलइस- मेंहेतुकौनकिश्रमऔरसरदीयेकबशान्तिहोयकि श्रम- औरसर्दी- हरणकर्त्ता पथ्यमिले ऐसी पथ्यकौनकि मांसरस औरचावलोंकाभात- येश्रम औरसर्दीके विपरीत हैं अर्थात् नाशक हैं ॥ * ॥ऐसैंही **हेतु विपरीतविहार**- कहिये आचरणकौन- जैसैं दिनकेसोनेसैं प्रगटकफ परात्तमेंजागना- यहांहेतु कौंनभयाकिदिनकासोना- उससें प्रगटदोषकौनकिकफ- यह कफ कबशान्तिहोयकि जिसहेतुसैंप्रगटभया उसहेतुसैं विपरीतआचरणकराजाय- सोदिनकेसोनेपर उलटा आचरणकौनकिरात्रमैं जागना सोयहहेतु विपरीत आचरणभया- इसी प्रकार और उदाहरण व्याधिविपरीत आदिके- आगेलिखेहुएचक्रके अनुसार बुद्धिवान् मनुष्य समझलेवेंगे

नाम	औषध	अन्न	विहार
हेतुविपरीत	शीतज्वरमैंगरम औषधि सौंठ	श्रम औरवादीसैं प्रगटरोगपरमांस कौरस औरभात	दिनकेसोनेसैंप्रगट कफरोगपरविपरीत आचरणरातमेंजागना
व्याधि विपरीत	अतिसारमैंदस्तबंदकरनेवाली औषधि पाठा आदि	दस्तों मैंदस्तके बंदकारक पथ्य मसूर	उदावर्त्तरोगमेंशब्दपूर्वकअधोवायुकानिकसनामंत्रऔषधधारण देवगुरुकीसेवाकरनी
हेतु व्याधि विपरीत	बातकीसूजनमैं दशमूलकाकाढ़ा बातऔरसूजनदोनोंकोदूरकरनेवाला है	कफकीसंग्रहणी मैंछाछकापीनाबातनाशक कफनाशक औरसंग्रहणीनाशक	स्निग्धजोदिनकेसोनेसैंउत्पन्नतंद्रानिस्मैंरूक्षतंद्रासेविपरीतऔर स्निग्धतानाशकरात्रिमैंजागना
हेतुविपर्यस्तार्थकारी	जैसैंपित्तप्रधानव्रणसूजनमैंपित्तकारकउष्मपिंडीकाबांधना	पित्तकीसूजनमैं दाहकारकअन्न काभोजनकरना	जैसैंबातसैपैदाउन्मादमैं त्रासकदेना
व्याधि विपर्यस्तार्थकारी	जैसेकफरोगमें वमनकारकमैनफल आदि	अतीसाररोगमैं दस्तकारकदुग्ध देना	छर्दिरोगमेंहाथका अंगूठागलेमेंकरवा कमलनालआदिसैं उलटीकालाना
हेतुव्याधिविपर्यस्तार्थकारी	जैसैं अग्निजलेपरगरम अगर आदिलेपअथवा विषपरविष	जैसेमद्यपानके करनेसेप्रगटमदात्ययरोगमेंमदकारकफेरमद्य पीना	दंडकसरतसैंप्रगट वातमैंजलकातैरनारूपव्यायामकाकरना

अनुपशायकेलक्षण

विपरीतो ऽनुपशायोव्याध्यसात्म्यमितिस्मृ-
तः॥९॥

अर्थ- जोउपशायकेलक्षणकहे हैं उससे बिपरीतलक्षण अनु-पशयके हैं औरव्याधीका ✣ असात्म्य अर्थात् असमान नाम उसीउपशय का परियाय बाचक शब्द है ॥

सम्प्राप्तिकेलक्षण

यथादुष्टेनदोषेणयथाचानुविसर्पता ॥ नि
र्वृत्तिरामयस्या ऽसौसम्प्राप्तिर्जातिरागतिः १०॥

अर्थ- दोषकहिये बात पित्त कफ इनका दुष्टहोनानाम कुपित होना अनेक प्रकारका है- अर्थात् स्वकारण या अथवा दूसरे के कारण करके जैसें कुपितदोष अपनेस्थान को छोड़कर देह में ऊपर नीचे तिरछे डोलते हैं उसडोलने सें जोप्रगट रोग उसको सम्प्राप्ति-कहते हैं औरजातितथा आगतिये दोनो पर्य्यायबाचक नाम उसी सम्प्राप्तिके हैं ✣ तात्पर्यार्थयेंहै किमनुष्यकेदेहमैं बात-पित्त-कफ- ये सम्पूर्णदोष बढ़कर जैसैं रोगको प्रगट करैं तैसैंहीं उस्को सम्प्राप्तिकहते हैं ✣ उदाहरण ✣ जैसैं कुपित दोषों का आ-माशय में प्रवेशहोने सैं और उसस्थान मैं इतस्ततो गमन करनेसैं तथारस कीबहने वाली नाडीन्के मार्गको रोकने सैं और पक्का-शय मैं रहनेवाली अग्निको बाहरनिकालने मैं तथा उसी जठर अग्नि सैं सर्वदेहकातप्तहोने सैं येज्वर है (जैसैं जोनिश्चयकि-या जाय है उसीको संप्राप्तिकहते हैं । ऐसेंही अतिसारादिरोगों की संप्राप्ति जानना चाहिये ॥११॥

संख्याविकल्पप्राधान्यवलकालविशेषतः

सांभिद्यते

अर्थ- अब संप्राप्ति के भेद कहते हैं सा- कहिये सो संप्राप्ति संख्यादि विशेषण करके पाँच प्रकार की है जैसें १ संख्या २ विकल्प ३ प्राधान्य ४ बल ५ काल इत्यादि ॥

संख्यारूपसंप्राप्तिकेलक्षण

यथात्रैववक्ष्यन्ते ऽष्टौज्वराइति ॥ १२ ॥

अर्थ- जैसें इसी ग्रन्थमें आगे आठ प्रकार का ज्वर कहैंगे पांच प्रकार की खांसी अर्थात् रोगों की गणना कोही संख्यारूपसम्प्राप्ति कहते हैं

विकल्परूपसंप्राप्तिकेलक्षण

दोषाणांसमवेतानांविकल्पों ऽशांशाकल्पना

अर्थ- मिले भये दोष कहिये बात- पित्त- कफ इनकी जो अंशांशका अनुमान करना उस्को (विकल्परूपसम्प्राप्ति) कहते हैं + जैसे ये पर्वत अग्निवान है काहे सें कि धूंए के निकलनेसें ऐसैं ही ये रोगी के देह में वात का अंशविशेष है काहेसैं कि बात के अंश विशेष मिलने सैं इसी अनुमान को विकल्पसंप्राप्ति कहते हैं + उदाहरण + जैसैं रूखी शीतल हलकी और फैलने वाली इत्यादि गुण युक्त जो पवन तिस्का रौक्षादि गुण युक्त कषैलारस सो वात को सर्वांश करके बढाने वाला है + जैसे ही कटुरस सर्वभाव करके पित्त का बढाने वाला है अर्थात् कटु, उष्ण, तीक्ष्ण, त्वंकरके हींग पित्त को बढानेवाली है + तैसेही मधुर रस जैसैं भैंस का दूध ये सर्वभाव करके

कफ बढ़ाने वाला है इत्यादि - इसमें दोषाणांयेजोवहुवचन हैसोदोषों के पृथक् पृथक् ग्रहणके वास्ते है और - समवे तानां ये पद जो है सो द्वंद्व औरसन्निपात के ग्रहण केनिमित्त धराहैइति

प्राधान्यरूपसंप्राप्तिकेलक्ष०

स्वातंत्र्य पारतंत्र्याभ्यां व्याधेः प्राधान्यमा दिशेत्॥२३॥

व्याधेः स्वातंत्र्येणचपुनः पारतंत्र्येण प्राधान्यं आदि शेत् अ प्राधान्यं चेति शेषः इत्यन्वयः

अर्थ- व्याधिके स्वातंत्र्य और परतंत्र करके प्राधान्यताक हे जैसे स्वतंत्रज्वरको प्रधानता है और ज्वराधीनस्वास आदिरो- गोंको अप्रधानताहै॥२३॥

बलरूपसंप्राप्तिकेलक्षण

हेत्वादिकात्स्न्र्यावयवैर्बलाबलविशे षणम्

अत्रापिव्याधेरित्यनुवर्त्तते हेत्वादेः हेतुपूर्वरूपरूपा णांकात्स्न्र्येनसाकल्येन अवयवैर्बलाबलयोविशेष णंविशेषावबोधः

अर्थ- हेतु आदिशब्द सें, पूर्वरूप और रूपइनकेसब अव यव (लक्षण) मिलनेसैंव्याधिकोवलवान्जानना औरथोड़े लक्षणमिलनेसैं निर्वल जानना जैसेरोगरोगकेप्रतिजो निदान कहा है वोनिदान सम्पूर्णइसरोगकोउत्पन्नकरनेवालाहेकिए कदेश ✣ ऐसैहीपूर्वरूपभीसमस्त अवयवोंकरके व्याधिका प्र- काशितहैयाएकदेशसैं- इत्यादि

कालरूपसंप्राप्तिकेलक्षण

नक्तंदिनर्तुभुक्तांशैर्व्याधिकालोयथामलम् २४

अर्थ- नक्त कहिये रात्रि दिन कहिये दिवस ऋतु कहिये वसन्तादि क भुक्त कहिये आहार इनका अंश कहिये एकदेश तिस करके दोष (वात-पित्त-कफ) के अनुसार करके व्याधिका काल अर्थात् रोगके घटने वढ़ने का हेतु का समय जाने उदाहरण दिखाते हैं जैसें रात्रिके तीन भाग करे प्रथम मध्य और अंत तौ रात्रिका प्रथम भाग कफका है मध्यभाग पित्त का अंत भाग वात का है ऐसेंही - दिनके बी तीन भाग करे तो पूर्वान्ह कफ का मध्यान्ह पित्तका अपरान्ह वातका ऐसेंहीं ऋतु जैसे वसंत ऋतु में कफ ग्रीष्म ऋतु में पित्त और वर्षा में वात कुपित होती है. ऐसैंहीं भोजनका जैसैं भोजनकरने के समय कफका काल और अन्नके पचने के समय पित्त का काल और जब भले प्रकार परि पक्व हो गया तब वात का काल इसके जानने सें यह प्रयोजन है कि जिस दोष (वात-पित्त-कफ) का जो काल कहा है उसका उसी २ कालमें ज्ञान नाकठिन मालूम नहीं है ॥ २४ ॥

निदानपंचककाउपसंहार

इतिप्रोक्तोनिदानार्थः स व्यासेनोपदेक्ष्यते

अर्थ- इति कहिये या संक्षेप प्रकार निदानार्थ जो कहा उसे विस्तार करके प्रति रोग का निदान पूर्वरूपादि करके कहते हैं ॥

सर्वेषामेवरोगाणां निदानंकुपितामलाः ॥ त
त्प्रकोपस्यतुप्रोक्तंविविधाऽहितसेवनम् २५ ॥

अर्थ- अब पूर्व चतुर्थश्लोक की व्याख्या में कहे है निदान के दो भेद

२ केचन ऋत्वंशाः कतिपयैर्होरात्राणि कथयंति यदुक्तं वाग्भटे ऋत्वोरित्यादि सप्ताहा ऋतु संधिरिति स्मृतः

कौनसा सन्निकृष्ट कहिये समीपका और विप्रकृष्ट कहिये दूरका तिसमें सन्निकृष्ट कौन बातादिक समीपके कारण करके सर्व रोगों का कारण है सो कहते हैं सर्वेषामिति कुपितभयेजो मल (बात·पित्त·कफ) ये सम्पूर्ण रोगों के कारण होते हैं और इन् वात·पित्त·कफ·दोषों के कोपका कारण अनेक प्रकार काजोअपथ्यसेवनकरनासोहिं ॥२५॥

निदानार्थकरोरोगो रोगस्याप्युपजायते ॥
तद्यथा ज्वरसंतापाद्रक्तपित्तमुदीर्यते ॥२६।
रक्तपित्ताज्ज्वरस्ताभ्यां श्वासश्चाप्युपजायते।
प्लीहाभिवृध्या जठरं जठराच्छोफ एवच ॥ २७
अर्शोभ्यो जाठरं दुःखं गुल्मश्चाप्युपजायते। प्र
तिश्यायाद्यथाकासः कासात्संजायते क्षयः २८
क्षयोरोगस्यहेतुत्वे शोषस्याप्युपजायते ॥

अर्थ- कोई प्रश्नकरे कि क्योंजी येही निदान है अथवा और भी कोई निदानहै अर्थात् जोपूर्वकहाहै तिससेव्यतिरिक्त इसलिये कहते हैं रोगकारोगभीनिदानहोताहै अर्थात् जो निदान सैं कार्य्य होता है वोही रोग सैं भी होता है इस वास्ते दृष्टांत कहते हैं तद्यथेति जैसैं ज्वर संताप सैं रक्त पित्त प्रकट होता है और रक्त पित्त सैं ज्वर, और रक्त पित्त ज्वरसैं श्वास प्रगट होता है प्लीहके वढने सैं जैसें उदर रोग और उदर रोग सैं सूजन, और ववासीर सैं जैसैं उदर रोग और गुल्म (गोला) रोग और पीनस रोगसैं खांसी तथा खांसी से ओज प्रभृति धातुन् का क्षय होता है और ये क्षय रोग राज यक्ष्मा अर्थात् जो सम्पूर्ण रोगों में राजा है उस को प्रगट करैं है ॥

तेपूर्वंकेवलारोगाःपश्चाद्धेत्वर्थकारिणः १९

अर्थ- वेरोग प्रथम स्वतंत्र है और जब बल मिल गया तौ वेही हेत्वर्थ कारी अर्थात् रोग के उत्पन्न करने वाले होते हैं जैसें ज्वर सें रक्त पित्त होता है १९

कश्चिद्धिरोगोरोगस्य हेतुर्भूत्वा प्रशाम्यति।
नप्रशाम्यति चाप्यन्योहेत्वर्थंकुरुतेऽपिच २०
एवंकृच्छ्रतमान्नृणांदृश्यंतेव्याधिसंकराः॥

अर्थ- अब उसी रोग पैदा करने वाली व्याधि की विचित्रता दिखाते हैं- जैसे कोइ एक दूसरे का कारण हो अर्थात् दूसरे रोग को प्रगट कर आप शांत हो जाता है- जैसे पीनस रोग आप शांत नहीं होने पाता और खांसी उत्पन्न होती है । और कोई रोग - दूसरे रोग को प्रगटकर आप जैसा का तैसा बना रहता है - जैसे बवासीर नहीं जाय और गुल्म तथा उदर रोग पैदा होते हैं॥ २०॥ या प्रकार मनुष्यों कैं व्याधिसंकर (रोग प्रगटकारक) घोरक्लेश दायक रोग दिखाते हैं - विशेषकरके चिकित्सा विरुद्ध होनेसैं ये रोग कृच्छ्रतम होते हैं

तस्माद्यत्नेनसद्वैद्यैरिच्छद्भिः सिद्धिमुत्तमाम् । ज्ञातव्योवक्ष्यतेयोऽयंज्वरादीनां विनिश्चयः॥२१॥

अर्थ- अब कहेभये निदानादि पंचक द्वारा रोग निवृत्ति रूप सिद्धी की इच्छा करके अवश्य जानने योग्य को कहते हैं तस्मादिति तिसी कारण से उत्तम सिद्धी हमको प्राप्त हो ऐसी जिन सद्वैद्यों की इच्छा है तिनको ज्वरादि रोगों का निदान जो आगे कहते हैं वो यत्न सें जानना चाहिये ॥ २१ ॥

इतिश्रीमाधवभावार्थदीपिकायांमाथुरी टीकायांसर्वरोगनिदानादिपंचक कथन-मिति १॥

ज्वरनिदान

अथ - सब देह के रोगों मैं प्रथम प्रगट होने सैं - बली - देह - इन्द्री - मन - को तपायमान करने सैं - जन्म - मरण का कारण होने सैं - स्थावर - जंगम - प्राणीन में स्थिति होने सैं - सम्पूर्ण शरीर के रोगों में चरक सुश्रुतादि आचार्यो ने ज्वर राजा कहा है **तदुक्तंचरके**

देहेन्द्रियमनस्तापीसर्वरोगाग्रजोवली ॥
ज्वरः प्रधानोरोगाणामुक्तोभगवतापुरा ॥ १ ॥

अर्थ- देह - इन्द्री - मन - को तपायमान करने सें रोगों में प्रथम प्रगट होने सें बलवान ज्वरकोसबरोगों में प्रधानता है

ज्वरकीउत्पत्ति

दक्षापमानसंक्रुद्धरुद्रनिश्वाससम्भवः
ज्वरोष्टधापृथक्द्वंद्वसङ्घातागंतुजःस्मृतः

अर्थ- दक्षप्रजापति कृत तिरस्कार सैं क्रोधित श्री रुद्रभगवान के श्वास तैं उत्पन्न जो ज्वर सो आठ प्रकार का है - वात-पित्त-कफ- इनसैं ३ द्वंद्वज ३ सन्निपात १ और आगंतुज १ ऐसे मिलकर संक्षेप सैं ज्वर आठ प्रकार का है ॥ ✣ ॥ इसश्लोक में-निश्वाससम्भवः - येजोपदधराहै- सोश्वास इस जगह क्रोधके लक्षण करके कहा है - किंतु ज्वर की श्वासतैं उत्पत्तिनहीं कंथ

कि जैसे सुश्रुत में लिखा है यथा-रुद्र कोपाग्निसंभूतः सर्वभ-तभतापनः इति अर्थात् क्रोधित रुद्रने ललाट में जो तीसरा अग्नि मय चक्षु (नेत्र) को स्पर्शकर तदनन्तर आग्नेय बाण निर्मा-ण किया (तथाच्चचरके) स्रष्टाललाटे चक्षुर्वैदग्ध्वानानसु गान्प्रभुः वाणं क्रोधाग्निसंतप्तमसृजच्छत्रुनाशनमिति-इत्यादिक वाक्यों से ज्वर मात्र की पित्त प्रकृति जाननी - प्रयोजन यह है कि सर्वज्वर में पित्तकी विरोधी क्रिया न करे- सो- वाग्भट ने क-हा है- यथा- उष्मा पित्तादृते नास्ति नात्यूष्माणं विनाज्वरः तस्मात्पित्तविरुद्धानि त्यजेत्पित्ताधिकेऽधिकमिति अर्थात् गर मी पित्त के विना नहीं होती और ज्वर गरमी के विना नहीं होवे - यासैं ज्वर मैं पित्त विरुद्ध क्रिया न करैं और पित्तज्वर मैं विशेष करके पित्त विरुद्ध क्रिया त्याज्य करै ॥ अन्य आचारी कहते हैं कि श्रीरुद्र से उत्पत्ति होने से ज्वरदेवता हैं इस लिये ज्वर का पूजन करने से शांत होता है जैसे (विदेहकावाक्यहै) ज्व रस्तुपूजनेनापि सहसैवोपशाम्यति) और ज्वर का स्वरूप भी - (हरिवंशमें) लिखा है (यथा) ज्वरस्त्रिपादस्त्रिशिराः षड्भुजो नवलोचनः भस्मप्रहरणोरौद्रः कालान्तकयमोपमः ॥ इति- अर्थात् ज्वर के तीन चरण तीन ही मस्तक छः भुजा नवने त्र भस्म युक्त देह रौद्र काल काभी काल यमराजके समान है ॥

ज्वरसंप्राप्ति

मिथ्याहारविहाराभ्यांदोषाह्यामाशयाश्रयाः
बहिर्निरस्यकोष्ठाग्निंज्वरदाःस्युरसानुगाः ॥

अर्थ- मिथ्या आहार कहिये-देश-काल-प्रकृति आदिसैंवि

१ अकाले चातिमात्रंच असात्म्यंयच्चभोजनम् विषमासनंचयत्प्रोक्तं मिथ्याहारः सउच्यते ॥१॥ * इसश्लोक से हिन्दी और फारसी की एकता दिखाई है

रुद्ध और संयोगविरुद्ध भोजन ॥ मिथ्याविहार कहिये-देहके पुरुषार्थ सें विशेषकामका करना ऐसें मिथ्या आहार- विहार सैं दुष्ट भये जो दोष (वात·पित्त·कफ) सो नाभिस्तनके बीच जो आमाशय में प्राप्त हो रस को बिगाड़ कर और कोष्ठस्थान तिसैं रहती जो अग्नि उसको देहके बाहर निकाल ज्वरके प्रगट करनेवाले होते हैं ॥ ॥ ये संप्राप्ति शरीररोगों की है आगंतुज की नहीं है क्यों कि आगंतुरोगों का तो व्यथा पूर्वक वातादि दोषों के रोकने से प्रयोजन है जैसे (सुश्रुतमें लिखा है) श्रम और चोट के लगने सें देहधारीनके देहमें कुपित भई जो वात सो सर्वदेह कों परिपूर्ण कर ज्वर को पैदा करती है ॥ और (चरक) में भी लिखा है कि चोट के लगने सें प्रगट भई जो वात सो रुधिर को बिगाड़ व्यथा और शोष तथा विवर्ण युक्त वातज्वर को प्रगट करे है ॥ शंका ॥ क्यों जो आगंतु भी शारीररोगही है क्यौं कि आगंतु ज्वर में भी गरमी रहती है क्यौं कि ॥ ऊष्मापित्ताहते नास्ति ॥ इत्यादि वाक्य प्रमाण होनेसें ॥ उत्तर ॥ ये जो तुमने कहा सो ठीक है + परंतु इस आगंतुरोग में पित्त की पूर्वकालसें ही उत्पत्ति नहीं होती पीछे उत्पत्ति होती है यासें आगंतुरोगों को शारीरत्व नही हैं ॥ ॥ इस श्लोक में- कोष्ठाग्निं- यह जो पद धरा है सो धातु की अग्नि के निवारणार्थ है अर्थात् जब धातु अग्नि बाहर आय जायगी तो दोषों का पचना नहीं हो सके और दोष पचे विना ज्वर शांति नहीं होयगा- इसलिये इस का अर्थ ऐसा न करना चाहिये (बहिर्निरस्यकोष्ठाग्निम्) कोठे के अग्नि की गरमी को बाहर निकालकर- ऐसा अर्थ करना चाहिये ॥

१ अशक्तः कुरुते कर्म्म शक्तिमान्न करोति च मिथ्याविहार इत्युक्तः सदा चैव विवर्ज्जयेत् ॥
२ नाभिस्तनान्तरं जन्तोरामाशय इति स्मृतः

ज्वरकेलक्षण

स्वेदावरोधस्संतापः सर्वांगग्रहणं तथा ॥
युगपद्यत्ररोगेतुसज्वरोव्यपदिश्यते ॥ ॥

अर्थ- जिस रोग में पसीना न आवै - देह में सन्ताप- और- सर्वांग में पीड़ा- ये एकही समें हो उसको ज्वर ऐसें कहते हैं ॥

+शंका+ क्योंजी पित्तज्वर में तो पसीने आते हैं - तो इस श्लोक में विरुद्ध आता है + इस पै जेज्जटादिक उत्तर लिखते हैं कि स्वेदावरोध कहिये (स्विद्यते अनेनेतिस्वेदः) इस व्युत्पत्ति करके स्वेद कहिये- अग्नि- तिस्का अवरोधक हिये दोष (वात-पित्त-कफ-) की व्याप्ति- ऐसा अर्थ करने से श्लोकार्थ में बिरुद्ध नहीं पड़ता ॥

ज्वरकापूर्वरूप

श्रमोरतिर्विवर्णत्वंवैरस्यंनयन प्लवः । इ
च्छाद्वेषौमुहुश्चापिशीतवातातपादिषु ॥ ज्
म्भांगमर्दोगुरुत्वंरोमहर्षोऽरुचिस्तमः । अ
प्रहर्षश्चशीतंचभवत्युत्पित्सतिज्वरे ॥ ॥

अर्थ- कारण बिनाहीं- श्रम- कर्मकरने में उत्साह नहीं- अथवा खेलने में अरुची देह में मलीनता- मुखमें बिरसता- नेत्र अश्रुपात युक्त- सर्दी- गर्मी- पवन- इनकी बार बार इच्छा होना और बारंबार द्वेष हो - इसमें जो आदि शब्द है उस्में जल और अग्नि का ग्रहण है अर्थात् इनकी बार २ इच्छा और द्वेष- ये (चरक) का मत है- तदुक्तं चरके +

ज्वलनातपवाय्वंवुभक्तद्वेषाभिळाषितेति १ अन्येतु शैत्योष्म-साधर्म्याज्जला ऽनलौ ग्रहंति तेतु आदि शब्देन शयनादिकं मन्यंते- + और अन्य आचारी सर्दी गरमी के साधर्म्यतैं जल अगिन को कहते हैं और वे- आदि शब्द मैं शयन आदि मानंत हैं + जंभाई- अंगों का टूटना- देहभारी- रोमांच का खड़ा होना- अन्न सें अरुचि- अंधेरे का आना - आनंदकी निवृत्ति- सरदी का लगना + शंका + क्यों जो पूर्व कहिआये कि- सरदी- गरमी- का बार २ इच्छा और बार २ द्वेष फेर पुनः शीत पदक्यों धरा + उत्तर + इस पदके धरनेसें सरदीकी आधिक्यता दिखाई अर्थात सरदी विशेष लगे- ये लक्षण ज्वर के पूर्व होते हैं॥ ॥ये माधवाचार्य्यने सामान्य पूर्वरूपके लक्षण सुश्रुतोक्त लिखे हैं विशिष्ट पूर्वरूपके लक्षण नहीं लिखे सो हम ग्रन्थान्तर सैं लिखते हैं

क्षेपक

सामान्यतो विशेषात्तु जृंभात्यर्थं समीरणा
त् । पित्तान्नयनयोर्दाहः कफान्नान्नाभि-
नन्दनम ॥

अर्थ- विशेष करके वातज्वर में जंभाई बहुत आती है पित्त ज्वर में नेत्रों में दाह हो- और कफ ज्वरमें अन्न में अरुचि होती है- ये श्लोक क्षेपक है परंतु बहुत पुस्तकों में मूलके साथ लिखा है सो पंडित जन जान लैंयगे ॥

वातज्वरकेलक्षण

वेपथुर्विषमोवेगः कंठोष्ठमुख शोषणं ॥
निद्रानाशः क्षवस्तंभो गात्राणां रौक्ष्यमेवच ॥
शिरोहृद्गात्ररुग्वक्त्रवैरस्यं गाढविट्कता ॥

शूलाध्मानञ्जृंभणंचभवन्त्यनिलजेज्वरे ॥

अर्थ- कंपहोना- ज्वरका विषमवेग- कंठ- होठ- मुख- नाक का सूखना- निद्राकानाश- छींकका नआना- देहकारूखापन- चकार सैं नेत्र- विष्टा- मूत्र- इनका काला होना- और भाषारी (रौक्ष्यमेवच) इसजगो (श्यावांगमलमूत्रता) ऐसा पाठ कहते हैं- और मस्तक- हृदय- गात्र इनमें पीड़ा- कोई शंका करे कि गात्र पदके धरने सैं ही मस्तक हृदय आदि का बोध होगया फेर मस्तक और हृदय पदक्यों धरे- उत्तर- ये दोनोंपदके धरनेसैं इनमेंदर्द की अधिकता दिखाई अर्थात् मस्तक हृदय में बहुत पीड़ा होय- मुखकाविरसपना- मलकारुकना- शूल- अफरा- जम्भाई- येलक्षण वातज्वरके होते हैं ॥

पित्तज्वरकेलक्षण

वेगस्तीक्ष्णोऽतिसारश्च निद्राऽल्पत्वंतथा
वमिःकंठोष्ठमुखनासानांपाकःस्वेदश्चजायते
प्रलापोवक्त्रकटुतामूर्च्छादाहोमदस्तृषा ॥
पीतविण्मूत्रनेत्रत्वक्पैत्तिकेभ्रमएवच ॥ ॥

अर्थ- ज्वर को बेग तीक्ष्ण हो- अतिसार यानी पित्त के बेग सैं दस्त का पतला होना न कि अतिसाररोग हो- थोड़ी निद्रा आवै- पित्त को कफ के स्थान में पहुंचने सैं वमन का होना - कंठ- होठ- मुख- नाक - इनका पकना- और पसीनों का आना- बड़बड़ाना मुख में कटु आट- मूर्च्छा- दाह- उन्मत्तपना- प्यास- विष्टा- मूत्र- नेत्र- देहकी त्वचा- इनका पीला होना तथा भ्रम- ये लक्षण पित्त ज्वर में होते हैं ÷ शंका ÷ क्योंजी भ्रम को बात बिकार में लिखा है या सैं

ये तो बात का धर्म है फिर पित्तके बिकारमें भ्रम शब्द क्यों धरा ✣ उत्तर ✣ तुमने कहा सो ठीक है परंतु रोग एकही दोष सैही नहीं प्रगट होय किंतु अनेक दोषों से होयहै सो लिखाबी है (नरोगोप्येकदोषजःइति) और (पैत्तिकभ्रमएवच) इस श्लोक में चकार जो पड़ा है इससेइसश्लोक में जो नहीं कहे कोन - तीव्रगरमी - लालचकता - शीतकीइच्छा - दाह - अरुचि - इत्यादि जानने ॥

कफज्वरकेलक्षण

स्तैमित्यंस्तिमितोवेगआलस्यंमधुरास्यता।
शुक्लमूत्रपुरीषत्वंस्तंभस्तृप्तिरथापिच ॥
गौरवंशीतमुत्क्लेदोरोमहर्षोतिनिद्रता। प्रतिश्यायोऽरुचिःकासःकफजेऽक्ष्णोश्चशुक्लता ॥ ३२ ॥

अर्थ- स्तैमित्य (गीलेकपड़े सें देहको आच्छादितकरदेने से जैसाहो ऐसामालूमहो) ज्वरका मंदबेगहो - आलस्य - मुखमीठा - मल - मूत्र - सफ़ैदहो - देहका जकड़जाना - तृप्तसरीखा अन्नमेंरुचि न होना - देहभारी - शीतकालगना - ओकारीका आवना - और आचारी कहते हैं कि कफका थूकना - रोमांचकाहोना - अतिनिद्राका आना (रसकेवहनेबालीनाड़ीके मार्गका रुकना - दस्तका थोड़ा उतरना - पसीना - मुखमें नोन का सा सवाद हो - देह का थोड़ा गरम होना - रद्दका होना - लारकागिरना - मुखपाक तथा मुखनाक - सैंकफका पड़ना - अरुचि - खांसी - नेत्र - श्वेत हों - ये लक्षण कफज्वरमेंहोतेहैं (स्तंभस्तृप्तिरथापिच) इस पद में जोचकार है उस्से देह में पीड़ा का - शीतकालगना - लारकागिरना - वमन - तंद्रिकरोग - हृदयल्हिसासा - गरमीप्यारीलगे - मन्दाग्नि

इत्यादि जानने - इस ऊपर के श्लोक में और इसटीका में जो पाठ ( ) ऐसी दोलकीरों के भीतर लिखा है वो क्षेपक है माधव का नहीं हैं ॥

वातपित्तज्वरकेलक्ष॰

तृष्णामूर्च्छाभ्रमोदाहः स्वप्ननाशः शिरोरुजा
कंठास्यशोषोवमथूरोमहर्षोऽरुचिस्तमः ३३
पर्वभेदश्चजृंभाचवातपित्तज्वराकृतिः ॥

अर्थ- प्यास - मूर्च्छा - भ्रम - दाह - निद्राकानाश - मस्तक में पीड़ा - कंठ मुख - इनकासूखना - वमन - रोमांच - अरुचि - अंधकारदर्शन - संधोन्में पीड़ा - जंभाई - येवातपित्तज्वरकेलक्षण है ॥

श्लेष्मवातज्वरकेलक्ष॰

स्तैमित्यंपर्वणांभेदोनिद्रागौरवमेवच ॥
शिरोग्रहः प्रतिश्याय : कासःस्वेदाप्रवर्त्तनं
संतापोमध्यवेगश्चवातश्लेष्मज्वराकृति :

अर्थ- स्तैमित्यनाम (गीलेकपड़ेसेदेहकोढकनेसेंजैसाहो ऐसा मालूमहो) संधोन्मेंफूटनी - निद्रा - देहभारी - मस्तकभारी - नाकसें पानीकागिरना - खाँसी - पसीनोंका आना - शरीरकादाह - ज्वरकामध्यमवेग - येवातश्लेष्मज्वरके लक्षण हैं ॥ ३५ ॥

पित्तकफज्वरकेलक्ष॰

लिप्ततिक्तास्यतातंद्रामोहकासोऽरुचिस्तृषा
मुहुर्दाहोमुहुः शीतंश्लेष्मपित्तज्वराकृतिः ॥

अर्थ- मुखकफसेंलिप्तहो - तथापित्तकेजोरसेंमुखमेंकडुआ द - तंद्रा - मूर्च्छा - खाँसी - अरुचि - प्यास - बारंबार दाह हो और बारंबार शीतकालगना येकफपित्तज्वरके लक्षण है ; स्तंभ

(देहकाजकड़ना) पसीना - कफ - पित्तकागिरना । सुश्रुतोक्त लक्षण औरभी जाननें ॥

सन्निपातज्वरकेलक्षण

क्षणेदाहःक्षणेशीतमस्थिसंधिशिरोरुजा ।
सस्रावेकलुषेरक्ते निर्भुग्नेचापिलोचने ॥
सस्वनौसरुजौकर्णौकंठश्शूकैरिवावृतः ।
तन्द्रामोहप्रलापश्चकासश्वासोऽरुचिर्भ्रमः
परिदग्धाखरस्पर्शाजिह्वास्रस्तांगतापरम् ।
ष्ठीवनंरक्तपित्तस्यकफेनोन्मिश्रितस्यच ॥
शिरसोलोठनंतृष्णा निद्रानाशोहृदिव्यथा ।
स्वेदमूत्रपुरीषाणां चिराद्दर्शनमल्पशः ॥ कृ
शत्वंनातिगात्राणांप्रततंकण्ठकूजनं । कोठा
नांश्यावरक्तानांमण्डलानांचदर्शनं । मूकत्वं
स्रोतसांपाकोगुरुत्वमुदरस्यच ॥ चिरात्पाक
श्चदोषाणांसन्निपातज्वराकृतिः ॥ ॥

अर्थ- अकस्मात् क्षण २ में दाह - क्षणभरमें शीतलगै - हाड़ - संधि - मस्तक - इनमेंशूल हो - अश्रुपातयुक्त काले औरलाल तथा फटे से नेत्र होजांय - अथवा टेढे नेत्र हों - ये जैज्जट का मत है - कानों में शब्द और पीडा हो - कंठ में कांटे पड़ जांय - तंद्रा हो - वेहोशी हो अनर्थ बोलै - खांसी - श्वास - अरुचि - भ्रम - ये हो - जीभ - परिदग्धवत् (काली) और खरदरी गौकी जीभ के समान) तथा सिथिल (लठर) हो पित्त और रुधिर मिलाकफ थूकै - शिरको इधर उधर पटकै - तृषा बहुतलगै - निद्रा का नाश हो - हृदय में पीड़ा - पसीना - मूत्र - मल - इनका बहुत कालमें थोड़ा उतरना - दोषोंकेपूर्ण होनेसे देह कादुबला न होना - कंठमें कफ कानिरंतर बोलना - रुधिर

मैं काले - लाल - कोढ़ और चकत्तेन का देह मैं होना - शब्द बहुत मन्द निकले - कान - नाक - मुख - आदि छिद्रों का पकना - पेटका भारी होना - बात - पित्त - कफ - इनका देर में पाक हो - (उदरस्यच) इस पदमें जो चकार है यासैं वाग्भटने जो लिखे हैं कोन शीतका लगना - दिनमें घोर निद्राका आना - नित्यरात्रि में जागना - अथवा निद्रा कभी आवेही नहीं - पसीना बहुत आवे - और नहिं आवे - कभी गान करे - कभी - नाचे - हंसे - रोवे - और चेष्टा पलट जाय - इत्यादि जानने - ये सन्निपात ज्वरके लक्षण जानने ÷ शंका ÷ क्योंजी वातादिक दोषों के परस्पर विरुद्ध गुण हैं फेर उनको एक न मिलकर एकही कार्य का करना नहीं घट सके है - क्यों कि परस्पर विरुद्ध गुण होने सैं ÷ जैसे ÷ अग्नि - और जल के विरुद्ध गुण होने सें एकही कार्य नहीं हो सके - ऐसेंही बात - पित्त - कफ के विरुद्ध गुण हैं फेर ये मिल करकें सैं सन्निपात रूपी विकारको प्रगट करते हैं ÷ उत्तर ÷ इसका समाधान - दृढवैल - आचार्य ने इस प्रकार कहा है कि गुण विरुद्ध भी बात - पित्त - कफ दोष हैं तथापि एक संग उत्पन्न होने सैं तथा परस्पर समान गुण होने सें एक दूसरे दोष को शान्ति नहीं कर सके हैं - जैसे सर्प का विष सर्प को बाधक नहीं + गदाधरे) आचार्य इसमें और हेतु कहे हैं - जैसे - दैवकी इच्छा सें और दोषों के स्वभाव सें तथा विरुद्ध गुण होने सैं सन्निपात में अर्थात् तीनों दोषों के मिलने सैं एक दोष दूसरे दोषका नाशक नहीं है ÷ शंका

१ कोढके लक्षण भालुकिने कहे हैं यथा वरटीदंशसंकाशः कंडूमान् लोहितोऽस्रक फपित्तान् क्षणिकोत्पत्तिविनाशः कोढ इत्यभिधीयते सद्भिः इति

२ विरुद्धैरपि नत्वेते गुणैर्घ्नंति परस्परं दोषास्सहज साम्यत्वाद्विषंघोरमहीनिव

३ दैवात् दोषस्वभावाद्वादोषाणां सान्निपातिके

विरुद्धैश्च गुणैस्तैश्च नोपघातः परस्परम् ॥

क्योंजी वात पित्त कफ का अलग २ काल में संचय होता है और अलग २ काल में कोप होता है इनका एकही काल में प्रगट होना असंभव है तो कहिये फेर ये तीनों दोष मिलकर कैसे सन्निपात ज्वर को प्रगट करते हैं ÷ उत्तर ÷ ये त्रिदोष प्रकट कारक कारण (औषध- अन्न- विहार- के) बल करके एकही काल में इन तीनों दोषों का प्रकोप होता है ये सिद्धांत है ॥

सन्निपातोंके भेद

सुश्रुत वाग्भट के मत सें सन्निपात एकही प्रकार का है परंतु और आचारिन के मत मैं उल्वणादि भेद करके ५२ प्रकार कहे यथा

१ भ्रमः पिपासा दाहश्च गौरवं शिरसोऽतिरुक्
वात पित्तोल्वणे विद्याल्लिङ्गं मन्दकफे ज्वरे ॥
२ शैत्यं कासोऽरुचिस्तन्द्रा पिपासा दाहरुग्व्यथाः
वातश्लेष्मोल्वणे व्याधौ लिङ्गं पित्तानुगे विदुः ॥
३ छर्दिः शैत्यं मुहुर्दाहस्तृष्णा मोहोऽस्थिवेदना ।
मन्दवाते व्यवस्यन्ति लिङ्गं पित्तकफोल्वणे ॥
४ सन्ध्यस्थिशिरसः शूलं प्रलापो गौरवं भ्रमः ॥
वातोल्वणे स्याद्व्यनुगे तृष्णा कण्ठास्यशुष्कता ।
५ रक्तविण्मूत्रता दाहः स्वेदस्तृष्णा बलक्षयः ॥
मूर्छा चेति त्रिदोषे स्याल्लिङ्गं पित्ते गरीयसि ॥
६ आलस्यारुचिहृल्लासदाहवम्यरतिभ्रमैः
कफोल्वणं सन्निपातं तन्द्राकासेन चादिशेत्
७ प्रतिश्यायश्छर्दिरालस्यं तन्द्रारुच्यग्निमार्दवम्
हीनवाते पित्तमध्ये लिङ्गं श्लेष्माधिके मतम् ॥
८ हारिद्रमूत्रनेत्रत्वं दाहस्तृष्णा भ्रमोऽरुचिः ।
हीनवाते मध्यकफे लिङ्गं पित्ताधिके मतम्

९ शिरोरुक्वेपथुश्वास प्रलापश्छर्द्यरोचकाः
हीनपित्ते मध्यकफे लिङ्गं वाताधिके मतम्
१० शीतकं गौरवं तन्द्रा प्रलापोस्थिशिरोऽतिरुक्
हीनपित्ते वातमध्ये लिङ्गं श्लेष्माधिके विदुः।
११ वर्चोभेदोग्निदौर्बल्यं तृष्णा दाहोरुचिर्भ्रमः
कफहीने वातमध्ये लिङ्गं पित्ताधिके बिदुः॥
१२ श्वासः कासप्रतिश्यायौ मुखशोषोतिपार्श्वरुक्
कफहीने पित्तमध्ये लिङ्गं वाताधिके मतम्

इति

ये उल्वणादि भेद चरक के मत से कहे हैं परंतु भालुकी आचार्य ने अपने ग्रन्थ में उल्वणादि लक्षण और ही प्रकार से कहे हैं यथा

बातपित्ताधिको यस्य सन्निपातः प्रकुप्यति
तस्य ज्वरोङ्गमर्दस्तृट् तालुशोषप्रमीलकाः
आध्मानतन्द्राघरुचिश्वासकासभ्रमश्रमाः १
पित्तश्लेष्माधिको यस्य सन्निपातः प्रकुप्यति
अन्तर्दाहो वहिः शीतस्तस्य तन्द्रा बिवर्द्धते।
तुद्यते दक्षिणं पार्श्वमुरः शीर्षगलग्रहाः
निष्ठीवेत्कफपित्तञ्च तृष्णा कण्ठश्च दूयते
विड्भेद श्वास हिक्काश्च बाध्यन्ते सप्रमीलकाः
(विधुफल्गु) चतौ नाम्ना सन्निपातावुदाहृतौ २
श्लेष्मानिलाधिको यस्य सन्निपातः प्रकुप्यति
तस्य शीतज्वरो निद्रा क्षुत्तृष्णा पार्श्वसंग्रहः॥
शिरोगौरवमालस्यं मन्यास्तम्भप्रमीलकाः १
उदरं तुद्यते चास्य कटी वस्तिश्च दूयते॥ ॥
सन्निपातः स विज्ञेयो (मकरीति) सुदारुणः ३

वातोल्वणः सन्निपातोयस्यजन्तोः प्रकुप्यति
तस्यतृष्णाज्वरग्लानिपार्श्वरुग्दृष्टिसंक्षयाः
पिंडिकोद्वेष्टनदाह उरुसादोवलक्षयः ॥
सरक्तञ्चास्यविस्मूत्रं शूलंनिद्राविपर्य्ययः ।
निर्भिद्यतेगुदञ्चास्यवस्तिश्चपरिरुध्यति १
आयम्यतेभिद्यतेच हिक्कतेविल्लपत्यपि ॥
मूर्च्छतिस्फार्यनेरोतिनाम्ना (विस्फुरकः) स्मृतः ४
पित्तोल्वणः सन्निपातो यस्यजन्तोः प्रकुप्यति
तस्यदाहज्वरोघोरोवहिरन्तश्चबर्द्धते ॥ ॥
शीतंचसेवमानस्य कुप्यतः कफमारुतौ ॥
ततश्चैनंप्रधावन्तेहिक्काश्वासप्रमीलकाः
विसूचिकापर्व्वभेदः प्रलापोगौरवंक्लमः ॥
नाभिपार्श्वरुजातस्यखिन्नस्याशुबिवर्द्धते ।
स्विद्यमानस्य रक्तञ्चस्रोतोभ्यः संप्रपद्यते ॥
शूलेनपीड्यमानस्यतृष्णादाहश्चबर्द्धते ÷
असाध्यसन्निपातोयं (शीघ्रकारीति) कथ्यते
नहिजीवत्यहोरात्रमेतेनाविष्टविग्रहः ॥ ५ ॥
कफोल्वणः सन्निपातोयस्यजन्तोः प्रकुप्यति
तस्यशीतज्वरश्चप्रगौरवालस्यतन्द्रिकाः ।
छर्दिमूर्च्छातृषादाहत्लष्मारोचकहृद्ग्रहाः
ष्ठीवनंमुखमाधुर्य्यंश्रोत्रवागदृष्टिनिग्रहः ।
इत्यादि

मतान्तरभेद

कुंभीपाकः पौर्णनावः प्रलापीह्यंतर्दाहोदं
डपातोऽन्तकश्च । एणीदाहश्चाथहारिद्र

संज्ञाभेदास्तेसन्निपातज्वरस्य ॥ ॥ २॥ ॥
अजघोषभूतहासौयंत्रापीडश्चसंन्यासः ॥
संशोषीचविशेषास्तस्यैवोक्तास्त्रयोदशच ॥ २ ॥

अर्थ- १ कुम्भीपाक २ प्रौर्णनाव ३ प्रलापी ४ अंतर्दाह ५ दण्ड-पात ६ अन्तक ७ रुग्णादाह ८ चित्तविभ्रमसंज्ञक ९ अजघोष १० भूतहास ११ यन्त्रापीड़ १२ संन्यास १३ संशोषी एतेरह प्रकारके सन्निपात हैं ॥

इन तेरहके क्रमसे लक्षण लिखै हैं

कुंभीपाक

घोणाविवरेरक्तशोणासितलोहितंसार्ति
विलुठन्मस्तकमभितः कुंभीपाकेनपीडितंविद्यात्

प्रौर्णनाव

उत्क्षिप्ययःस्वमंगंक्षिपत्यधस्ताद्विनांतमुच्छ्वसति
तंप्रौर्णनावजुष्टंविचित्रकष्टंविजानीयात् ॥

प्रलापी

स्वेदभ्रमांगमर्दाः कंपोद्वेथुर्वमीव्यथाकंठे
गात्रंचगुरुत्वीदंप्रलापिजुष्टस्यजायतेलिंगं

अन्तर्दाह

अन्तर्दाहःशैत्यंबहिश्चयस्यातिसंततःश्वासः
अंगानिदग्धकल्पंसोंतर्दाहार्दितःकथितः

दण्डपात

नक्तंदिवानोनिद्रामुपैतिगच्छतिमूर्द्धानभसः
उत्थायदंडपातेभ्रमातुरःसर्वतोभ्रमति। ५।

अन्तक

संपूर्यतेशरीरंग्रंथिभिरभितस्तथोदरंमरुता
श्वासातुरस्यसततंविचेतनस्यांतकार्त्तस्य।

एणीदाह

परिधावतीवगात्रेरुक्पात्रेभुजगपतंगहरिणगणः
वेपथुमतः सदाहस्यैणीदाहज्वरात्तस्य ७

हारिद्र

यस्यातिपीतमंगंनयनेमुतरांमलंततोप्यधिकम्
दाहोतिशीततावहिरस्यसहारिद्रकोज्ञेयः ८

अजघोष

छगलकशरीरगंधःस्कंधरुजावान्निरुद्धगलरंध्रः
अजघोषसन्निपाताद्भवतास्राक्षः पुमान्भवति ।

भूतहास

शब्दादीनधिगच्छतिनस्वान्विषयान्यदींद्रियग्रामः
हसतिप्रलपतिपरुषंसज्ञेयोभूतहासार्त्तः २० ।

यंत्रापीड

येनमुहुर्ज्वरवेगाद्यंत्रेणेवावपीड्यतेगात्रं ।
रक्तंपीतंचवमेद्यंत्रापीडःसविज्ञेयः ॥ २१ ॥

सन्यास

अतिसरतिवमतिकूजतिगात्राण्यभितश्चिरंनरःक्षिपति
सन्याससन्निपातेप्रलपतिमुग्धाक्षिमंडलोभवति

संशोषी

मेचकवपुरतिमेचकलोचनयुगलोऽवलोत्सर्गात्
संशोषिणिसितपिडकामंडलयुक्तोज्वरोभवति २३

इति कुंभीपाकादीनां त्रयोदशानां लक्षणानि

सन्निपातकेविस्फारकादि २६ भेदों कोकहतेहैं

१ विस्फारक २ शीघ्रकारी ३ कम्पन ४ वभ्रु ५ चिह्नारव्य ६ शर्करारव्य

७ भल्लु ८ कूटपालक ९ संमोहक १० पाकल ११ याम्य १२ संग्राम १३ क्रकच १४ कर्कोटक १५ दारिक १६ व्याल्लाकृति॥ इन १६ सन्निपातों के लक्षण ग्रन्थ बढ़ने के भय सैं हमनेनहीं लिखे अब प्रसंग बसतैं सम्पूर्ण सन्निपातों की उत्पत्ति औरसम्प्राप्तिग्रन्थान्तरों सैं लिखते हैं ॥

उत्पत्ति

अम्लस्निग्धोष्णतीक्ष्णै:कटुमधुरसुरातापसे
वाकषायै:कामक्रोधातिरूक्षै:गुरुतरपिशिता
हारनीहारशीतै: ॥ शोकव्यायामचिंताग्रह
गणवनितात्यंतसंगप्रसङ्गै: प्राय:कुप्यंति
पुंसांमधुसमयशरद्दर्पणेसन्निपाता:॥

अर्थ- खट्टा- चिकना- गरम- तीखा- कडुआ- मीठा- मद्य- सूर्य की घाम से आदिले ताप का सेवन- कषेला- काम- क्रोध- रूक्ष- भारी- मांस- आदि पदार्थ का सेवन- नीहारकी शीत- शोक- दंडकसरत आदिश्रम- चिंता- भूतपिशाचकी बाधा- अत्यंत स्त्रीसंग सैं- इनकारण सैं और चैत्र- वैशाख- आश्विन- कार्त्तिक- श्रावण- भाद्रपद- इन महीनों में मनुष्यों के प्राय सन्निपातों का कोप होय है ॥ ॥ ॥ नागाननंवन्दे

सम्प्राप्ति

आमोह्याहारदोषात्प्रथममुपचितोहंतिवन्हिं
शरीरे।श्लेष्मत्वंयातिभुक्तंसकलमपितत:सौ
कफोवायुदुष्ट:।स्रोतांस्यापूर्य्यरुध्यादनिलम
थमरुत्कोपयेत्पित्तमंत:।संमूर्छ्याऽन्योन्यमे
तेप्रवलमितिन्दणांकुर्व्वतेसन्निपातम् ॥ ॥

अर्थ- आहार के दोष सैं प्रथम संग्रहीतजो आमसो देहकी अ

ग्नि को शान्ति करे और मनुष्य जो कुछ खाय सो सब कफ होजाय और फेर इस कफ को वायु दूषित करै तब ये पवन के वहने वाली नाड़ीन्के मार्ग में प्राप्त हो उन्को रोक दे तब पवन पित्त को कुपित करै ऐसैं तीनों दोष अन्योऽन्य कुपित हो मनुष्यों के प्रबल सन्निपात रोग प्रगट करें हैं ॥

अब संधिकादि तेरह सन्निपातों के लक्षण प्रथक् प्रथक् लिखते हैं ॥

यथा

संधिकश्चांतकश्चैव रुग्दाहश्चित्तविभ्रमः
शीताङ्गस्तंद्रिकः प्रोक्तः कंठकुब्जश्च कर्णकः
विख्यातो भुग्ननेत्रश्च रक्तष्ठीवी प्रलापकः ।
जिव्हकश्चेत्यभिन्यासस्सन्निपातास्त्रयोदश ॥

अर्थ- १ संधिक २ अंतक ३ रुग्दाह ४ चित्तविभ्रम ५ शीतांग ६ तंद्रिक ७ कंठकुब्ज ८ कर्णक ९ भुग्ननेत्र १० रक्तष्ठीवी ११ प्रलापक १२ जिव्हक १३ अभिन्यास ये तेरह सन्निपात कहे हैं ॥

अथ तेरह सन्निपातों की मर्यादा

संधिके वासराः सप्त चान्तके दशवासराः
रुग्दाहे विंशतिर्ज्ञेया वत्स्यष्टौ चित्तविभ्रमे ॥
पक्षमेकं तु शीतांगे तन्द्रिके पंचविंशतिः
विज्ञेया वासराश्चैव कंठकुब्जे त्रयोदश ॥
कर्णके च त्रयोमासा भुग्ननेत्रे दिनाष्टकं ॥
रक्तष्ठीवी दशाहानि चतुर्दश प्रलापके ॥
जिव्हके षोडशाहानि कलाभिन्यासलक्षणे
परमायुरिदं प्रोक्तं म्रियते तत्क्षणादपि ॥

अर्थ- संधिक की ७ अन्तक की १० रुग्दाह की २० चित्तविभ्रम

की २४ शीतांगकी २५ तंद्रिककी २५ कंठकुब्जकी १३ कर्णककी तीन महीना (९० दिन) भुग्ननेत्र ८ रक्तष्ठीवीकी १० प्रलापकी १४ जिव्हककी १६ अभिन्यासकी १६ दिनकी ये सन्निपातों की परमायुके दिनकहे हैं। परंतु रोगी शीघ्रवी मरजाय है॥

उक्तसन्निपातोंमेंसाध्याऽसाध्यविचार

संन्धिकस्तन्द्रिकश्चैव कर्णकः कंठकुब्जकः
जिव्हक श्चित्रविभ्रंशः षट्साध्याः सप्तमारकाः

अर्थ- संधिक १ तंद्रिक २ कर्णक ३ कण्ठकुब्ज ४ जिव्हक ५ चित्तविभ्रंश ६ येछः साध्य हैं बाकी बचे सात सो मारक हैं॥

असाध्यकृच्छ्रसाध्यके

दोषेविबद्धेनष्टेग्नौसर्वसम्पूर्णलक्षणः
सन्निपातज्वरोसाध्यः कृच्छ्रसाध्यस्ततोऽन्यथा

अर्थ- जिसमें दोष (वात पित्तकफ) बद्धि होकर अर्थात् सम्पूर्ण लक्षण होकर मिलते हों और अग्नि शांतिहोगईहोवोसन्निपातज्वर असाध्य है औरइस्से बिपरीत अर्थात्दोषबद्धनहों अल्प लक्षण हों अग्नि थोड़ीदीप्तहो वो सन्निपातज्वरकृच्छ्र साध्य है (जैज्जटने) दोष शब्दका मलअर्थ कराहै अर्थात् पुरीषादिक बंधसंते इत्यादि इस श्लोक कातात्पर्यार्थ येहै कि असाध्य और कृच्छ्र साध्यभये पर सुख साध्य नहिं होता है इसी से (भालुकी) आचारीने लिखा है यथा

मृत्युनासहयोद्धव्यंसन्निपातंचिकित्सता
यस्तुतत्रभवेज्जेतासजेताऽऽमयसंकुले १

अर्थ- जोवैद्य सन्निपात की चिकित्सा करे है वो मौत के साथ संग्राम करे है जोइस सन्निपात को जीते अर्थात् शांतकरेवोसर्वे

रोग के गणों का जीतने वाला है

तथाच

सन्निपातार्णवेमग्नंयोभ्युद्धरतिमानवम् ।
कस्तेननकृतोधर्मःकांचपूज्ञांनसोहति १

अर्थ- जो वैद्य सन्निपात रूपी सागर में डूबे मनुष्य को निकालता है उसनें कौनसा धर्म न करा अर्थात् सब धर्म्मकर चुका और बो कौन पूजा के योग्य नहीं हैं अर्थात्वोसबपूज्ञानकेयोग्य है

संधिक

पूर्वरूपकृतशूलसम्भवंशोपबातबहुवे
दनान्वितं।श्लेष्मतापवलहानिजागरं ।
सन्निपातमितिसन्धिकंवदेत् १

अर्थ- जिसके पूर्व रूप में शूल- शोष- बात सैं बहुत पीड़ा कफ का गिरना- सन्ताप- बलहानि- रात्रि में जागरण- येलक्षण होंय तिसको (सन्धिक) सन्निपात कहते हैं ॥ १॥

अन्तक

दाहंकरोतिपरितापनमातनोति मोहंददा
तिविदधातिशिरःप्रकंपं। हिक्कांकरोतिक
सनंचसमानुहोति जानीह्लितंविबुधवर्जि
तमंतकाख्यम् २

अर्थ- दाहकरे- संतापको बढावे - मोहको देवे- शिरकंपावे हिचकी करे- और खांसी को बढ़ावे- ऐसा पंडितों करके त्याज्य (अन्तक) सन्निपात जानना ॥

रुग्दाह

प्रलापपरितापनप्रबलमोहमोद्यभ्रमः। प
रिभ्रमणबेदनाव्यथितकण्ठमन्याहनुः ॥

निरंतरतृषाकरःश्वसनकासहिक्काकुलः
सकष्टतरसाधनोभवतिहृत्तरुग्दाहकः ३

अर्थ– अनर्थभाषण-सन्ताप-अतिमोह-मंदता-अनायासश्रम-भौर-पीड़ा-कंठ-मन्यानाड़ी-औरठोड़ी-इनमें व्यथा-निरंतर प्यासलगे-श्वास-खांसी-औरहिचकी-इनलक्षणयुक्त जैसा ये (रुग्दाह) कष्टसाध्यहै-येसन्निपातरोगी को मारे है ॥ ३॥

चित्तभ्रम

यदिकथमपिपुंसांजायतेकायपीडा। भ्रम
मदपरितापोमोहवैकल्यभावः। विकल
नयनहासोगीतनृत्यप्रलापी। ह्यभिदधति
असाध्यंकेपिचित्तभ्रमाख्यम् ॥४॥

अर्थ– जिसके कोई प्रकार करके पीड़ा होय-तथा भ्रम-घत्राराये सरीखी अवस्था हो-सन्ताप-मोह-विकलता-नेत्रोंमें वेकली हो-हंसना-गाना-नाचना-बकना-ये लक्षण होंय तिसको (चित्तभ्रम) सन्निपात कोई असाध्य ऐसें कहते हैं ॥४॥

शीतांग

हिमसदृशशरीरोवेपथुश्वासहिक्का। शि
थिलितसकलांगःखिन्ननादोग्रतापः। क्ल
मथुदवथुकासच्छर्द्यतीसारयुक्त स्त्वरितम
रणहेतुःशीतगात्रप्रभावात् ५

अर्थ– शरीर बर्फके समान शीतलहोय-कम्प-श्वास-हिचकी सर्वअङ्ग सिथिल हो-मन्द शब्द-देहकेभीतर उग्र सन्ताप-अनायासश्रम-मनकासंताप-खांसी-छर्दि-अतीसार-येलक्षण युक्त सन्निपातको (शीताङ्ग) कहते हैं ये प्राणोंका शीघ्र नाश कर्त्ता है ॥ ५ ॥

तंद्रिक

प्रभूतातंद्रार्त्तिज्वरकफपिपासाकुलतरो।भ
वेच्छ्यामाजिव्हाप्रथुलकठिनाकंटकवृता
अतीसारःश्वासः क्लमथुपरितापःश्रुतिरुजो
भ्रशंकंठेजाड्यंशयनमनिशंतंद्रिकगदे॥६॥

अर्थ- तंद्रिक सन्निपात में तंद्रा बहुत होय-शूल-ज्वर-कफ-तृषा सें रोगी बहुत पीडित हो- जीभ काले रंग की मोटी- कठोर- और कांटे युक्त हो- और अतीसार- श्वास-ग्लानि- संताप- कर्णशूल-कंठ में जड़ ता- और रात दिन निद्रा- ये लक्षण होते हैं यह सन्निपात असाध्य है ६॥

कंठकुब्ज

शिरोर्तिकंठग्रहदाहमोहकंपज्वरारक्तस
मीरणार्त्तिः॥ हनुग्रहस्तापविलापमूर्च्छाः
स्यात्कण्ठकुब्जःखलुकष्टसाध्यः॥ ७ ॥

अर्थ- शिर में पीड़ा- कण्ठ में पीड़ा- दाह- बेहोशी- कंप- ज्वर वातरक्त सम्बन्धीपीडा- हनुग्रह- संताप- बकना- और मूर्च्छा- यह लक्षण युक्त सन्निपात को (कण्ठकुब्ज) कहते हैं यह कष्ट साध्य है ॥७॥

कर्णक

प्रलापश्रांतिह्रासकंठग्रहांग। व्यथाश्वास
कासप्रसेकप्रभावं। ज्वरंतापकर्णांतयोर्ग
ल्लपीड़ा। बुधाःकर्णकंकष्टसाध्यंवदंति ८।

अर्थ- अनर्थभाषण- बहरा होजाय- कंठ में दर्द होय- अंगों में पीड़ा- श्वास- कास- पसीना- लार का गिरना- ज्वर- सन्ताप- कर्ण - और गाल इनमें पीड़ा- जिसमें ये लक्षण हों उसको पण्डित

कष्ट साध्य (कर्णक) सन्निपात कहते हैं ॥ ८ ॥

भुग्ननेत्र

ज्वरबलापचयः स्मृतिशून्यताश्वसनभु
ग्नविलोचनमोहितः प्रलपनभ्रमकंप
नशोफवान्त्यजतिजीवितमाशुसभुग्न
दृक् ॥ ९ ॥

अर्थ- ज्वर में बलका नाश - स्मृतिनाश - श्वास टेढीदृष्टी - बेहोसी - अनर्थभाषण - भ्रम - कंप - और सूजन - ये लक्षण (भुग्ननेत्र) सन्निपातके हैं ये रोगी जल्दी मरजाता है ॥ ९ ॥

रक्तष्ठीवी

रक्तष्ठीवीज्वरवमित्रषामोहशूलातिसारा ॥
हिक्काध्मानभ्रमणदवथुश्वाससंज्ञाप्रणाशाः
श्यामारक्ताधिकतररसनामंडलोत्थानरूपा।
रक्तष्ठीवीनिगदितइहप्राणहंताप्रसिद्धः ॥ १० ।

अर्थ- रक्तकी उलटी करे - ज्वर - वमन - तृषा - मूर्छा - शूल - अतिसार - हिचकी - अफरा - भौंरका आना - संताप - श्वास - संज्ञा नाश - काली औरलाल जीभ - देह में रुधिरके विकार सें चकत्ता हों - जिस्में ये लक्षण हों उसको (रक्तष्ठीवी) सन्निपात कहते हैं ये प्राण का नाश करैसें प्रसिद्ध है ॥ १० ॥

प्रलापक

कंपप्रलापपरितापनशीर्षपीड़ा। प्रौढ़प्र-
भावपवमानपरोऽन्यचिन्ता । प्रज्ञाप्रणा
शविकलप्रचुरप्रवादः । क्षिप्रंप्रयातिपि
तृपालपदंप्रलापी ११

अर्थ- कंप - बड़बड़ाना - संताप - शिरमें पीड़ा - इनका विशेष

जोर हो - पवित्रतामें आशक्त - दूसरे का ज़िकर करे - बुद्धि का नाश हो - विकल और वहुत बकवाद करे - ऐसाये प्रला पक सन्निपातवाला रोगी यमराजके पुरको पधारे ॥ ११ ॥

जिव्हक

श्वसनकासपरितापविव्हलः । कठिनकं टकवृतानि जिव्हकः ॥ बधिरमूकबलहा निलक्षणोभवति कष्टतरसाध्यजिव्हकः

अर्थ- श्वास - खाँसी - संताप - विव्हल - कठोर और काँटे न से व्याप्त ऐसी जीभ - बहरा - गूंगा - और वल की हानि - इन लक्षणों सें संयुक्त ऐसाये (जिव्हक) सन्निपात कष्ट साध्य है १२

अभिन्यास

दोषत्रयस्निग्धमुखत्वनिद्रा । वैकल्यनिश्चे ष्टनकष्टवाग्मी । बलप्रणाशः स्वसनादि- निग्रहोऽभिन्यासउक्तोननुमृत्युकल्पः

अर्थ- त्रिदोषों के कोपके समान मुख पर चिकनापना - निद्रा - वेकली - चेष्टाहीन हो - कष्ट सें बोले - बलनाश - श्वा सादिकन का रुकना - ये लक्षण (अभिन्यास) सन्निपात में होते हैं ये महा असाध्य मृत्यु के तुल्य है ॥

सन्निपातोपद्रव

सन्निपातज्वरस्यांतेकर्णमूलेसुदारुणः । शो थःसंजायतेतेनकश्चिदेव प्रमुच्यते १ ज्वर स्यपूर्वंज्वरमध्यतोवा ज्वरांततोवाश्रुतिमू- लशोथः ॥ क्रमादसाध्यः खलुकष्टसाध्यः सुखेनसाध्योमुनिभिः प्रदिष्टः २

अर्थ- सन्निपातज्वर शांतिहोनेके पीछे कानकी जड़ में दारु

ण सूजन पैदा होती है उस सूजन से कोई रोगी बचे है प्रायये मारही डालते है ॥ १॥ यदि यह सूजन ज्वरके पहिले होय तो अ साध्य है - ज्वरके मध्य में होय तो कष्ट साध्य है - और ज्वरके अंत में होय तो सुखसाध्य है । ऐसें मुनीश्वरों ने कहा है ॥ २॥ ॥ ❖

सप्तत्रिपंचसप्ताहाद्दशाहाद्वादशादपि ॥
एकविंशदिनैः शुद्धः सन्निपातोसुजीवति ❖

अर्थ- सन्निपात हुए पर तत्काल - तीन - पांच - सात - दश - और बारह - दिन में इक्कीस दिवसतक सन्निपात वाला रोगी शुद्ध होकर जीवे है ॥

त्रिदोषज्वरों की साधारणमर्या०

सप्तमी द्विगुणायावन्नवम्येकादशीतथा । ए षात्रिदोषमर्यादामोक्षायचवधायच १ पित्त कफानिलवृध्यादशदिवसद्वादशाहसप्ताहा त् ॥ हंतिविमुंचतिपुरुषंत्रिदोषजोधातुम लपाकात्

अर्थ- जबसें त्रिदोष प्रकट हो उस दिन सें लेकर ७ किंवा १४ और ९ किंवा १८ तथा ११ किंवा २२ दिन तक त्रिदोष ज्वरों की मर्यादा है या अवधि में ज्वर जाता रहै अथवा मृत्यु होय ॥ १ ॥ ॥ सात नौ और ग्यारह दिन में मर्य्यादा वाताधिक - पित्ताधिक- और कफाधिक सन्निपातों की क्रम सें जाननी- पित्त- कफ- और वात इनकी वृद्धी क्रम करके दश दिनकी - बारह दिनकी और सात दिन की है - इस मैं त्रिदोष जज्वर धातु पाक होने सैं मार डाले और मल पाक होने सैं रोगी रोग मुक्त होजाय ॥ २॥

सप्तमेदिवसेप्राप्तेदशमेद्वादशेपिवा ॥ ❖ ॥
पुनर्घोरतरोभूत्वा । प्रशमंयातिहंतिवाद्वति ॥

धातुपाकलक्षण

निद्राचलौजोरुचिवीर्यनाशो । हृद्धेदनागौर
वनाल्पचेष्टा । विष्टंभतायस्यकिलारतिःस्या
त्सधातुपाकोमुनिभिः प्रदिष्टः

अर्थ- निद्रा-बल-तेज-रुचि-वीर्य-इन्का नाश-हृदय में पीड़ा-देहभरी-हीनचेष्टा- अफरा- मनकानलगना-ये लक्षण- जिसके हों उसको धातु पाक मुनिश्वरों ने कहा है धातुपाक कहिये उत्तरोत्तररोग की वृद्धि और बल की हानि होयकर शुक्रादिधातुसहित मूत्रादिकों का जो पाक होय उसे धातु पाक कहते हैं ॥

मलपाकलक्षण

दोषप्रकृतिवैकृत्यंलघुताज्वरदेहयोः
इन्द्रियाणाञ्चवैमल्यंदोषाणांपाकलक्ष
णम्

अर्थ- दोषों का स्वभाव पलटजाय-ज्वरका हलका होना देह हलकी हो-इन्द्रीनका निर्मल होना ये (मलपाक) के लक्षण जानने-(धातुपाक) औरमलपाक होना केवल ईश्वर पर है इसमें दूसरा कोई हेतु नहीं है ॥

आगंतुकज्वर

अभिघाताभिचाराभ्यामभिषंगाभिशापतः।
आगंतुर्जायतेदोषैर्यथास्वंतंविभावयेत् ॥

अर्थ- तलबार-छुरादि-मुक्का-लकड़ी-इत्यादि शास्त्र आदिक लगने सें प्रगटज्वर को अभिघात कहते हैं- और बिपरीत मंत्रकेजपनेसें- लोहके ऋचा सें-मारणार्थ सर्षपादिक होम-अथवा कृत्यका प्रयोग करने सें उत्पन्न ज्वरको अभिचारज क

हते हैं- काम- शोक-भय-क्रोध-भूतादिकनके आवेशसैं उत्पन्नज्वर को अभिषंगजकहते हैं-ब्राह्मण-गुरु-वृद्ध-सिद्ध-इनके शाप देने सैं प्रगटज्वरको अभिशापज कहते हैं- ये चार प्रकार सें आगंतु जर उत्पन्न होय है- इस ज्वरके आरंभ सैं पूर्व कोई दोष का प्रकाश नहीं हो पीछैं जैसें दोषकुपित हों यतिनकोउन्हीं २ दोषों के लक्षण करके जाने जैसें (कामशोकभयाद्वायुः) अर्थात् काम शोक भय सैं वात कुपित होती है ॥

विषजन्यआगंतुकज्वर

श्यावास्यता बिषकृते दाहो ऽतीसार एवच
भक्तारुचिःपिपासाचतोदश्चसहमूर्च्छया ॥

अर्थ- अब आगंतु ज्वरके हेतुभेद करके लक्षणकहते हैं-स्थावर-जंगम विष भक्षण करनेसैं जो ज्वर होय- जिससे मुख श्याम वर्ण होय- और दाह तथा दस्त का होना- अन्नमें अरुचि- प्यास-सुई चुभनेकीसी पीड़ा- और मूर्छा ये लक्षण होते हैं ॥

औषधगंधजनितज्वर

औषधीगन्धजेमूर्च्छाशिरोरुग्वमथुःक्षवः

अर्थ- तीक्ष्ण औषधके सूंघने सें जो ज्वर होय तिसमें मूर्च्छा शिरमेंपीड़ा-वमन-छींक ये लक्षण होते हैं ॥

कामज्वरकेलक्षण

कामजेचित्तविभ्रंशस्तन्द्रा ऽलस्यमभोजनं
हृदये बेदनाचास्यगात्रंचपरिशुष्यति ॥

अर्थ- सुन्दर स्त्री के देखने सैं मनुष्यके मनमें घोर कामकी बाधा उत्पन्नि हो उससे प्रगट ज्वरके ये लक्षण हैं। चित्तकी अस्थिरता- तंद्रा- आलकस- भोजन में अरुचि- हृदय में पीड़ा- और शरीर सूख जाय ॥

अथभयशोकऔरकोपज्वर

भयात्प्रलापः शोकाच्चभवेकोपाच्चवेपथुः

अर्थ- भय सैं और शोक सें उत्पन्न ज्वर में-अनर्थवके-कोप से प्रगटज्वर में कंपहोय-÷शंका÷क्योंजोकम्पहोना बातध

अभिचारऔर अभिघातजज्वरकेल॰

अभिचाराभिघाताभ्यांमोहस्तृष्णा च जायते

अर्थ- अभिचार और अभिघात सें प्रगटज्वर में मोह-औ र-तृष्णा होय है

भूताभिषंगज्वरकेल॰

भूताभिषंगादुद्वेगोहास्यरोदनकंपनम्

अर्थ- भूतबाधासैंउत्पन्नज्वरमें चित्तमें उद्वेग हो-हसें-रोवे-और कम्पयेलक्षण होतेहैं ॥

कामशोकभयाद्वायुःक्रोधात्पित्तंत्रयोमलाः
भूताभिषंगात्कुप्यंतिभूतसामान्यलक्षणाः।

अर्थ- काम-शोक-औरभय-इनसैं बात कुपितहोता है-क्रोधसैं पित्तकुपित होता है-औरभूताभिषंगसैंतीनोंदोषकुपितहोते हैं-इससें औरभीलक्षण होते हैं अर्थात् उन्माद निदान में जिसजिसदेवग्रहों केलक्षण (हास्यरोदनकंपादिक) कहेहैं-वेलक्षण होते हैं ॥

बिषमज्वरकीसंप्राप्ति

दोषोऽल्पोऽहितसंभूतो ज्वरोत्सृष्टस्यवापुनः
धातुमन्यतमंप्राप्यकरोतिबिषमज्वरम् ÷।

अर्थ- जिसमनुष्यकेज्वर औषधादिकसेवनकरनेसैं शांतिभये पीछे और आरंभसैं दशोंसदिनबीतने पर तथा जीर्ण अबस्था

भये पर अपथ्यकरने सैं वातपित्तादिक दोष पुनः थोड़े प्रकुपित हो यरसरक्तादिधातुनमें से किसीधातुमें प्राप्तहोय और उनको दूषित कर विषम ज्वर कहिये तृतीय-चतुर्थादिक ज्वर उत्पन्नकरें ✣ वा शब्दकरके प्रथम सेही विषम ज्वर होय है ये सूचनाकरी ✣ यथा ✣ आरम्भाद्विषमोयस्तुइति ✣ अल्पशब्द सें ये दिखाया कि वहदोष बलहीन होने सैं कालांतरमें बलवानहोकरज्वर करे- और जोदोष बलवान है वोनित्यज्वर करे है- ✣ विषम ज्वरके लक्षण ✣ (भालुकीने) कहे हैं सो ऐसें ✣ अनियतकालमें शीतउष्णकर के विषमवेगज्वरहोय उसज्वरको विषमज्वर ऐसें कहते हैं (दूसरे लक्षण ऐसें कि) मुक्तानुबंधित्वं विषमत्वं ✣ अर्थात् जो ज्वर छोड़दे और फेर आजाय तिसको विषमज्वर ऐसें कहते हैं

धातुगतज्वरकेनाम

।संततः सततो ऽन्येद्युस्तृतीयकचतुर्थकौ
सततंरसरक्तस्थः सो ऽन्येद्युः पिशिताश्रितः
मेदोगतस्तृतीयेन्हि अस्थिमज्जागतः पुनः
कुर्य्याच्चातुर्थिकं घोरंसंतकंरोगशंकरम् ✣

अर्थ- संतत- सतत- अन्येद्यु (द्व्याहिक) तृतीयक (त्र्याहिक) जिसको तिजारी कहते हैं- औरचातुर्थक जिसको चौथियाकहते हैं- ऐसें पांचप्रकारके विषमज्वर हैं संतत शब्दकरके सतत औरसंततये दोनों जानने अर्थात् रसस्थदोष संततज्वरकरे है- और रक्तस्थदोष सततकज्वरकरे है यासें संतत औरसततये दोनों शब्द केवलसंज्ञावाचक हैं- सांतत्य वाचक नहीं हैं ऐसें जाने वेही दोष मांसगत अन्येद्युष्क अर्थात् द्व्याहिक (एकतरा) कोकरे है- औरमेदगतदोषतृतीयक (तिजारी) ज्वरकरे है और वेही दोष अस्थिमज्जामें प्राप्तभये दुःसह मृत्युकारक अनेकरोगों में

व्याप्त ऐसा चातुर्थिक ज्वर प्रगट करे है

संततज्वरकेलक्ष॰

सप्ताहंवादशाहंवाद्वादशाहमथापिवा । संत
त्याविसर्गीस्यात्संततःसोनिगद्यते ॥

अर्थ- सात दिन पर्यंत- किंवा दशदिन पर्यंत- किंवा बारह दिन पर्यंत- एकसा जो ज्वर रहै और उतरे नहीं तिसको संततज्वर कहते हैं- + सात- दश- बारह- ये जो कहे सो अनुक्रम करके वात- पित्त- कफ- इनके लक्षण से कहे हैं ये संतत ज्वर त्रिदोषज है- कारण इनका बारह पदार्थों का साथ होना है- ऐसें- वातादि दोष धातु के प्रमाण मूत्र और मल इनको एकही समय में ग्रस कर संततज्वर उत्पन्न करै हैं- बारह पदार्थ या प्रकार हैं वातादि- दोष ३ सप्तधातु ७ मूत्र १ और मल १ मिल कर बारह भये ॥

संततकादिकोंकेलक्ष॰

अहोरात्रेसततकोद्वौकालावनुवर्त्तते । अ
न्येद्युष्कस्त्वहोरात्रेमककालंप्रवर्त्तते । तृती
यकस्तृतीये ऽन्हि चतुर्थे ऽन्हिचतुर्थकः । के
चिद्भूताभिषंगोत्थंवदंतिविषमज्वरम् ॥ ॥

अर्थ- काल छः हैं १ पूर्वान्ह २ मध्यान्ह ३ अपरान्ह ४ प्रदोष ५ अर्द्धरात्रि ६ प्रत्यूष- पूर्वान्ह प्रदोष येकफके काल हैं- मध्यान्ह और अर्द्धरात्रिये पित्तके काल हैं- अपरान्ह और प्रत्यूष ये वात के काल हैं- संततकज्वर दिनरात में दो समय आता है ∴ ईशानदेव कहते हैं- कि दिनके दो वेला अथवा रात्रिके दो वेला अथवा दिनके एक वेला- और रात्रिके एक वेला- एक के दो वेला- असुक वेला में आवेगा ऐसें ज्वरके आवने का समय नहीं कहा है- (अन्येद्युष्कज्वर) अहोरात्रि में एक वेलामें आताहै ∴

(तृतीयकज्वर) जिसदिन आता है उससे तीसरे दिन फेर आता है ओर (चतुर्थक) चौथे दिन आता है+ और कोई आचारी इस विषमज्वर को भूताभिषंगोत्थ कहते हैं-ये मत (सुश्रुताचार्य) ही कामान्य है अर्थात् उसने विषमज्वर पर-वलिहोमादिक-भूतोचित और कषाय पानादिक दोषोचित ऐसी चिकित्सा कही है और विषमज्वर ये प्रायशः आगंतु का सम्बन्धी है-ये चरक ने देखकर कहा है॥

उत्कृष्टदोषभेदकरकेतृतीयक चतुर्थकोंकेदूसरेलक्षण

कफपित्तात्त्रिकग्राही पृष्ठाद्वातकफात्मनः।
वातपित्ताच्छिरोग्राही त्रिविधः स्यात्तृतीयकः। चातुर्थिकोदर्शयति प्रभावंद्विविधंज्वरः+
जंघाभ्यांश्लैष्मिकःपूर्वंशिरसोऽनिलसंभवः॥

अर्थ- तृतीयकज्वर कफ पित्त के जोरसें त्रिकस्थान (तीनहड्डी) में पीड़ा करे हैं-वात कफ के जोर सें पीठ में पीड़ा करे-वात पित्त के जोर से मस्तक में पीड़ा करे है-ऐसें (तृतीयकज्वर) तीनप्रकार का है+ त्रिकग्राही जो कहा इसका तात्पर्य ये है कि-त्रिक वातका स्थान है उस्के स्थान में कफ पित्त दूसरे के स्थान में पहुंचने सें निर्वल होजाते हैं यासें तीसरे दिन ज्वर करते हैं + यदि कफ पित्त स्वस्थान पर स्थित होय तो संतत ज्वर को करते हैं ये (जैज्जट का मत है) ऐसें ही मस्तक कफ का स्थान है- और पीठ पित्त कास्थान है इनमें दूसरे दोषों के पहुंचने सें दुर्बल होय करके (तृतीयकज्वर) करते हैं + शंका + यदि त्रिक बात का स्थान है तो फेर आप पित्त कफ का उस स्थान में गमन कैसें कहते हो+

१ त्रिक-कहिये कमर और जंघा के मध्य की तीन हड्डी

+ उक्तं + ये स्थान का नियम प्रकृतिस्थिति दोषों का कहा है कुपित दोषों का नहीं कहा है क्योंकि कुपित दोषों का सर्वत्र गमन होय है ये (सुश्रुत) का मत है + ऐसेंही दोषों को अन्यस्थानगतत्व होने सें तथा दोषों को निर्बलत्व होने सें चतुर्थिक ज्वरमें भी जानना + (चातुर्थक ज्वर ज्वर) दो प्रकार की शक्ति दिखाता है- सो ऐसें - कफाधिक जिसमें होय वो प्रथम जंघानमें व्याप्त होकर पश्चात् सर्व देह में व्याप्त होय- और वाताधिक्य जिसमें होय वो पहिले मस्तक में व्याप्त होकर पीछे सर्व देहमें व्याप्त होता है- ये पांच प्रकार के विषम ज्वर प्रायशः सन्निपात सें प्रगट होते है ये (चरक का मत है) हारीत ऋषि कहते हैं कि (चातुर्थक) ज्वरमें पित्तप्रधान है- इन विषम ज्वरों की उत्पत्तिक्रम (वृद्ध सुश्रुतमें) इस प्रकार लिखी है- कफ के पांच स्थान हैं उनमें जिस २ स्थानमें दोष प्राप्त होते हैं वहां उसी २ विषम ज्वर को प्रगट करते हैं + उन पांच स्थानों के नाम - आमाशय १ हृदय २ कंठ ३ शिर ४ औ रसंधि- तहां आमाशय में दोष पहुंचने सें संततक ज्वर दो समय आता है- हृदयस्थित दोष आमाशय में आने सें एकतरा एक समय आता है + कंठमें स्थित दोष एकदिन में हृदय में आता है- दूसरे दिन आमाशय में प्राप्त हो ज्वर प्रगट करे उसे तृतीयक (तिजारी) कहते हैं - शिरमें स्थित जो दोष सो क्रम सें- कंठ- हृदय- और आमाशय में तीन दिनमें प्राप्त हो चतुर्थ दिवस (चातुर्थक) ज्वर प्रगट करते हैं- और उन दोषों का उलटकर पुनः स्वस्थान में पहुंचना उसी दिन होता है- क्योंकि दोषों को वेगवान होने सें- और दोष संधिस्थित होते हैं तब + (प्रलेपक ज्वर) प्रगट करते हैं- ये विषमज्वर के समान ज्वर है

सुश्रुतं- कुपितानां हि दोषाणां शरीरे परिधावतां । यत्र संगः स्ववैगुण्यात्व्याधिस्तत्रोपजायते २

कारण इसका ये है- कि संधि आमाशय में स्थित है- और -(सुश्रुतने) कहा हैकि,+ प्रलेपकयह बिषम ज्वर है ये धातु शोष रोगीन् कों क्लेश का देने वाला है =

विषमज्वरकेभेद

विषमज्वर एवान्यश्चातुर्थिक विपर्ययः॥
समध्येज्वरयत्यन्ही आद्यंतेच विमुंचति।

अर्थ- चतुर्थक ज्वरका उलटा ये दूसरा बिषमज्वर है ये प्रथम और अंतकादिन छोड़कर बीच के दो दिन आता है जैसें ये चातुर्थिकका विपर्यय है तैसें हीं तृतीयक आदिकाभी विपर्ययहोताहै-उनको कहते हैं- जैसें बीच के एकु दिन ज्वर आवै और आदि-अन्तके दिन नहिं आवै- ये तृतीयकका बिपरीत- और जो एकका लछोड़कर सब दिन रात्रि ज्वर रहै वो अन्येद्युष्क-(इकतरेका) विपरीत जानना- इनके बिषय मेंग्रन्थ कारों के भिन्न भिन्न मत हैं- विस्तारके भय सें इस जगे नहीं लिखे हैं॥

वातबलासकज्वर

नित्यंमन्दज्वरोरूक्षःशूनकस्तेनसीदति।स्तब्धांगःश्लेष्मभूयिष्ठोनरोवातवलासकी

अर्थ- वातबलासक नामकज्वर जिसमेंनुष्यके हो वो उस ज्वर करके सोथ युक्त अर्थात् सूजन हो और मन्दज्वरसदैव बनारहै- देह रूखीहो- अंगजिकड़जाय-कफविशेषहोय ये ज्वरबात और कफ सें होता है इसको वात बलासक ज्वरकहते है॥

प्रलेपकज्वर

प्रलेपकस्त्वविषमः प्रायः क्लेशायशोषिणां। अन्येरात्रिज्वरादयोऽपिविषमज्वराबोद्धव्या (यथोक्तं) समौवातकफौयस्य क्षीणपित्तस्यदेहिनः रात्रौप्रायोज्वरस्तस्यदिवाहीनकफस्यतु २

प्रलिंपन्निवगात्राणिघर्म्मेणगौरवेणच।
मन्दज्वरविलेपीचसशीतःस्यात्प्रलेपकः॥

अर्थ- जिसज्वरमें पसीना सें तथा सूर्य्य की घाम से अथवा देहके गौरवपने सें मानोंदेहको लिप्तकरदिया सा मालूमहो इसीहेतुसें मन्द ज्वर हो-शीतलगे-येज्वर कफ पित्त सें प्रगटहोताहै। और राज यक्ष्मारोगमें ये होय हैं- कोई इस्को त्रिदोष जनित कहते हैं इसको प्रलेपकज्वर कहते हैं॥

विषमज्वरविशेषभेद

विदग्धेऽन्नरसेदेहेश्लेष्मपित्तेव्यवस्थिते।ते
नार्द्धेशीतलंदेहमर्धेमुष्णंप्रजायते॥

अर्थ- अन्नकारसदुष्टहोनेसें औरदेहमेंकफपित्तदुष्टहोकरस्थितहोनेसें-अर्द्धनारीश्वररूप+ अथवा नरसिंहरूप- अर्धांग ज्वर प्रगटकरे है + अर्थात् अर्धदेहकफ सें शीतल और अर्धदेह पित्त सें गरम होता है॥

कायेदुष्टंयदापित्तंश्लेष्माचान्तेव्यवस्थितः
तेनोष्णत्वंशरीरस्यशीतत्वंहस्तपादयोः ÷

अर्थ- जिस मनुष्य के कोठेमें पित्त दुष्ट होय और कफ हाथ-पैर में दुष्ट होय- कर स्थित होय तिसकरके सबदेह उष्ण रहै और हाथ पग- शीतल रहैं॥

इनकाविपरीतद्वितीयज्वर

कायश्लेष्मायदादुष्टः पित्तंचान्तेव्यवस्थित-
म।शीतत्वंतेनगात्राणामुष्णत्वंहस्तपादयोः॥

अर्थ- जिससमय कोठेमेंकफ दुष्ट हो और पित्तहाथ पैरमें दुष्टहोकर रहै- तब शरीर शीतल हो- और हाथपैर उष्णहोंय॥

शीतपूर्वज्वरकेलक्षण

त्वकस्थौ श्लेष्मानिलौ शीतमादौजनयतोज्वरं ।
तयोः प्रशांतयोः पित्तमन्तेदाहंकरोतिच ❖

अर्थ– कफ औरबातयेदुष्ट होकर त्वचा में प्राप्तहो अर्थात् रस धातू को आश्रय कर प्रथम शीतज्वर उत्पन्न करते हैं- और जब इनकावेग शांत होय तब पिछाड़ी पित्त दाह करे है ॥

दाहपूर्वज्वरकेलक्ष॰

करोत्यादौतथापित्तंत्वक्स्थंदाहमतीवच। त
स्मिन्प्रशांतेत्वितरौकुरुतःशीतमंततः॥ द्वावे
तौदाहशीतादी ज्वरौ संसर्गजौस्मृतौ। दाहपू-
र्वस्तयोःकष्टः सुख साध्यतमोपरः॥

अर्थ– तैसें हो पहिले पित्तरस गतहोयकर अत्यंत दाहकरैं हैं पीछे उस्का वेग शांतिभयेपर बातकफये शीत करैं हैं ॥ दाहपूर्बक और शीत पूर्बक ये दोनों ज्वर संसर्ग अर्थात् त्रिदोषोंके संबंध सें होते हैं ऐसें ऋषियोंनेकह्या है- जिनमें दाह पूर्बक ज्वर दुःख प्रद औरकच्छ्रसाध्य है और शीत पूर्बज्वर सुख साध्य है ॥

सप्तधातुगतज्वरोंकेलक्षण

रसगतज्वरकेल॰

गुरुताहृदयोत्क्लेशःसदनंछर्द्यरोचकौ। रस
स्थितुज्वरेलिंगंदैन्यंचास्योपजायते॥ ॥ ❖ ॥

अर्थ– रसधातु में स्थितज्वर होय तौ देहभारी- दोषोंकौ हृद-य में स्थित होने सें उपस्थित वमनसौ मालूम हो- ग्लानि - ओकारी अन्न में अरुचि- और दैन्य कहिये मनोंमेंखेद- ये चिन्ह होते हैं ॥

रक्तगतज्वरकेलक्ष॰

रक्तनिष्ठीवनं दाहोमोहश्छर्दनविभ्रमौ। प्र
लापःपिडकातृष्णारक्तप्राप्तेज्वरेनृणाम्

अर्थ- रुधिर का गिरना- दाह- मोह- बमन- भ्रम- अनर्थबोले देह में फुंसी- प्यास - ये लक्षण रक्तगतज्वर के होनेसैं होते हैं ॥

मांसगतज्वरकेलक्ष·

पिंडिकोद्वेष्टनंतृष्णा सृष्टमूत्रपुरीषता ॥ उ
ष्मांतर्दाहविक्षेपौग्लानिःस्यान्मांसगेज्वरे । ÷ ।

अर्थ- जानुकेनीचे मांसका पिंड हो- तथा दंड आदिके लगने कीसी पीड़ा- प्यास- मलमूत्र- का- निकलना- गरमी- अंतर्दाह- हाथ- पैर- का इधर उधर पटकना- और ग्लानि- येलक्षण जब मांस में ज्वर पहुंच जाय है तब होते हैं ॥

मेदोगतज्वरकेलक्षण

भृशंस्वेदस्तृषामूर्च्छाप्रलापश्छर्दिरेवच ॥
दौर्गन्ध्यारोचकौग्लानिर्मेदस्थेचासहिष्णुता

अर्थ- अत्यंतपसीनेका आवना- प्यास- मूर्च्छा- प्रलाप- ब- मन- देहमेंदुर्गंध- अन्नमें अरुचि- ग्लानि- और बेदनानसहीजाय- यह लक्षण मेदगतज्वर में होते हैं ॥

अस्थिगतज्वरकेलक्ष·

मेदोऽस्थ्नांकूजनंश्वासो विरेकश्छर्दिरेवच
विक्षेपणंचगात्राणामेतदस्थिगतेज्वरे । ÷ ।

अर्थ- हड़फूटनी- तथा हाडों का गूंजना- श्वास- दस्तका होना- बमन- हाथ- पैरका चलना- ये अस्थिगत ज्वरके लक्षण हैं ॥

मज्जागतज्वरकेलक्ष·

तमःप्रवेशनंहिक्काकासःशैत्यंवमिस्तथा ॥
अन्तर्दाहोमहाश्वासोमर्मछेदश्च मज्जगे ÷

अर्थ- अंधेरा आना- हिचकी- खांसी- शीतलगे- बमन- अं तरदाह- महाश्वास- अर्थात् जो श्वास के निदान में कहेंगे और-

मर्म २ में पीड़ा ये मर्म शब्द इस जगह हृदय बाचक है अर्थात् हृदय में पीड़ा होंये मज्जागत ज्वर के लक्षण है ॥

शुक्रगतज्वरकेलक्ष॰

मरणं प्राप्नुयात्तत्र शुक्रस्थानगतेज्वरे ॥ शे
फसः स्तब्धतामोक्षः शुक्रस्यच विशेषतः ॥

अर्थ- इसादिधातु गतज्वरों में शुक्रस्थान में ज्वर पहुंचनेसैं रोगी का मरण होय- इसज्वरमें- लिंगका जकड़ जाना- और शुक्र का विशेष स्राव होना- और (सुश्रुता) दिक आचारी कहते हैं कि रक्तादि पदार्थ का थोड़ा २ स्राव हो ॥

प्राकृतऔरवैकृतज्वरकेल॰

वर्षाशरद्वसंतेषुवाताद्यैः प्राकृतः क्रमात् ॥
वैकृतोऽन्यः सुदुःसाध्यः प्राकृतश्चानिलो
द्भवः

अर्थ- वर्षाऋतु- शरदऋतु- और वसंतऋतु- इनकेमध्य में वातादिक के क्रम सैं जो ज्वर होय वो (प्राकृत) ज्वर कहाता है- जैसे वर्षा काल में बातज्वर- शरत्कालमें- पित्तज्वर- और बसंत काल में कफ ज्वर- इस से विपरीत जो ज्वर होय उससैं (वैकृतज्वर) कहते हैं जैसैं वर्षाकालमें पैत्तिक- शरदऋतुमें श्लैष्मिक- और वसंतऋतुमें वातिक- ये वैकृत ज्वर दुःसाध्य है- अर्थात् प्राकृतज्वर सुखसाध्य है- और बात जन्य प्राकृत ज्वर भी दुःसाध्य है और रोगों में प्राकृतत्व दुःसाध्य है ज्वर में व्याधिस्वभावकरके सुखसाध्य है ॥

प्राकृतज्वरोंकेचिकित्साकेनिमित उत्पत्तिक्रमकहते॰

यदुक्तं- प्राकृतः सुखसाध्यस्तु वसंत शारदुद्भवः

वर्षासुमारुतोदुष्टः पित्तश्लेष्मान्वितोज्वरम् ।
कुर्य्याच्चपित्तंशरदितस्यचानुवलःकफः ॥ त
त्प्रकृत्याविसर्गाच्चतत्रनानशनाद्भयम् । कफो
वसन्तेतमपिवातपित्तंभवेदनु ॥ + ॥

अर्थ- ग्रीष्मऋतु में संचितभयोवायुवर्षाकालमें कुपित होकर पित्तकफ युक्त होकर ज्वरको प्रगट करे है - तैसें हीवर्षाकाल में संचित भया पित्त शरद ऋतु में दुष्ट होकर ज्वरको उत्पन्न करे है तिसको कफको अनुबंध होय है + तिस ज्वर में कफ पित्तके स्वभाव करके और विसर्ग * काल करके लंघनकरने सें भय नहीं होय + तैसेंही हेमंतकाल में संचितभया कफ वसंत काल में ज्वर उत्पन्न करे है तिसके पिछाड़ी वातपित्त सहायक होते हैं ॥

कालेयथास्वंसर्वेषांप्रवृत्तिर्वृद्धिरेववा । नि
दानोक्तानुपशयोविपरीतोपशयः ॥

अर्थ- वातादिकोंका आप अपनेकाल में उत्पत्ति और वृद्धि होय है + जैसें काल ये दोष विशेष जानने का लक्षण है + तैसें उपशय और अनुपशयभी रोग जानने का कारण है । सो या प्रकार जानना- निदानत्व करके जे आहार विहार कहे हैं उन्के

अनुवलंयथा + स्वतंत्रस्यकस्यचिद्राज्ञो गजरथ तुरग पुरुषादिवलवतो वैरिभिः सह युध्यमानस्य पश्चादन्य वलंतच्छक्ते र नुवलो वृंहणार्थमागच्छति एवं स्वतंत्रस्य पित्तस्यज्वरं कुर्वतो वलोपवृंहणं शारदिकफः करोतितयोः पित्तश्लेष्मणोः प्रकृत्या स्वभावेन तत्कृतयोर्ज्वरयोरनशनाल्लंघनाद्भयं नभवती ॥ ॥ * ॥ ॥ वर्षा शरद और हेमंत ये विसर्ग काल हैं- इसमें चन्द्रमा का वल रहै है यासें प्राणों का वल बढे है + और वसंत- और शिशिर- ग्रीष्म ये (आदान) काल है इसमें सूर्य्य का वल अधिक होय है इसी से प्राणों का वल क्षीण होय है ॥

सेवन करने को अनुपशय कहिये दुःख उत्पत्ति होय है और दोषोंके विपरीत जे आहार बिहार तिन करके उपशायिता कहियेसुखकी उत्पत्ति होय है ॥

अंतर्दाहो ऽधिकात्तृष्णा प्रलापः श्वसनंभ्रमः।
संध्यस्थिशूलमस्वेदोदोषवर्चो विनिग्रहः॥ ॥
अंतर्वेगस्यलिंगानिज्वरस्यैतानिलक्षयेत्। सं
तापोऽभ्यधिकोवाह्यस्तृष्णादीनांचमार्दवम्॥ व
हिर्वेगस्यलिंगानिसुखसाध्यत्वमुच्यते

अर्थ- पिछाड़ीजे ज्वरकहे हैं तिनमें सम्प्राप्ति केभेद से कोई एक ज्वर अंतर्वेग होय है और कोई वहिर्वेग होय है तिनदोनोंके लक्षण कहते हैं + अंतर्दाह- अतितृषा - बड़बड़ाना - श्वास- भ्रम- संधि और हाड़ इनमें पीड़ा - पसीना न आवे- वायु और मलका बाहर ननिकलना ये अंतर्वेग ज्वरके लक्षण जानने ॥
शरीर के बाहर संताप अधिक होय- तृष्णादिक लक्षण थोड़े होंय- ये बहिर्वेग ज्वरके लक्षण ये ज्वर सुख साध्य है- इसज्वरके सुख साध्य कहने सें अंतर्वेग ज्वर कृच्छ्र साध्य और असाध्य है ये सूचना करी -

लालाप्रसेक हृल्लासहृदयाशुध्यरोचकाः।
तंद्रालस्याविपाकास्य वैरस्यंगुरुगात्रता॥क्षु
न्नाशोबहुमूत्रत्वंस्तब्धताबलवान्ज्वरः। आ
मज्वरस्यलिंगानि नदद्यात्तत्रभेषजम्॥भेष-
जंह्यामदोषस्यभूयोजनयतिज्वरम्। शोधनं
शमनीयञ्चकरोतिविषमज्वरम्

अर्थ- चिकित्साकरने केनिमित्त आम पच्यमान- औरनिराम ज्वरके लक्षण कहते हैं- लारका गिरना- खाली ओकारीकाआ

ना- हृदय में जड़त्व- अरुचि- तन्द्रा- आलकस- अन्नका परिपाक न होना- मुख का स्वाद जाता रहै- देहभारी- भूखकानाश- वारंवार मूतना- देहका जकड़ना ना- देह में बलबान् ज्वर हो- ये अपक्व ज्वर के लक्षण जानने इस ज्वर में औषधि बैद्य न देय- अपक्व ज्वर में औषधिदेनेसे ज्वर की वृद्धि होय है ✣ और शोधन तथा शमन औषध देने सैं विषम ज्वर को करे है ॥

ज्वरकेदशउपद्रव

श्वासोमूर्च्छाऽरुचिस्तृष्णाछर्द्यतीसारविड्ग्रहाः
हिक्काकासौऽगदाहश्चज्वरस्योपद्रवादश

अर्थ- (भावप्रकाश) के मत से ज्वर के दश उपद्रवों को कहते हैं श्वास- मूर्च्छा- अरुचि- प्यास- वमन- अतिसार- मलकारुकना- हिचकी- खांसी- देह में दाह- ये दश ज्वर के उपद्रव हैं ॥

पच्यमानज्वरकेलक्ष-

ज्वरबेगोऽधिकात्तर्षाप्रलापःश्वसनंभ्रमः ॥
मलप्रवृत्तिरुत्क्लेशः पच्यमानस्यलक्षणम् ✣

अर्थ- ज्वर का बेग अधिक- प्यास- प्रलाप- श्वास- भ्रम- मलकी प्रवृत्ति- उपस्थित वमन सी मालूम होय- ये पच्यमानज्वर के लक्षण-

पक्वज्वरकिंवानिरामज्वरके-

क्षुत्क्षामतालघुत्वंचगात्राणांज्वरमार्दवम् ॥
दोषप्रवृत्तिरुत्साहोनिरामज्वरलक्षणम् ॥ ✣

अर्थ- भूख का लगाना- देहका कृश होना- अंगों का हलका पना- मन्दज्वर का आना- अधोवायु की प्रवृत्ति होना- मनमें उत्साह का होना- ये निरामज्वर के लक्षण जानने ॥

ग्रन्थान्तरसैंजीर्णज्वरकेल-

त्रिसप्ताहेव्यतीतेषुज्वरोयस्तनुतांगतः । प्ली

ह्यग्निसादंकुरुतेसजीर्णज्वरउच्यते ॥

अर्थ- २१ दिवस व्यतीत होने पर जो ज्वर बारीक हो देहमें रहै तिस्से प्लीहा रोग अर्थात् तापतिल्ली रोग और मंदाग्नि होय उसको जीर्ण ज्वर कहते है

साध्यज्वरकेलक्षण

वलवत्स्वल्पदोषेषु ज्वरः साध्यो ऽनुपद्रवः

अर्थ- वलबान् पुरुषके थोड़े दोष युक्त और श्वास आदि उपद्रव करके रहित जो ज्वर हो वो साध्य जानना ॥

असाध्यज्वरकेलक्ष०

हेतुभिर्बहुभिर्जातोबलिभिर्बहुलक्षणः । ज्वरः

प्राणान्तकृद्यश्चाशीघ्रमिंद्रियनाशनः

अर्थ- जोज्वर बहुत प्रवलकारणों सें उत्पन्न भया हो और जिसमें सम्पूर्ण लक्षण मिलते हों वो ज्वर प्राणोंका हरण करनेवाला जानना और जो ज्वर प्रगट होते ही चिकित्सा करते २ इन्द्रिन की शक्ति नष्ट करदे (अर्थात्- अंधा- बहिरा- इत्यादि) वोभी ज्वर असाध्य जानना ॥

ज्वरः क्षीणस्यशूनस्यगंभीरोदैर्घ्यरात्रिकः ॥

असाध्योबलवान्यश्चकेशसीमंतकृज्ज्वरः ॥

अर्थ- ज्वर सें जो पुरुष क्षीण पड़गया हो अथवा सूजन जिसके देहमें आय गई हो वो ज्वर असाध्य है । और जिस्के ज्वर धातुके भीतर हो अथवा अंतर्वेगज्वर- अथवा जिसमें वातादि दोषोंका निश्चय न होसके- और वहुत दिन तक रहने वाला ज्वर असाध्य होय है और जो ज्वर वलवान् हो तथा जिसमें रोगी अपने हाथ सें केश (वालों) को सीमंत आदि रचना करे वो ज्वर असाध्य है ॥

गंभीरज्वरकेलक्षण

गंभीर रक्तज्वरोज्ञेयोह्यंतर्दाहेनतृणया ।आ
नद्धत्वेनचात्यर्थंश्वासकासोद्गमेनच ॥

अर्थ- अंतर्दाह।-प्यास- दोष-अर्थात् ब्ढदोषके बढ़नेसैं (म
ल).के रुकने सैं तथा श्वास-खांसी के उत्पन्न होने सैं (गंभीर)
ज्वर जानना ॥

दूसरे असाध्यज्वरके लक्ष·

आरंभाद्विषमोयस्ययस्यवादैर्घ्यरात्रिकः ।क्षी
णस्यचातिरूक्षस्यगंभीरोहंतिमानवं ॥ विसं-
ज्ञस्ताम्यतेयस्तु शेतेनिपतितोपिवा । शीतार्दि
तोंऽतरुष्णश्चज्वरेणम्रियतेनरः ॥

अर्थ- जो ज्वर प्रगट होतेही विषम पड़जाय· औरजो ज्वर बहु
तदिन से आया करे- और क्षीण-तथा अतिरूक्षदेहवाले पुरुषके
जो गम्भीर ज्वर होय वो मृत्यु कारक होय है+ और जोबेहोस
होकर मोहको प्राप्त हो तथा गिरकर जिस्से उठान जाय सो याही
करे· अथवा बाहरो शीतलगे और देहके भीतर दाह हो ऐसें
ज्वरवाला पुरुष मर जाय ॥

और असाध्यलक्षण

योहृष्टरोमारक्ताक्षोहृदिसंघातशूलवान् ।व
क्त्रेणचैवोच्छ्वसितितंज्वरोहंतिमानवम् ॥ हि
क्काश्वासतृषायुक्तंमूढंविभ्रांतलोचनम् ।संत
तोच्छ्वासिनंक्षीणंनरंक्षपयतिज्वरः ॥ हतप्रभे
न्द्रियंक्षाममरोचकनिपीडितम् । गंभीरती-
क्ष्णवेगार्तंज्वरितंपरिवर्जयेत् ॥

अर्थ- जिसके देहमें रोमांचखडे रहैं- लालनेत्र हों- हृदय
मेंगांठहोनेतैं जैसीपीड़ाहोतैसाहो + और संघात-इसपदकायहअ

थ करते हैं कि नाना प्रकार का शूल हो + मुखके द्वारा श्वास ले वो ज्वर रोगी मनुष्य को मार डाले ॥

हिचकी · श्वास · प्यास · इन करके व्याप्त हो · मोहयुक्त हो · चलायमान नेत्र हों · निरंतर श्वासलेय · ऐसे लक्षण युक्त मनुष्य को ज्वर मार डालता है ॥

इन्द्रियों की शक्ति नष्ट होने सें · और शरीर की कांति निस्तेज होने सें अथवा इन्द्री (नाक · कान · नेत्र) ये नष्ट होजांय · कृशदेह होजाय + अरुचि सें अत्यंत पीड़ित हो + (अरोचकनिपीडितं) इस जगह (जेज्जट) ने दो पाठ लिखे हैं एकतौ (दुरात्मानमुपद्रुतं) यह इसका अर्थ ये है कि दुष्ट अंतः करण होवे · और उपद्रव युक्त होवे · दूसरा पाठान्तर ये है कि (दुरात्मभिरुपद्रुतं) अर्थात् राक्षसादि करके युक्त हो + तथा अति घोर अंतर्वेग करके परिपीडित हो ऐसें ज्वरवान् पुरुषको वैद्य छोड़ देय · । इसी जगह कोई टीका कारों ने जो असाध्य लक्षण लिखे हैं सो (आतंकदर्पण) तथा (मधुकोश) टीकासे लिखे हैं वोसव (वाग्भट) और (हारीत) के काल ज्ञान देखने सें निश्चय हो जांयगे सोदेखलेवे इसजगह हमग्रंथ बढ़नेके भयसे नहीं लिखते

ज्वरमुक्तीके पूर्वरूप

दाहः स्वेदो भ्रमस्तृष्णा कंपो विड्भेदसंज्ञिता।
कूजनं चातिवैगंध्यमाकृतिर्ज्वरमोक्षणे

अर्थ- दाह · पसीना · भ्रम · प्यास · कंप · मल का पतला होना · संज्ञा का नाश होना · रंजे · देह में अत्यंत दुर्गंध आवे ये लक्षण ज्वर छोड़ता है तब होते हैं ÷ शंका ÷ क्यौं जो दोष (बात पित्त · कफ) नाशके बिना रोग की निवृत्ति होय नहीं और जब दोष क्षीण होगये तो उक्त दाहादि लक्षण कैसे करते हैं ÷

उत्तर ✣ इसका कारण येहै कि - कोई एक वस्तु का ऐसा स्वभाव है कि क्षीण होने के समय में अपनी शक्ति को दिखाती है - जैसे - दीपक में तेल नहीं रहै और बुझने को होयहै तब एक संग पहिली अपेक्षा अत्यंत बलने लगे है और थोड़ी देर बल कर शांत होजाय है - ऐसें हीं जब दोष शांत होने को होते हैं तब अपनी शक्ति - दाहादिको दिखाते हैं ✣ अथवा ✣ दूसरा उत्तर ये है कि जैसें बंदर वृक्ष की डाली को हिलायकर दूसरे स्थान पर चला जाता है - परंतु वो वृक्ष की डाली वहुत देर पर्य्यंतहिला करती है इसी प्रकार ज्वर गये पर भी उसके -- - असर सें दाहादिक रहते है - ये दाह सें आदिलें लक्षण त्रिदोष ज्वर के शांति होने के समय होते हैं - औरसबज्वरोंमें नहीं होते और ज्वर में केवल पसीना ही आते हैं ये (भालुकी) आचारी का मत है ✣ यथा

त्रिदोषजेज्वरेह्येतदन्तवेगेचधातुजे। लक्षणंमोक्षकालस्यादन्यस्मिन्स्वेददर्शनं

ज्वरमुक्तिकेलक्षण

स्वेदोलघुत्वंशिरसःकंडूपाकोमुखस्यच॥
क्षवथुश्चान्नकांक्षाचज्वरमुक्तस्यलक्षणम्॥

अर्थ - पसीना आवे - देह हलका हो - मस्तक में खुजली चले मुख का पाक अर्थात् होठों में पपड़ी परिजाय - छींक आवैं - भोजन करने की इच्छा होय - ये लक्षण ज्वरमुक्त के हैं॥

इतिश्रीपण्डितदत्तराममाथुरनिर्मितमाधवार्थदीपिकामाथुरीभाषाटीकायांज्वरनिदानंसमाप्तम्

इङ्गेजीमतानुसारज्वर निदान

ज्वरको इङ्गेजी में (fever) फ़ीवरकहतेहैं उसकीउत्पत्ति

१सरदी

जिस समय सरदी पड़े उस समय मनुष्य के सब देह रोमां च बद्ध हो जांय तब पसीनेका निकलना रुकजाय-इस हेतुसें देह का जो औगुन सो देहके बाहर नहीं निकले इसी से देह हलका नहीं होय और वोही देह का अवगुन ज्वर रोग को प्रगट करता है-इस ज्वरको सामान्यज्वर कहते हैं । अथवा देह अति गरमी से पीड़ित होय उस समय किसी कारण से शीतल करे तो सरदी होती है- अथवा किसी अति परिश्रम करने से मनुष्य के देह सें पसीने निकलें उस समय हवा में बैठें - अथवा हवा में सयन करने सें सरदी होती है- अथवा रात में मैदा न में सोने सें अथवा रात में शीतल पवन के लगने सें पसीना नहीं निकलें इस हेतु सें सरदी होय- अथवा गीला कपड़ा ओढ़कर बैठने सें वा सोने सें सरदी होय है- इन कारणों सें सरदी होय वो सरदी अनेक प्रकार के ज्वरों की उत्पत्ति करै है ॥

२मन्दवायु

जिस समय पृथ्वी में वर्षा का अथवा और प्रकार जल सूखे उसमें घास पत्ता सड़जावे तब इनसें मन्दवायु अथवा वाष्प उत्पन्न होय तिसके द्वारा अनेक प्रकार के ज्वर प्रगट होंय- विशेष करके आमज्वरकी अधिक उत्पत्ति होय इसी से जलाशयस्थानतलाव

आदि और झील - खाल - इनस्थानों में मन्दवायू अधिक होय है - इस्से नाना प्रकार के ज्वर प्रगट होय - ये हवा सोता के जल सें उत्पन्न नहिं होय है - किंतु जिस जगह थोड़ा जल होय जैसें तलैया आदि उस्में घामलगाने सें जल पक्क होकर मन्द वायु को अधिक उत्पन्न करे है - यह वायू दिन में सूर्य की किरण सें वहुत हलकी होकर ऊपर को उठे इसी से यह बड़ा नुकसान करने वाली होय है - और संध्या तथा रात्रि में यह वायू शीतल होने सें नीचे उतर सर्व साधारण मनुष्यों को नुकसान करने वाली होय है और हवाओं से यह हवा अधिक भारी होय है - घरके किवार लगाने से यह हवा घर के भीतर कम जाती है - इसी सें घर के किवाड़ देकर (मसैरी) जिसको पूरव के लोग बहुधा रखते हैं यह कपड़े की वनी हुई होती है इसमें सोना चाहिये ॥

गरिष्ठभोजन

जो मनुष्य भारी द्रव्य भोजन करे तव उस के वो पचे नहीं और पेट में पीड़ा करे उस पीड़ा के होने सें ज्वर उत्पन्न होय विशेष करके यह ज्वर बालकों के होय है ॥

अनेकप्रकारकेज्वरोंकेलक्ष·

नाड़ी और श्वास जलदी चलें - मस्तक में पीड़ा होय - त्वचा शुष्क और गरम होय - प्रलाप होय - अथवान होय - पेसाब लाल उतरे - जीभ मलीन होय - शरीर में सदा ज्वर रहा करै - कभी कम होजाय कभी ज्यादा होजाय ॥

कुमकुमज्वरकेलक्षण

श्वास लेते समय मंदमंद पीड़ा होय - खांसी होय - कफ कुछनीले रंग का गिरे - ज्वर अल्प होय - बक्षस्थल में पीड़ा होय - श्वास लेते समय - श्वास जलदी चलै - नाड़ी कुछ २ थोड़ी और शीघ्र

चले- त्वचा सदैव थोड़ी गरम रहै- जिस समय रोगकी वृद्धि होय- श्वास के चलने सें पीड़ा होय- उस्से अधिक पीड़ा होय- इस रोग के आरम्भ में कफ नहीं निकले- किंतु दो तीन दिन के बाद कफ स्वेत निकल पड़े- उस रोगी का हलदीके समान पीला वर्ण होय- कभी २ जलके सदृश वर्ण होय- इस रोगकी विशेषता होनेसे कफ पतला होजाय । यह रोग अत्यंत बढ़कर पचने को होय तब कफ का शाक के समान रंग हो- अथवा काले रंग का और दुर्गंध युक्त होय - बहुत सरदी पड़ने सें इसकीउत्पत्ति होती है ॥

पक्लवाकलेजाज्वरकेल.

दहने पाँसू में पीड़ा होय- शरीर में थोड़ा ज्वर होय- तथा आहार में अरुचि होय- जीभमलिन- नेत्रपीलेहोय- मलमट्टीकेरंगका अथवा सपेद तथा काला होय औरकठिन- पेशावलाल-

इति

प्रसंगवशात्ज्वरमुक्तल.

ग्रन्थांतरे

देहोलघुर्व्यपगतक्लमभोहतापः।पाकोमुखे करणसौष्ठवमव्यथत्वम् ॥ स्वेदःक्षवःप्रकृतियोगिमनोऽन्नलिप्सा।कंडूश्चमूर्द्धिविगतज्वरलक्षणानि ॥ २॥

इतिज्वरनिदानम्

बातवलास-लक्ष-ग्रन्थान्तरे + बलासोवायुनायुक्तःशीतादिंषडहे ज्वरं॥ जनयेन्नयनश्चावंहत्यीड़ामधुरास्यतां॥१॥

अथ अतिसारनिदानम्

भाषा- पित्तज्वरमें अतिसार होय है तथा ज्वर को और अतिसार को अन्योन्य उपद्रव होने से ज्वर के अनन्तर अतिसाररोग - कोकहते हैं +

गुर्वतिस्निग्धतीक्ष्णोष्णद्रवस्थूलातिशीतलैः विरुद्धाध्यशनाजीर्णैर्विषमैश्चातिभोजनैः ॥ स्नेहाद्यैरतियुक्तैश्चमिथ्यायुक्तैर्विषैर्भयैः। शोकदुष्टाम्बुमद्यातिपानैःसात्म्यर्तुपर्ययैः ॥जला भिरमणैर्वेगविघातैःकृमिदोषतः। नृणांभव त्यतीसारोलक्षणंतस्यवक्ष्यते

अर्थ- प्रमाण सें अधिक भोजन करे- अथवा स्वभावसें जड़ पदार्थ (जैसे उड़द आदि) के खाने सें- अति चिकनी- अति- तीखी- अति गरम- अत्यंत पतली- और अत्यंत स्थूल- (अर्थात् जिसके अवयव कठिन हों) जैसे + लड्डू-घेवर-पूआ- इत्यादि अत्यंत शीतल- (स्पर्शसें-तथावीर्यसे-) विरुद्ध + जैसे + खीर- मत्स्य- इत्यादिक + अध्यसन कहिये (पूर्वदिनकाभोजन परिपाक नहीं होय और उसपर भोजन करना) विना पका अन्न- नित्य भोजन के समय को त्याग कर और समय थोड़ा वा बहुत भोजन करने से- स्नेह स्वेद आदि पंचकर्म के अत्यंत योग केकरने सें(वा) थोड़े योग करने सें- स्थावरादिक दूषी विष के खानेसें-भयसें-सोचकरनेसें- अतिदुष्टजलके पीने सें- तथा अतिमद्य के पीने सें- सात्म्य और ऋतु के पलटने सें- जलमें अति क्रीड़ा करने सें-मल-सूत्र-आदि वेगों के रोकने सें- कृमिरोग के उपद्रव

१ (तदुक्तंचरके) भुक्तं पूर्वान्न शेषेतु पुनरध्यशनंमतम् ॥

सें - अथवा क्रमिजनित वातादिक के कोप सें - अतिसार रोग होता है - इन लक्षणों सें - यह निदान वातादि दोषों का यथा सम्भव जानना - आगे अतिसार के लक्षण कहे हैं ॥

अतिसाररोगकीसम्प्राप्ति

संशम्यापांधातुरग्निंप्रवृद्धोवर्चोसिश्रोवायु
नाधःप्रणुन्नः। सर्पत्यतीवातिसारंतमाहुर्व्या
धिंघोरंषड्विधंतंवदंति। एकैकशःसर्वशः
श्चापिदोषैः शोकेनान्यःषष्ठ आमेनचोक्तः।

अर्थ - पूर्वोक्त कहे कुपथ्य सें अत्यंत दुष्ट भये शरीर में रस-जल-मूत्र-स्वेद-मेदा-कफ-पित्त-रुधिर- इत्यादि जलरूप धातु सो अग्नि को मन्द कर और वही जल मल मिश्रित हो पवन का प्रेरित गुदा के मार्ग सें बारं बार नीचे को बहुत उतरे तिसको अतिसार कहते हैं + यह भयंकर अतिसार रोग ६ प्रकार का है १ वात का २ पित्त का ३ कफ का ४ सन्निपात का ५ शोक का ६ आमातिसार ऐसें छः प्रकार का अतिसार है। द्वंद्वज अतिसार व्याधि स्वभाव करके नहीं होते (सुश्रुत) ने आमातिसार नहीं कह्यो - भय और शोक से दो कहिकर संख्या पूरी करी है - और आमातिसार को सन्निपातातिसार के अन्तर्गत कह्यो है + यहां माधवाचार्य ने भयातिसार की वातज अतिसार में गणना करी है ४॥

अतिसारके पूर्वरूप

हृन्नाभिपायूदरकुक्षितोदगात्रावसादानिल
सन्निरोधाः। विट्संगआध्मानमथाविपाको
भविष्यतस्तस्यपुरःसराणि ॥ ५॥

अर्थ - हृदय-नाभि-गुदा-पेट-कूख- इनमें पीड़ा हो शरीर में फूटनी हो - गुदा को पवन रुकजाय - मल को अवरोध हो -

अफरा हो- और अन्नपचे नहीं- ये लक्षण अतिसार रोग के पूर्व होते हैं ५॥

वातातिसारकेलक्षण

अरुणंफेनिलंरूक्षमल्पमल्पंमुहुर्मुहुः । श
कृदामंसरुकशब्दंमारुतेनातिसार्यते ६ ॥

अर्थ- कुछ ललाई को लिये झाग मिला तथा रूखा थोड़ा २ बार बार में आम मिला भया दस्त उतरे और शूल चले तथा मल उतरते समय शब्द होय तौ वातातिसार जानना ॥ ६॥

पित्तातिसारकेलक्षण

पित्तात्पीतंनीलमालोहितंवातृष्णामूर्च्छादा
हपाकोपपन्नम्

अर्थ- पित्त सैं- पीला- काला- धूंसरे रंगका- मल उतरे तथा तृष्णा- मूर्च्छा- दाह- गुदा पक जाय- यहलक्षणपित्तातिसारकेहैं

कफातिसारकेलक्षण

शुक्लंसांद्रंसकफंश्लेष्मयुक्तं विस्रंशीतंह
ष्टरोमामनुष्यः ७

अर्थ- कफातिसार वाले पुरुष का मल सफ़ेद गाढ़ा- चिकनो- कफ मिश्रित- दुर्गंधयुक्त- और शीतल उतरे- तथा रोमांच खड़े होंय यह लक्षण कफातिसारके जानने ॥ ७॥

सन्निपातके अतिसारकेलक्षण

वाराहस्नेहमांसांबुसदृशंसर्वरूपिणम् । कृ
च्छ्रसाध्यमतीसारं विद्याद्दोषत्रयोद्भवम्

अर्थ- शूकरकी चरबी सदृश- अथवा मांसके धोये हुए पानी के सदृश- और वातादि त्रिदोषों के जो लक्षण कहे हैं उन लक्षणसंयुक्त हो ऐसा ये त्रिदोषजनित अतिसार कष्टसाध्य जानना ८

शोकातिसारकेलक्ष०

तैस्तैर्भावैः शोचतो ऽल्पाशनस्य वाष्पोष्मा
वैवन्हिमाविश्यजंतोः ६ कोष्ठंगत्वाक्षोभ
येत्तस्यरक्तं तच्चाधस्तात्काकणंतीप्रकाशं
निरंच्छेदहृविड्विमिश्रंह्यविड्वा निर्गंधंवागंध
वद्यातिसारः१०

अर्थ- जिस पुरुषके- पुत्र- मित्र- स्त्री- धन इनका नाश होजाय वो उसी उसी वस्तुका शोच करे- इसीसें क्षुधा मन्द होने सें (धातुक्षय होय) ऐसें प्राणी के वाष्प (नेत्र- नासा- गले- आदि सें जो शोक द्वारा जलगिरे) सो और उष्मा कहिये शोकजन्य देहतेज- ये दोनों- वाष्पोष्मा- कोठे में प्राप्त हो अग्निको मन्दकररुधिर को कुपित करे- तवये रुधिर- चिरमिठीकेरंगसदृश गुदाके मार्गहो कर मलयुक्त- अथवा मलरहित निकले- तथा गंधयुक्त अथवा गंध रहित वस्तु करे इसको शोकातिसार कहते हैं इसी प्रकार भयातिसा रभी जानलेना ॥

शोकातिसारकेकृच्छ्रसाध्यत्वलक्षण

शोकोत्पन्नोदुश्चिकित्स्यो ऽतिमात्रं। रोगोवै
द्यैःकष्टसाध्यःप्रदिष्टः

अर्थ- शोक सें उत्पन्न भयो जो अतिसार सो चिकित्सा करनेमें बहुत कठिन है- कारण- शोक शांति भये विना केवल औषध सें शांति नहीं होय- यासें वैद्यों ने ये कष्टसाध्य कहा है ॥

आमातिसारकेलक्षण

अन्नाजीर्णात्प्रद्रुताः क्षोभयंतः कोष्ठंदोषाधा
तुसंघातमल्लांश्च। नानावर्णंनैकशःसार

यंति शूलोपेतंषष्ठमेनंवदन्ति ॥ ॥ २१॥ ॥

अर्थ- अन्न के न पचने सैं दोष (वात-पित्त-कफ) स्वमार्ग कूं छोड़ कर कोठे में प्राप्त हो कोठेको दूषित्त कर-रक्तादि धातु- और पुरीषादि मल को- बारंबार गुदाके मार्ग सैं बाहर निकाले और इस्का रंग अनेक प्रकार का होय- तथा शूल युक्त दस्त उतरे- इस्को छटा आमातिसार वैद्य कहते हैं ÷ शंका ÷ प्रथम कहि आये कि अतिसार रोग छः प्रकार का होता पुनः (षष्ठ मेनंवदंति) ये पद क्यों धरा ÷ उत्तर ÷ ये पद नियम के अर्थ माधवाचार्य ने धरा है - अर्थात्- भय- स्नेह- अजीर्ण- विषूचिका- बबासीर- आदि निमित्त कर के और अतिसार नहीं हैं क्यौं कि भयादि अतिसारों का वात-पित्त- कफ- अतिसारों के अंतर्गत होने सैं

आमकेलक्षण

संसृष्टमेभिर्दोषैस्तन्यस्तमप्स्ववसीदति ॥
पुरीषंभृशदुर्गंधिपिच्छिलंचामसंज्ञितम् २२

अर्थ- पूर्व कहे जो वातादिक अतिसारों के लक्षण तिनसं युक्त ऐसा जो मल सो जल मैं गेरने सैं डूब जाय है क्यौं कि आम जड़ है और उस में बहुत्त दुर्गंध आवे तथा अत्यंत गाढ़ा हो उसकी आमसंज्ञा है २२

अथपक्कलक्षण

एतान्येवतुलिंगानिविपरीतानियस्यवै।
लाघवंचविशेषेणतस्यपक्कंविनिर्दिशे
त॥२३॥

अर्थ- और ऊपर के श्लोक सैं विपरीत लक्षण होंय अर्थात् शरीर हल्का होय तथा मल जल मेंडूबे नहीं और दुर्गंधि रहित

हो बबूला रहित होय उस रोगी का मल पक्व भया जाने १३॥

असाध्यलक्षण

पक्वंजांववसंकाशंय कृत्पिंडनिभंतनु ॥ घ
ततैलवसामज्जावेसवारपयोदधि॥ १४ ॥
मांसधावनतोयाभंकृष्णंनीलारुणप्रभम् ॥
मेचकंकर्वुरंस्निग्धंचन्द्रकोपगतंघनम् १५
कुणपंमस्तकलुंगाभंदुर्गंधिंकुथितंबहु ।तृ
ष्णादाहा ऽरुचिश्वासहिक्कापार्श्वास्थिशू-
लिनम् ॥ १६ ॥ संमूर्च्छारतिसंमोहयुक्तंप-
क्वलीगुदं ॥ प्रलापयुक्तंचभिषक्वर्जयेद
तिसारिणम् १७

अर्थ- पकेजामनकेरंगसदृशकाला औरचिकना - तथाका
ला और लोहितरंग- पतला- घत- तैल- चरबी - मज्जा- बेस
वार- दूध- दही- और मांस के धोने से जैसा जल निकले है
ऐसा रंग होय- काजल के रंग समान अथवा नील मिश्रित
अरुण रंग अर्थात् पपैया पक्षी के पंख के रंग समान- अथवा
खंजन पक्षी के वर्ण सदृश- तथा अनेक रंग का चिकना- मो
रकी चंद्रिका के सदृशरंग- दृढ़- मुरदाकीसी दुर्गंधयुक्त- मस्त
क की मज्जा के समान- गंध युक्त- बुरी दुर्गंध के समान- प्या
स- दाह- अरुचि- श्वास- हिचकी- पसबाड़ों केहाड़ों में पीड़ा-
मन को मोह- और इन्द्रीन् को मोह- अरति ये लक्षण होंय-
तथा गुदा के ओठन का पकना- अनर्थ भाषण करे -ऐसेअ

मेचकं- काला- लाल- पीला- मिला जैसा रंग होय ऐसा मेचकरंग होयहै
१ बेसवार- नाम- मांस में से हड्डी निकाल और कूट कर - दही- दूध- काली
मिरच डालकर जो पदार्थ बनाते हैं तत्सदृशरंग होय ॥

तिसारी रोगी को वैद्य छोड़ देय ॥ १७ ॥

दूसरे असाध्यलक्ष.

असंवृतगुदंक्षीणंदुराध्मानमुपद्रुतम् ॥ गु
देपक्वेगतोष्माणमतिसारिणमुत्सृजेत् ॥

अर्थ- जिसकी गुदा को दस्त के पिछाड़ी संकोचन होय- क्षीण पुरुष- अत्यंत अफरायुक्त- अथवा (दुरात्मानं) ऐसाभी पागन्तर है- अर्थात्- जिसकी इन्द्री बसन होय ॥ तथा अतिसार के शोथादिक उपद्रव करके युक्त- और गुदा के स्थान में पाक कर्त्ता- अर्थात् प कानेवाला- फिर विद्यमान होते और जिसकी देह में गरमी सी नहीं दीखे- अर्थात् देह शीतल हो- अथवा जिसकी अग्नि नष्ट होजाय ऐसे अतिसारी रोगी को वैद्य त्यागदेय १८

अतिसारके उपद्रव

शोथंशूलंज्वरंतृष्णांश्वासकासमरोचकम्
छर्दिंमूर्च्छांचहिक्कांचदृष्ट्वातीसारिणंत्यजेत्

अर्थ- सोजन- शूल- ज्वर- तृषा- श्वास- खांसी- अरुचि- वमन- मूर्च्छा- हिचकी- ऐसे लक्षण जा रोगी में होंय उसको वैद्य छोड़ देय १९

असाध्यलक्षण

श्वासशूलपिपासार्त्तंक्षीणंज्वरनिपीड़ितम्
विशेषेणनरंवृद्धमतिसारोविनाशयेत् ॥ २० ॥

अर्थ- श्वास- शूल- प्यास- इनसे पीड़ित- क्षीण- ज्वरसें पीड़ित- और वृद्ध मनुष्यके ये लक्षण होंय तौ यह अतिसार रोग मनुष्य को विनाश करै ॥ २० ॥

रक्तातिसारलक्ष.

पित्तकृन्ति यदात्यर्थं द्रव्याण्यश्नातिपैत्तिके।
तदोपजायते ऽभीक्ष्णं रक्तातीसार उल्वणः॥

अर्थ- पित्तातिसार वाला पुरुष अथवा पित्तातिसार होने वाला पुरुष जब अत्यंत पित्त करने वाली वस्तु भोजन करे तब भयंकर रक्तातिसार प्रगट होय है इसके लाल-काले-पीले-आदिरंग वातादिदोषोंके कुपितहोने सेहोते हैं-येभीपित्तातिसारकेभेदहैं

प्रवाहिकाकीसंप्राप्ति

वायुः प्रवृद्धोनिचितंबलासं नुदत्यधस्ताद-
हिताशनस्य। प्रवाहतोल्पंबहुशोमलाक्तं प्र
वाहिकांतांप्रवदंतितज्ज्ञाः २२

अर्थ- अपथ्यसेवन करनेवाले पुरुषके कुपितभई जो बात सोसंचित भये कफ कोमल संयुक्तकरके बारंबार गुदाके मार्ग से बाहर निकाले और मरोड़ा केसाथ थोड़ा २ मल निकले या को प्रवाहिका कहते हैं॥२२॥ प्रवाहिका और अतिसार इन दोनों का एकसा धर्म है यासें अतिसार रोग में प्रवाहिकाक ही है। परंतु अतिसार में अनेक प्रकार के द्रव धातु निकलें हैं- और प्रवाहिका में केवल कफ निकले है। इतना भेदहै इसमें (निचितंबलासं) येजो पद कह्यौ - अर्थात् कफ सें मिलकर- सोये केवल कफ का तो उपलक्षण है अर्थात् कफ के कहने सें पित्त औररुधिर भी जानना - भोजनेइस रोग का नाम विवसी कहा है- परासरऋषीनेइसको अन्तरग्रंथी कह्यौ है - श्रीहारीतऋषीने- निष्मारककह्यौहै- कोई आचार्य- निर्वाहिका कहते हैं॥

प्रवाहिकाके वातादिभेदक
एकेलक्षण

प्रवाहिकावातकृतासशूला पित्तात्सदाहास
कफाकफाच्च । सशोणिताशोणितसंभवा
चताः स्नेहरूक्षप्रभवामतास्ताः । तासामती
सारवदादिशेच्च लिंगंक्रमंचामविपक्कतांच
॥२३॥

अर्थ– बातकी प्रवाहिका मेंशूलहोयहै- पित्तकी दाहयुक्त- कफकी कफयुक्त- औररक्तसैंरक्तयुक्त होयहै- यह चिकने और रूखे पदार्थ भोजन करने सें होय है- अर्थात् चिकनेपदार्थसेंकफकी- रूखेपदार्थसेंबातकी- तुशब्दकरकें तीक्ष्ण- और खट्टे पदार्थसेक्रमसें पित्तकी- औररुधिरकी होय है- औसैंजानना ॥२३॥ या प्रवाहिकाकेलक्षण- और क्रम-तथा आम पक्वावस्थाये अतिसार निदानके सदृशजानना ॥

अतीसारचलागयाहोयउसके लक्षण

यस्योच्चारंविनामूत्रंसम्यग्वायुश्चगच्छति ।दी
प्ताग्नेर्लघुकोष्ठस्यस्थितस्तस्योदरामयः २४

अर्थ– जिस मनुष्यको मूत्र करते समय दस्त न होय-और अपानबायु जिसकी शुद्धनिकसै- और अग्निदेदीप्यमानहोय- कोठाहल्कोहोय उस मनुष्य को अतिसारगयो जानिये ॥२४॥

इतिश्रीपण्डितदत्तराममाथुरनिर्मित माथुरीमाधवार्थदीपिका माथुरीभाषाटीकायां अतिसाररोगःसमाप्तः

अथग्रहणीनिदानं
ग्रहणीकीसंप्राप्ति

अतिसारेनिवृत्तेपिमन्दाग्नेरहिताशिनः।भू
यःसंदूषितोवन्हिर्ग्रहणीमभिदूषयेत् १

अर्थ- पहलेमनुष्यके अतिसाररोग होकरजातारहा होय फिर उस मनुष्य के कुपथ्य करनेसें मन्द भई जो अग्नि सो पुरुष के उदर में रहने वाली जो पित्त धरा नामकछठी कला जिसको ग्रहणी कहते हैं उसको बिगाड़ + अपि शब्द करके- अतिसार नभया होय तोभी अपने कारण करके पूर्वोक्त ग्रहणीको बिगाड़ कर और संग्रहणी रोगको प्रगट करे ये सूचना करी + कोई आचारी ऐसें कहते हैं कि- अतिसार न गया होय बीच में हीं ग्रहणी रोग होय है। मन्दाग्निया पदकरके येसूचना करी कि- जिस पुरुष की अग्नी तीक्ष्ण है- वो कुपथ्य भीकरे तथापि कुछ औगुन नहीं होय- अन्नकों जो ग्रहण करे है यासें इसको ग्रहणी कहे हैं- इसी सें ग्रहणी के बिगड़नेसें अन्न का परिपाक अच्छे प्रकार नहीं होय अर्थात् बारंबार आम मिश्रित मल गुदा के मार्ग से गिरता है ॥२॥

ग्रहणीरोगकीसंप्राप्ति
पूर्वकसामान्यलक्ष.

एकैकशःसर्वशश्चदोषैरत्यर्थमूर्छितैः ॥
सादुष्टाबहुशोभुक्तमाममेवबिमुंचति २ प
क्वंवासरुजंपूतिमुहुर्बद्धंमुहुर्द्रवम्।ग्रह-
रोगमाहुस्तमायुर्वेदविदोजनाः॥३॥

अर्थ- अत्यंतकुपितभये जो प्रथक् २ दोष (बात-पित्त-कफ

और सब दोष मिलकर ग्रहणी को दुष्ट करें - सो ग्रहणी दुष्ट होकर कच्चे अथवा पक्के अन्न को गुदा के मार्ग होकर निकालै- और पीड़ा होय-तथा उस मल में दुर्गंधि आवै- बादी से मल पतला और पित्त सैं गाढ़ा दस्त बार बार होय और कभी कफ से पानी सरीखा अधोवायु युक्त निकले इसको आयुर्वेद के जाननेवाले वैद्य संग्रहणी रोग कहते हैं ॥३॥

पूर्वरूपंतुतस्येदंतृष्णालस्यंबलक्षयः। वि
दाहोन्नस्यपाकश्चचिरात्कायस्यगौरवम्

अर्थ- प्यास- आलकस- बलनाश- अन्नका दाह- (पाक के समय अग्निसी जले) और अन्न को पाक देर में होय- देह भारी होय- यह ग्रहणी रोग को पूर्वरूप है ॥४॥

वातजग्रहणीकेलक्षण

कटुतिक्तकषायातिरूक्षसंदुष्टभोजनैः। प्र
मितानशनात्यध्ववेगनिग्रहमैथुनैः ५ मारुतः
कुपितोबह्निंसंछाद्यकुरुतेगदान्।

अर्थ- कड़ुआ- तीषा- कसैला- अतिरूषा- और संयोगबिरुद्ध- ऐसे भोजन सैं- तथा- थोड़े भोजन सैं- उपवास सैं- बहुत चलने सैं - मल- मूत्रादि बेगों के रोकने सैं - अत्यंत मैथुन सें कुपित भई जो बात सो अग्नि को दूषित कर रोगों को प्रगट करै है ॥५॥

जोरोगप्रगटकरेसोकहेहैं

तस्यान्नंपच्यतेदुःखंशुक्तपाकंखरांगता ६
कंठास्यशोषःक्षुत्तृष्णातिमिरंकर्णयोःस्वनः
पार्श्वोरुवंक्षणग्रीवारुगभीक्ष्णंविषूचिका ७।
हृत्पीडाकार्श्यदौर्बल्यंबैरस्यंपरिकर्त्तिका।

गृद्धिः सर्वरसानांचमनसः संदनंतथा॥८॥
जीर्णेजीर्यतिचाध्मानंभुक्तेस्वास्थ्यमुपैतिच ।
सबातगुल्महृद्रोगप्लीहाशंकीचमानवः ९
चिराद्दुःखंद्रवंशुष्कंतन्वामं शब्दफेनवत् ।
पुनःपुनःसृजेद्वर्चःकासश्वासार्दितोऽनिलात् १०

अर्थ- तिस बात ग्रहणीवाले के अन्नदुःखसैं पचै- अन्नका पाक खट्टा होय- अंगमें कर्कशपना- (यह वातत्वचाके चिकनापन को शोखने से होय है-) कंठ-मुख का सूखना-भूखका लगना-प्यास लगे- मंददीखै- कानों में शब्द हो- पसवाड़े में- जँघ में- पेड़ु में- कंधा में पीड़ा होय- बिशूचिकाहो (अर्थात् दोनों द्वार सैं आम अन्न की प्रवृत्ति होय) हृदय दूखै- देह दुबला होजाय- जीभका स्वाद जाता रहै- गुदामें कतरनी कीसी पीड़ा हो- मीठासैं आदिलै सर्वरस के खाने कीइच्छा- मनमें ग्लानि- अन्न पचने उपरांत पेटका फूलना- भोजन करे तब चैन होय- पेटमें गोला होय- हृद्रोग- तापतिल्ली कीसी शंका होय-बातके योगसैं मनुष्य खाँसी- श्वास- सैं पीड़ित-बहुत देरमें बड़े कष्ट सैं कभी पतला कभी गाढ़ा थोड़ा शब्द और झाग मिला बार बार दस्त जाय॥१०॥

पित्तग्रहणीकेलक्षण

कट्वजीर्णविदाह्यम्लक्षाराद्यैः पित्तमुल्वणं ॥
आप्लावयद्धंत्यनलंजलंतप्तमिवानलम् ।११।
सोऽजीर्णंनीलपीताभंपीताभस्सार्यते द्रवं । स
धूमोद्गारहृत्कंठदाहारुचितृडर्दितः १२

अर्थ- जो पुरुष- कड़वी- अजीर्ण- मिरच- आदि तीखी-दाहकारक-(वंश-करील-कीकोपल) आदि- खट्टी-खारी-औ

गा आदि का खार- आदिशब्द सें नोन का गरम पदार्थ इनका
रण सें कुपित भयो जो पित्त सो जठराग्निको बुझाय दे जैसे त
त्ता जल अग्नि को शांति करदे- और कच्चाही नीला पीला रंग का
पतला मलको निकाले है तथा धूम युक्त डकार आवे- हियेमें
कंठ में दाह होय - अरुचि- और प्यास करके पीड़ित होय य
ह पित्त की संग्रहणी के लक्षण हैं ॥ १२ ॥

कफसंग्रहणीकीउत्पत्ति

गुर्वतिस्निग्धशीतादिभोजनादतिभोजनात् ॥
भुक्तमात्रस्यचस्वप्नाद्धंत्यग्निंकुपितःकफः १३
तस्यान्नंपच्यतेदुःखंहृल्लासच्छर्द्यरोचकाः ।
आस्योपदेहमाधुर्यकासष्ठीवनपीनसाः १४ हृ
दयंमन्यतेस्त्यानमुदरंस्तिमितंगुरु ॥ दुष्टो
मधुरउद्गारःसदनंस्त्रीष्वहर्षणम् १५ भिन्ना
माम्लेष्मसंसृष्टगुरुवर्चःप्रवर्तनम् । अकृश
स्यापिदौर्बल्यमालस्यंचकफात्मके

अर्थ- भारी- अत्यंतचिकना- शीतल- आदि पदार्थ केखाने
सें- अतिभोजनसें- तथाभोजनकरकेसोयजाय- इनकारणों
सेकुपित भयो जो कफ सो जठराग्निको शांत करै- तबइसके
खाया अन्न कष्ट सें पचे- हृदय में पीड़ा होय- वमन- अरुचि-
मुखकोकफ से लिपासा- तथा मुख का मीठा रहना- खांसी
कफ थूके- सरेकमा होय- हृदयपानी सेभरा सदृशहोय- पेट
भारी और जड़ हो- दुष्ट और मीठी डकार आवे- अग्नि शान्तिहो
स्त्रीरमण में अरुचि- पतला और आम कफ मिला और भारी
ऐसा मल निकले- बल बिना शरीर पुष्ट दीखै- आलस्य बहु
त आवे- यहकफकीसंग्रहणी केलक्षण हैं ॥

त्रिदोषसंग्रहणीकेलक्षण

पृथग्वातादिनिर्दिष्टहेतुलिंगसमागमे । त्रि
दोषंलक्षयेदेवंतेषांवक्ष्यामिभेषजम् ३७

अर्थ- वातादि तीनों दोषों के जो लक्षण कह आये हैं वेसब जिसमें मिलते होंय- उसको त्रिदोषकीसंग्रहणी जानिये- (ते षांवक्ष्यामिभेषजम्) ये पद केवलपादपूर्णार्थ लिखा है ॥

डाक्टरोंमतकेअनुसार

परीक्षा

आम से मिला मल उतरे- दस्त होते समय- गुदा शब्द करे- ऐसे एक महीना अथवा अधिक दिवस पर्यंत पीड़ा होय

कारण

भारी द्रव्ये के खाने से - अथवा देह के दुर्बल होने से मनुष्य के संग्रहणी रोग होय है ॥

इतिश्रीपण्डितदत्तराममाथुरनिर्मित- माथुरीमाधवार्थदीपिकाभाषाटीकायां ग्रहणीरोगस्समाप्तः॥

अतिसार- ग्रहणी - और अर्श- इनका परस्पर सम्बन्धहै या सें ग्रहणी रोग के पीछे अर्श रोग कहते हैं ॥

संख्यारूपसम्प्राप्ति

पृथक् दोषैः समस्तैश्चशोणितात्सहजानिच
अर्शांसिषट्प्रकाराणिविद्याद्गुदवलित्रये १।

अर्थ- पृथक् ३ दोषसें ३ समस्तदोषमिलकर १ रुधिरसें १ औरसहज १ ऐसें छः प्रकार की अर्श (बवासीर) रोग

है- यह रोग गुदा की तीन बली के भीतर होय है- गुदामें प्र वाहिनी- सर्ज्जनी- ग्राहिणी- यहंतीनबली (आँटेहैं)

संप्राप्तिपूर्वक अर्शकास्वरूप

दोषास्त्वङ्मांसमेदांसि संदूष्य विविधाकृती न्। मांसांकुरानपानादौ कुर्वंत्यर्शासितान् जगुः॥२॥

अर्थ- वातादि दोष- त्वचा- मांस- और मेदाइनको औरउस ठिकाने के रुधिर को दूषित कर अपान (कहिये गुदा) में अनेक प्रकार की आकृति के मांस के अंकुर उत्पन्न करे अर्थात् मस्से प्रगट करे उनको ववासीर कहते हैं। आदिश ब्द सें- नाक- नेत्र- नाभि में भी जानना- ये मत (सुश्रुत) का है - काय चिकित्सक तो गुदा में जो होय है उसी को बवा सीर कहते हैं- जो नाशिका आदि में होय उसको अधिमांस कहते हैं- क्यौं कि नासिका आदि में जो ववासीर होती है उस में पूर्व रूप के लक्षण नहिं मिलते हैं॥

वातकी ववासीर के कारण

कषायकटुतिक्तानिरूक्षशीतलघूनिच। प्रमिताल्पाशनंतीक्ष्णमद्यंमैथुनसेवनम्॥ लंघनंदेशकालौच शीतौ व्यायामकर्मच। शोकोवातातपस्पर्शोहेतुर्वातार्शसांमतः४

१ मनुष्य की गुदा में तीन आंटे हैं- एक ऊपर एक नीचे एकवीच में ऊपर के आँटे कानाम प्रवाहिनी है- सो मल पवन आदि को वाहर काढ़े- वीच का आंटा मल पवन को बाहर पटकदे इस्कानामसर्ज्जनी है तीसरा नीचेका आंटामलपवननिकलेपीछे ज्योंकात्यों गुदाको करदे॥

अर्थ- कषेला- कड़ुवा- तीखा- रूखा- शीतल- और अतिल घु- ऐसे पदार्थ के खाने सें तथा अति थोड़ा खानेसें- भोज- न काल के उल्लंघन करने सें- तीव्र मद्य के पान करने से- अ त्यंत मैथुन (स्त्रीसंग करने सें) उपवास - शीतदेश- औ र शीतकाल (हेमंतादिऋतु) दंडकसरत सें- शोकसें- हवा- घाम में डोलने सें- ये बातकी बवासीर होनेके कारण हैं

पित्तकीबवासीरकेकारण

कट्वम्ललवणोष्णानिव्यायामाग्न्यातपश्रमाः
देशकालावशिशिरौ क्रोधोमद्यमसूयनम् ५
विदाहितीक्ष्णमुष्णंचसर्वपानान्नभेषजम् ।पि
त्तोल्वणानांविज्ञेयः प्रकोपेहेतुरर्शसाम् ६॥

अर्थ- कड़ुवा- खट्टा- लवणका- गरम- ऐसें पदार्थ सें दंड कसरत- अग्निके समीप- तथा घाममें रहनेसें- श्रम- गरमदेश अर्थात् मारवाड़ आदिदेश- और उष्णकाल- अर्थात् ग्रीष्म ऋतु- क्रोध- मद्यपान- परद्रव्य देखकर जलना- दाहका रक वस्तु - तीखी- गरम- वस्तुका पीना- अन्न का और गर म औषधि का सेवन- यह सब पित्ताधिक- बवासीर के कारण हैं ॥ ६ ॥

कफकीबवासीरकाकारण

मधुरस्निग्धशीतानिलवणाम्लगुरूणिच ॥
अव्यायामदिवास्वप्नशय्यासनसुखेरतिः ॥
प्राग्वातसेवाशीतौचदेशकालावचिंतनम्
श्लेष्मोल्वणानामुद्दिष्टमेतत्कारणमर्शसा
म् ॥ ८ ॥

अर्थ- मीठा- चिकना- शीतल- खारी- खट्टा- भारी- ऐसें

प्रवाहिकावातकृतासशूला पित्तात्सदाहास
कफाकफाच्च । सशोणिता शोणितसंभवा
चताः स्नेहरूक्षप्रभवामतास्ता । तासामती
सारवदादिशेच्च लिंगंक्रमंचामविपक्कतांच
॥ २३ ॥

अर्थ- बातकी प्रवाहिकामेंशूलहोयहै - पित्तकी दाह युक्त - कफ की कफयुक्त - औररक्तसैंरक्तयुक्त होयहै - यह चिकने और रूखे पदार्थ भोजन करने सैं होय है - अर्थात् चिकनेप दार्थ सेंकफकी - रूखेपदार्थसें बातकी - तुशब्द करके तीक्ष्ण - और खट्टे पदार्थ सेक्रमसें पित्तकी - औररुधिरकी होय है - ऐसैं जानना ॥ २३ ॥ या प्रवाहिकाकेलक्षण - और क्रम तथा आम पक्कावस्थाये अतिसार निदानके सदृश जानना ॥

अतीसारचलागयाहोयउसके लक्षण

यस्योच्चारंबिनामूत्रंसम्यग्वायुश्चगच्छति । दी
प्ताग्नेर्लघुकोष्ठस्य स्थितस्तस्योदरामयः २४

अर्थ- जिस मनुष्यको मूत्र करते समय दस्त न होय और अपानबायु जिसकी शुद्धनिकसै और अग्निंदेदीप्यमान होय - कोठा हल्को होय उस मनुष्य को अतिसार गयो जानिये ॥ २४ ॥

इतिश्रीपण्डितदत्तराममाथुरनिर्मित माथुरीमाधवार्थदीपिका माथुरीभाषाटीकायां अतिसाररोगःसमाप्तः

अथग्रहणीनिदानं
ग्रहणीकीसंप्राप्ति

अतिसारेनिवृत्तेपिमन्दाग्नेरहिताशिनः।भू
यःसंदूषितोवन्हिर्ग्रहणीमभिदूषयेत् १

अर्थ- पहलेमनुष्यकेअतिसाररोगहोकरजातारहा होय फिर उस मनुष्य के कुपथ्य करने सें मन्द भई जो अग्नि सो पुरुष के उदर में रहने वाली जो पित्त धरा नामकछठी कला जिसको ग्रहणी कहते हैं उसको बिगाड़ + अपि शब्द करके- अतिसार नभया होय तोभी अपने कारण करके पूर्वोक्त ग्रहणीको बिगाड़ कर और संग्रहणीरोगको प्रगट करे ये सूचना करी + कोई आचारी ऐसें कहते हैं कि- अतिसार न गया होय बीच में ही ग्रहणी रोग होय है। मन्दाग्निया पदकरके येसूचना करी कि- जिस पुरुष की अग्नी तीक्ष्ण है- वो कुपथ्य भीकरे तथापि कुछ औगुन नहीं होय- अन्नकों जो ग्रहण करे है यासैं इसको ग्रहणी कहे हैं- इसी सैं ग्रहणी के बिगड़ने सें अन्न का परिपाक अच्छे प्रकार नहीं होय अर्थात् बारंबार आममिश्रित मल गुदा के मार्ग से गिरता है ॥१॥

ग्रहणीरोगकीसंप्राप्ति
पूर्वकसामान्यलक्ष॰

एकैकशःसर्वशश्चदोषैरत्यर्थमूर्छितैः ॥
सादुष्टाबहुशोभुक्तमाममेवबिमुंचति २ प
क्वंवासरुजंपूतिमुहुर्बद्धंमुहुर्द्रवम् । ग्रह॰
रोगमाहुस्तमायुर्वेदविदोजनाः ॥३॥

अर्थ- अत्यंतकुपितभये जो पृथक् २ दोष (बात-पित्त-कफ

और सब दोष मिलकर ग्रहणी को दुष्ट करैं - सो ग्रहणी दुष्ट होकर कच्चे अथवा पक्के अन्न को गुदा के मार्ग होकर निकाले-और पीड़ा होय-तथा उस मल में दुर्गंधि आवै - बादी से मल पतला और पित्त सैं गाढ़ा दस्त बार बार होय और कभी कफ से पानी सरीखा अधोवायु युक्त निकले इसको आयुर्वेद के जाननेवाले बैद्य संग्रहणीरोग कहते हैं ॥३॥

पूर्वरूपंतुतस्येदंतृष्णालस्यंबलक्षयः। विदाहोन्नस्यपाकश्चचिरात्कायस्यगौरवम्

अर्थ- प्यास- आलकस- बलनाश- अन्नकादाह-(पाक के समय अग्निसी जले) और अन्न को पाक देरमें होय- देह भारीहोय- यहग्रहणी रोग को पूर्वरूप है ॥४॥

वातजग्रहणीकेलक्षण

कटुतिक्तकषायातिरूक्षसंदुष्टभोजनैः। प्रमितानशनात्यध्ववेगनिग्रहमैथुनैः ५ मारुतः कुपितोवन्हिंसंछाद्यकुरुतेगदान्।

अर्थ- कडुआ- तीखा- कसैला- अतिरूखा- और संयोगबिरुद्ध- ऐसे भोजन तें- तथा- थोड़े भोजन सें- उपवास सें- बहुत चलने सें - मल- मूत्रादि बेगों के रोकने सें - अत्यंत मैथुन सें कुपित भई जो बात सो अग्नि को दूषित कर रोगों को प्रगट करे है ॥५॥

जोरोगप्रगटकरेसोकहेहैं

तस्यान्नंपच्यतेदुःखंशुक्तपाकंखरांगता ६ कंठास्यशोषःक्षुत्तृष्णातिमिरंकर्णयोःस्वनः पार्श्वोरुवंक्षणग्रीवारुगभीक्ष्णंविषूचिका ७। हृत्पीडाकार्श्यदौर्बल्यंबैरस्यंपरिकर्त्तिका।

गृद्धिः सर्वरसानांचमनसः सदनंतथा ॥८॥
जीर्णेजीर्यतिचाध्मानंभुक्ते स्वास्थ्यमुपैतिच ।
सवातगुल्महृद्रोगप्लीहाशंकीचमानवः ९
चिराद्दुःखंद्रवंशुष्कंतन्वामं शब्दफेनवत् ।
पुनःपुनःसृजेद्वर्चः कासश्वासार्दितोऽनिलात् १०

अर्थ- तिस बात ग्रहणीवाले के अन्न दुःख सैं पचै- अन्नका पाक खट्टा होय- अंगमें कर्कशपना- (यह बातत्वचाके चिक नापन को शोखने से होय है-) कंठ-मुख का सूखना-भूखका लगना-प्यास लगे- मंद दीखे- कानों में शब्द हो-पसवाड़े में- जंघ में- पेड़ू में- कंधा में पीड़ा होय- बिशूचिकाहो (अ र्थात् दोनों द्वार सें आम अन्न की प्रवृत्ति होय) हृदय दूखे- देह दुबला होजाय- जीभ का स्वाद जाता रहै-गुदामें कतर नी कीसी पीड़ा हो- मीठा सें आदिले सर्व रस के खाने की इच्छा- मनमें ग्लानि- अन्न पचने उपरांत पेटका फूलना-भोजन करे त ब चैन होय- पेटमें गोला होय-हृद्रोग- तापतिल्लीकीसी शंका होय-बातके योग सें मनुष्य खांसी-श्वास- सें पीड़ित-बहुत देरमें बड़े कष्ट सें कभी पतला कभी गाढ़ा थोड़ा शब्द और झाग मि ला बार बार दस्त जाय ॥१०॥

पित्तग्रहणीकेलक्षण

कट्वजीर्णबिदाह्यम्लक्षाराद्यैः पित्तमुल्वणं ॥
आप्लावयद्धंत्यनलंजलंतप्तमिवानलम् ।११।
सोऽजीर्णंनीलपीताभंपीताभस्सार्यतेद्रवं । स
धूमोद्गारहृत्कंठदाहारुचितृडर्दितः १२

अर्थ- जो पुरुष-कड़ुवी- अजीर्ण-मिरच- आदि तीखी-दा हकारक-(बंशा-करील-कीकोपल) आदि-खट्टी-खारी-ओ

गा आदि का खार· आदिशब्द सैं नोन का गरम पदार्थ इनका रण सैं कुपित भयो जो पित्त सो जठराग्निको बुझाय दे जैसे तप्ता जल अग्नि को शांति करदे· और कच्चाही नीला पीला रंग का पतला मलको निकालै है तथा धूम युक्त डकार आवे· हियेमें कंठमें दाह होय· अरुचि· और प्यास करके पीड़ित होय यह पित्त की संग्रहणी के लक्षण हैं ॥ १२ ॥

कफसंग्रहणीकीउत्पत्ति

गुर्वतिस्निग्धशीतादिभोजनादतिभोजनात् ॥
भुक्तमात्रस्यचस्वप्नाद्धंत्यग्निंकुपितःकफः १३
तस्यान्नंपच्यतेदुःखंहृल्लासच्छर्द्यरोचकाः ।
आस्योपदेहमाधुर्यकासष्ठीवनपीनसाः १४ हृ
दयंमन्यतेस्त्यानमुदरंस्तिमितंगुरु ॥ दुष्टो
मधुरउद्गारः सदनंस्त्रीष्वहर्षणम् १५ भिन्ना
मश्लेष्मसंसृष्टगुरुवर्चः प्रवर्त्तनम् । अकृश
स्यापिदौर्बल्यमालस्यंचकफात्मके

अर्थ– भारी· अत्यंतचिकना· शीतल· आदिपदार्थ केखाने सैं· अतिभोजनसैं· तथाभोजनकरकेसोयजाय· इनकारणों सेकुपित भयो जो कफ सो जठराग्निको शांत करै· तबइसके खाया अन्न कष्ट सैं पचे· हृदय में पीड़ा होय· वमन· अरुचि· मुखकोकफ से लिपासा· तथा मुखका मीठा रहना· खांसी कफ थूके· सरेकमा होय· हृदयपानीसेभरा सदृशहोय· पेट भारी औरजड़ हो· दुष्ट औरमीठी डकार आवे· अग्नि शान्तिहो स्त्रीरमण में अरुचि· पतला और आम कफ मिला औरभारी ऐसा मल निकले· बल बिना शरीर पुष्ट दीखै· आलस्य बहुत आवे· यहकफकीसंग्रहणी के लक्षण हैं ॥

त्रिदोषसंग्रहणीकेलक्षण

पृथग्वातादिनिर्दिष्टहेतुलिंगसमागमे । त्रि
दोषंलक्षयेदेवंतेषांवक्ष्यामिभेषजम् १७

अर्थ– वातादि तीनों दोषों के जो लक्षण कह आये हैं वेसब जिसमें मिलते होंय- उसको त्रिदोषकीसंग्रहणी जानिये- (तेषांवक्ष्यामिभेषजम्) ये पद केवलपाद पूर्णार्थ लिखा है ॥

डाक्टरीमतकेअनुसार

परीक्षा

आम से मिला मल उतरे- दस्त होते समय- गुदा शब्द करे- ऐसे एक महीना अथवा अधिक दिवस पर्यन्त पीड़ा होय

कारण

भारी द्रव्य के खाने से - अथवा देह के दुर्बल होने से मनुष्य के संग्रहणी रोग होय है ॥

इतिश्रीपण्डितदत्तरामनाथुरनिर्मित- माथुरीमाधवार्थदीपिकाभाषाटीकायां ग्रहणीरोगसमाप्तः॥

अतिसार- ग्रहणी - और अर्श- इनका परस्पर सम्बन्ध है यासें ग्रहणी रोग के पीछे अर्श रोग कहते हैं ॥

संख्यारूपसम्प्राप्ति

पृथक् दोषैः समस्तैश्चशोणितात्सहजानिच
अर्शांसिषट्प्रकाराणिविद्याद्गुदवलित्रये १।

अर्थ- पृथक् ३ दोषसें ३ समस्तदोषमिलकर १ रुधिरसें १ और सहज १ ऐसें छः प्रकार की अर्श (बवासीर) रोग

है- यह रोग गुदा की तीन बली के भीतर होय है- गुदामें प्र वाहिनी-सर्ज्जनी-ग्राहिणी-यहतीनबली (आंटेहैं)

संप्राप्तिपूर्वक अर्शकास्वरूप

दोषास्त्वङ्मांसमेदांसि संदूष्य विविधाकृती न् । मांसांकुरानपानादौ कुर्वन्त्यर्शांसितान् जगुः॥२॥

अर्थ- वातादि दोष-त्वचा-मांस-और मेदा इनको और उस ठिकाने के रुधिर को दूषित कर अपान (कहिये गुदा) में अनेक प्रकार की आकृति के मांस के अंकुर उत्पन्न करे अर्थात् मस्से प्रगट करे उनको बवासीर कहते हैं। आदिश ब्द सें-नाक-नेत्र-नाभि में भी जानना- ये मत (सुश्रुत) का है - काय चिकित्सक तो गुदा में जो होय है उसी को बवा सीर कहते हैं - जो नाशिका आदि में होय उसको अधिमांस कहते हैं- क्यों कि नासिका आदि में जो बवासीर होती है उस में पूर्व रूप के लक्षण नहिं मिलते हैं ॥

बातकीबवासीरके कारण

कषायकटुतिक्तानिरूक्षशीतलघूनिच । प्र मिताल्पाशनंतीक्ष्णमद्यंमैथुनसेवनम् ॥ लं घनंदेशकालौच शीतौ व्यायामकर्मच । शो कोवातातपस्पर्शोहेतुर्वातार्शसांमतः ४

१ मनुष्य की गुदा में तीन आंटे हैं- एक ऊपर एक नीचे एक बीच में ऊपर के आंटे का नाम प्रवाहिनी है- सो मल पवन आदि को बाहर काढ़े- बीच का आंटा मल पवन को बाहर पटक दे इसका नाम सर्ज्जनी है तीसरा नीचे का आंटा मल पवन निकले पीछे ज्यों का त्यों गुदा को करदे ॥

अर्थ- कषेला- कड़ुवा- तीखा- रूखा- शीतल- और अतिल घु- ऐसे पदार्थ के खाने सें तथा अति थोड़ा खानें सें- भोज- न काल के उल्लंघन करनें सें- तीव्र मद्य के पान करने से- अ त्यंत मैथुन (स्त्रीसंग करनें सें) उपवास - शीतदेश- औ र शीतकाल (हेमंतादिऋतु) दंडकसरत सें- शोकसें- हवा- घाम में डोलने सें- ये बातकी बवासीर होनेके कारण हैं

पित्तकीबवासीरकेकारण

कट्वम्ललवणोष्णानिव्यायामाग्न्यातपप्रभाः
देशकालावशिशिरौक्रोधोमद्यमसूयनम् ५
विदाहितीक्ष्णमुष्णंचसर्वपानान्नभेषजम् ।पि
त्तोल्वणानांविज्ञेयः प्रकोपेहेतुरर्शसास् ६॥

अर्थ- कड़ुवा- खट्टा- लवणका- गरम- ऐसें पदार्थ सें दंड कसरत- अग्निके समीप- तथा घाममें रहनेसें- श्रम- गरमदेश अर्थात् मारबाड़ आदिदेश- और उष्णकाल- अर्थात् ग्रीष्म ऋतु- क्रोध- मद्यपान- परद्रव्य देखकर जलना- दाहका रक वस्तु- तीखी- गरम- वस्तूका पीना- अन्नका और गर म औषधिका सेवन- यह सब पित्ताधिक- बवासीरके कारण हैं ॥ ६॥

कफकीबवासीरकाकारण

मधुरस्निग्धशीतानिलवणाम्लगुरूणिच ॥
अव्यायामदिवास्वप्नशय्यासनसुखेरतिः ॥
प्राग्वातसेवाशीतौचदेशकालावचिंतनम्
श्लेष्मोल्वणानामुद्दिष्टमेतत्कारणमर्शसा
म्॥ ८॥

अर्थ- मीठा- चिकना- शीतल- खारी- खट्टा- भारी- ऐसें

भोजन सैं - व्यायाम के न करने सैं - दिन में सोने सैं - सेज-गद्दी - इनके सेवन करने सैं - पूरब की हवा खाने सैं - शीतल देश - शीतकाल - चिंतारहित होने सैं - ये कफ की बवासीर होने के हेतु हैं -

द्वंद्वज बवासीर के कारण

हेतुलक्षणसंसर्गाद्विद्याद्द्वंद्वोल्बणानिच ॥

अर्थ - दोदो दोषों के कारण और लक्षण मिलें तौ द्वंद्वज बवासीर भई है ऐसें जाने ॥

त्रिदोष की बवासीर के कार.

सर्वोहेतुस्त्रिदोषाणांलक्षणंसहजैःसमम्

अर्थ - पृथक् वातादिक बवासीर के जो कारण कहे हैं वो सर्वे त्रिदोष की बवासीर के कारण हैं - और जो सहज अर्श केअर्थात् बवासीर के लक्षण सो वो इसके लक्षण जानने ॥

वात की बवासीर के लक्ष.

गुदांकुराबह्वनिलाःशुष्काश्चिमिचिमान्विताःम्लानाःश्यावारुणाःस्तब्धाविशदाःपरुषाःखराः॥मिथोविसदृशावक्रास्तीक्ष्णाविस्फुटिताननाः। बिंबीकर्कंधुखर्जूरकार्पासीफलसन्निभाः २१

केचित्कदंबपुष्पाभाःकेचित्सिद्धार्थकोपमाः शिरःपार्श्वांसकट्यूरुवंक्षणाभ्यधिकव्यथाः क्षवथूद्गारविष्टंभहृद्ग्रहारोचकप्रदाः॥ ॥२२

कासश्वासाग्निवैषम्यकर्णनादभ्रमावहाः २३

तैरार्तोग्रथितंस्तोकंसशब्दंसप्रवाहिकम् रुक्फेनपिच्छानुगतंविबद्धमुपवेश्यते २४

कृष्णत्वङ्नखविण्मूत्रनेत्रवक्त्रश्चजायते गुल्मप्लीहोदराष्ठीलासंभवस्तत एव च ॥२५॥

अर्थ- वाताधिक सैं गुदाके अंकुर-सूखे (स्रावरहित) चिम चिम पीड़ायुक्त-मुरझायेहुए-काले-लाल-टेढ़े-विशद-कर्कश-खरदरे-एकसे नहोंइ-बाँके-तीखे-फटे मुखके-कंदूरी-बेर-खजूर-कपास-केफल सदृश होंय कोई कदंबके फूल समान हों-कोई सरसों के सदृश हों-शिर-पसवाड़े-कन्धा-कमर-जांघ-पेडू-इनमें अधिक पीड़ा हो-छींक-डकार-दस्तकान होना-हृदय पकड़ासा मालूम हो-अरुचि-खांसी-श्वास-अग्निका विषमहोना-अर्थात् कभी अन्न पचे कभी नहींपचे-कानों में शब्द होय-भ्रमहोय-तिस बवासीर करके पीडित मनुष्य के-पत्थर के समान-थोड़ा शब्द युत-औरबातकी प्रबाहिका के लक्षण संयुक्त-शूल-भाग-चिकना-इनलक्षणसंयुक्त हौलै हौलै दस्त होय-उस मनुष्य की त्वचा कारंग तथा नख-विष्ठा-मूत्र-नेत्र-मुख-ये काले होंय-गोला-तापतिल्ली-उदररोग-अष्ठीला (बातकीगांठ) यहरोगोंकेउपद्रवथा बवासीरमें होते हैं ॥२५॥

पित्तकीबवासीरकेलक्षण

पित्तोत्तरानीलमुखारक्तपीतासितप्रभाः। तन्वस्राविणोविस्रास्तनवोमृदवःश्लथाः॥२६॥
शुकजिव्हायकृत्खंडजलौकावक्त्रसन्निभाः।
दाहपाकज्वरस्वेदतृणमूर्च्छारुचिमोहदाः २७
सोष्माणोद्रवनीलोष्णपीतरक्तामवर्चसः। यवमध्याहरित्पीतहारिद्रत्वङ्नखादयः २८।

अर्थ- मस्सेनकामुखनीलाहो-औरलाल-पीला-सुपेदाई लियेहोवै-औरउन मस्सेनमें से महीनधारसैं रुधिर चुचाय-और उनमें रुधिर की बास आवे-महीन और कोमल होय-तथा सि

थिल हो- और उनका आकार तोता की जीभ- कलेजा- और जोक के मुख के समान हो- और देह मैं दाह होय- गुदा का पकना- ज्वर- पसीना- प्यास- मूर्च्छा- अरुचि- और मोहये होंय- और हातके स्पर्श करने सैं गरम- मालूम होवै और जिसके मलकाद्रव नीला- पीला- लाल- गरम- आमसंयुक्त होय- जवके समान बीच में मोटे हो- और जिसके त्वचा- नख- नेत्रादिक हरे- पीले- हरताल के समान- और हलदीके समान होंय- यहलक्षणपित्ताधिकबबासीरके हैं ॥१९॥

कफकीबबासीरके लक्षण

श्लेष्मोल्वणामहामूलाघनामन्दरुजःसिताः उत्सन्नोपचिताःस्निग्धाःस्तब्धावृत्तगुरुस्थिराः। पिच्छिलास्तिमिताःश्लक्ष्णाः कंड्वाढ्याःस्पर्शनप्रियाः। करीरपनसास्थ्याभास्तथागोस्तनसन्निभाः॥२०॥ बंक्षणानाहिनःपायुवस्तिनाभिविकर्षिणः। सश्वासकासहृल्लासप्रसेकारुचिपीनसाः २१ मेहकृच्छ्रशिरोजाड्यःशिशिरज्वरकारिणः। क्लैव्याग्निमार्दवच्छर्दिरामप्रायविकारदाः २२ वसाभसकफप्रा यपुरीषाःसप्रवाहिकाः। नस्रवंतिनभिद्यन्तेपाण्डुस्निग्धत्त्वगादयः२३

अर्थ- कफकीबवासीरकेलक्षण गुदाकेमस्से- महामूल (दूरधातुके प्रतिजाननेवाले) कठिन- मंद पीड़ाकेकरनेवाले- सपेद- लंबे- मोटे- चिकने- करडे- गोल- भारी- स्थिर- गाढ़े- कफसें लि

सामान्यतो बवासीर रोही खूनी द्विधा भवेत्। खूनी अपिच वातस्य विना कोपंनसंभवेत् ॥ १ ॥ इति यवनशास्त्रे

पटे - मणी के समान स्वच्छ - खुजली बहुत होय - और प्यारील गे - करील - कटहर - इनके कांटे के समान होय - गाय के थन के शद्दश होय - पेडूमें अफरा करने वाले - गुदा - मूत्रस्थान - और नाभिकूलमें पीड़ाकरनेवाले - श्वास - खांसी - ख्वाली ओकी - लारका टपकना - अरुचि - पीनस - इनको करनेवाले - प्रमेह - मूत्र - कृच्छ्र - मस्तक का भारी होना - शीतज्वर - नपुंसकपना - अग्निका मन्दहोना - बमन - और आम जिन में बहुत जैसें - अतिसार - संग्रहणी आदिरोगके करनेवाले - वसा (चर्बी) और कफ मिला दस्तहोवे - प्रवाहिका उत्पन्न करने वाले - और मस्सेन में सें रुधिर ननिकले - गाढ़ा मल होने सें भी मस्से न फूटें - और शरीरकारंग पीला और चिकना होय - ये कफ की बवासीर के लक्षण हैं ॥ २३ ॥

सन्निपात और सहजबवासीर केलक्षण

सर्वैःसर्वात्मकान्याहुर्लक्षणैःसहजानिच।

अर्थ - जो पूर्व बातादिक तीनों दोषों की बवासीरों के लक्षण कहे सो सब लक्षण - मिलते हों उस्को सन्निपात की बवासीर जानना और येही लक्षण सहज अर्श अर्थात् बवासीर के हैं ॥

रक्तार्शकेलक्षण

रक्तोल्वणागुदेकीला: पित्ताकृतिसमन्विताः
वटप्ररोहसदृशागुंजाविद्रुमसन्निभाः। ते ऽ
त्यर्थंदुष्टमुष्णंचगाढविट्कप्रपीडिताः २५स्र
वंतिसहसारक्तं तस्यचातिप्रवर्त्तितः। ✤। भे
काभःपीड्यतेदुःखैः शोणितक्षयसंभवैः २६
हीनवर्णबलोत्साहोहतौजाःकलुषेन्द्रियः।
विट्श्यावंकठिनंरूक्षमधोवायुर्नगच्छति। २७

अर्थ - गुदाके मस्सेन का रंग चिरमिठी के रंगके समान होय · अथवा बटके अंकुर से होंय - और पित्तकी बवासीर के लक्षण जिस में मिलते होंय + मूंगाके सदृशहोंय। और दस्त कठिन उतरनेसें मस्सेदबें तबउनमस्सों में से दुष्ट और गरमा गरमरुधिर पड़े- औररुधिरके बहुत पड़ने सें - बर्षा ऋतु के मेंड़का के समान पीलारंग होजाय - रुधिर के निकलने सें (जो प्रगटत्त्वचाका कठोरपना - नाड़ी का शिथिलपना - औरखद्दीवस्तु - तथा शीतकी इच्छा · इत्यादि दुःखतिनसें पीड़ित होय ·) हीन वर्ण · बल - उत्साह - पराक्रम का नाश होय - सम्पूर्ण इन्द्रियों का व्याकुल होना - उसका काला - कठिन - और रूखा - ऐसा मल होय · अपान बायुसरे नहीं - यहलक्षण रुधिर कीबवासीरके जानने चाहिये

अथरक्तार्शनिदानके बातादिभेदकरकेल·

तनुचारुणवर्णंचफेनिलंचासृगर्शसाम् । कट्यूरुगुदशूलंचदौर्बल्यंयदिचाधिकम् । तत्रानुबंधोवातस्यहेतुर्यदिचरूक्षणम् ।

अर्थ - बवासीरमें सें रुधिर थोडा - अरुणबर्ण - औरझागसंयुक्त निकले - और कमर · जांघ - औरगुदा - इनमें दर्द होय - यदि दुर्बलता विशेषहोजाय - औरउसमें कोई रूक्ष हेतु पहुंचा होय - तौ इसरक्तार्श को बात को सम्बध है ऐसें जानना ॥

कफसंबंधकेलक्षण

शिथिलंश्वेतपीतंचविट्स्निग्धंगुरुशीतलं यद्यर्शसांघनंचासृक्तंतुमत्पाडुंपिच्छिलम् गुदंसपिच्छंस्तिमितंगुरुस्निग्धंचकारणम् ॥ श्लेष्मानुबंधोविज्ञेयस्तत्ररक्तार्शसाम्बुधैः ३०

अर्थ- जिसमें सैं शिथिल-सफेद-पीला-चिकना-भारी-और-शीतल-असा दस्त होवै-और जिस बवासीर का रुधिर गाढा-तंतुयुक्त-पीला तथा चंवूलायुक्त निकले-और गुदा बवूला युक्त-गीली होय-और भारी-चिकनी असैं कोई कारण होने सैं तौ उस रक्तार्शको कफका सम्बन्ध जानना ॥ ३०॥ ✣ ॥ शंका ✣ क्यौंजी पित्तके अनुबंधकी बवासीर क्यौं नहीं कही ✣ उत्तर ✣ रक्त के और पित्त के प्राय करके समान लक्षण होने सैं नहीं कहे-क्यौं कि पहले २४ के श्लोक में कहि आये हैं कि (पित्ता कृतिसमन्विता) इति ॥

बवासीरका पूर्वरूप

विष्टंभोऽन्नस्यदौर्बल्यंकुक्षेराटोपएवच ।
कार्श्यमुद्गारबाहुल्यंसक्थिसादोऽल्पविट्कता
ग्रहणीदोषपांड्वर्तेराशंकाचोदरस्यच । ✣
पूर्वरूपाणिनिर्दिष्टान्यर्शसामभिवृद्धये ३२

अर्थ- अन्न का परिपाक अच्छी तरह होय नहीं-अन्न कूख मैं रहे-देहमें दुर्वलता होय-कूख में अफरा होय-अग्नि मंद होजाय-डकार बहुत आवैं-जंघा में पीड़ा-थोड़ा दस्त उतरे-संग्रहणी और पांडु रोगकी भ्रांति होना-क्यौंकि इनके लक्षण मिलने से और उदर रोगकी शंका होना-यह लक्षण होय तब जानना कि इस पुरुष के बवासीर रोग होयगा ॥३२॥

शंका ✣ केवल गुदा में दोषों के कोप से बवासीर रोग होय है फिर सब देह में कृशत्व और काला होजाना कैसें होताहैं ॥

उत्तर

पंचात्मामारुतःपित्तंकफोगुदबलित्रये ।
सर्वएवप्रकुप्यंतिगुदजानांसमुद्भवे ३३

तस्मादर्शांसिदुःखानिबहुव्याधिकराणिच
सर्वदेहोपितापीनिप्रायःकृच्छ्रतमानिच ३४

अर्थ- गुदाकेतीन आँटो में बवासीर के मस्से प्रगट होने सें पांच प्रकारकी वायु- पांच प्रकार का पित्त - पांच प्रकारकाक- फ- ये सब दोष कुपित होते हैं ॥ ३३॥

प्राण - अपान-समान-उदान- और व्यान- ये पांच प्रकार की बा यु - हृदय- गुदा- नाभि- कंठ- और सर्ब देह ये इनके क्रम से स्थान हैं- तथा- अलोचक - रंजक - साधक - पाचक - भ्रा जक- इन भेदों से पित्त पांच प्रकार का है - इनके स्थान- आलोचक नेत्रों में- रंजक- यकृत्- और प्लीह में -साधक-ह दय में- पाचक- पक्वाशय और आमाशय में- भ्राजक-त्वचामें रहता है- ऐसेंही कफ बी- अबलंपक - क्लेदक- बोधक- तर्प क- और श्लेषक- या पांच भेदके क्रम करके- हृदय - आमाशय- जीभ- मस्तक- और संधि- इन पांचो स्थान में रहे हैं- या प्रका र सबै दोष अपने अपने पांच पांच स्वरूप सें कुपित होते हैं- यासे येरोग(बवासीर) बहुत दुःख कारक और अनेक प्रकार की व्या धि (उदर और अग्नि मांद्य इत्यादि उपद्रव) कर्त्ता सर्बदेहको क्लेश दायक और विशेषकरकेकृच्छ्र साध्यतथा असाध्यजानने ३४

सुखसाध्यलक्षण

बाह्यायांतुवलौजातान्येकदोषोल्वणानिच
अर्शांसिसुखसाध्यानि नचिरोत्पन्नितानिच ३५

अर्थ- बाहर के आँटे में भई हो - एक दोषोल्वण होय औ र जिस को एक वर्षव्यतीतनभयाहो -ऐसीबवासीरसुखसाध्यहै ३५

कृच्छ्रसाध्यकेलक्षण

द्वंद्वजानिद्वितीयायांवलौयान्याश्रितानिच।

कृच्छ्रसाध्यानितान्याहुः परिसंवत्सराणिच ३६

अर्थ- दो दोष सें प्रगट भई हो- और दूसरीबली (अर्थात् आँटे में) होय- और जिसको एक वर्ष व्यतीत होगया हो- असीब वासीर के मस्से कृच्छ्र साध्य होय है और जो बाहर की बली में द्विदोषोल्वण होय- और एक दोषोल्वण दूसरीवली (आँटा) में होयतौ येभीकृच्छ्रसाध्य जानना ॥ ३६ ॥

असाध्यकेलक्षण

सहजानित्रिदोषाणियानिचाभ्यंतरांवलिम् ।
जायंतेऽर्शांसिसंश्रित्यतान्यसाध्यानिनिर्दिशेत्

अर्थ- सहज कहियेजन्म होनेके समय से जो होय- अथवातीनदोषों से प्रगट भई हो- औरजो तीसरा अंतका आँटाहै उसमेंभई हो- सो बवासीर असाध्य जाननी ॥ ३७ ॥

याप्यलक्षण

शेषत्वादायुषस्तानिचतुःपादसमन्विते । या
प्यंतेदीप्तकायाग्नेप्रत्याख्येयान्यतोऽन्यथा ३८

अर्थ- यदि असाध्यबवासीर होय और उस रोगी की आयुष्य बाक़ी होय- और चतुः पाद सम्पत्ति युक्त होय (बैद्य- औषध- परिचारक- और रोगी ये जैसे चाहियें असे होंय) तौ औररोगी की जठराग्निप्रदीप्त होय तौ रोगी याप्य जानना- और इससें बिपरीत होय तौ रोगीको वैद्यछोड़देय- प्रसंगवसतें- रोगी- बैद्य- औषध- औरदूतकेलक्षण कहे हैं ॥

वैद्योव्याध्युपसृष्टश्चभेषजंपरिचारकः । ए
तेपादाश्चिकित्सायाःकर्मसाधनहेतवः

तत्रादौबैद्यलक्षण

तत्वाधिगतशास्त्रार्थोदृष्टकर्मास्वयंकृती ॥

लघुः हस्तःशुचिःशूरःसज्जोपस्करभेषजः
प्रत्युत्पन्नमतिर्धीमानव्यवसायीप्रियंवदः। स
त्यधर्मपरोयश्चवैद्यईदृक्प्रशस्यते

अर्थ- गुरु से भले प्रकार शास्त्र को पढ़ा होय- और दूसरे वृद्धवैद्य की चिकित्सा अर्थात् इलाज जिसने देखा होय और आपचिकित्सा करने में चतुर होय- तथा सिद्ध हस्त होय- अर्थात् जारोगी का इलाज करे सो शीघ्र अच्छा हो जाय- पवित्र रहै- शूर हो- श्रेष्ठ औषधि (चन्द्रोदय आदिरसादिक) सामग्री जिसके समीप रहा करे तत्काल जिसकी बुद्धी स्फुरण वाली होय- बुद्धिमान्- संसार के व्यवहार को जानने वाला होय- प्रिय बचन बोलने बाला - सत्य और धर्मका आचरणकरनेवाला- ऐसा बैद्य प्रशंसाके योग्य होयहै।

निषिद्धबैद्यकेलक्षण

कुचैलःकर्कशःस्तब्धोकुग्रामीस्वयमागतः
पंचवैद्यानपूज्यन्तेधन्वन्तरिसमाअपि॥ ःः।

अर्थ- मैलेबस्त्रवाला- बुराबोलनेवाला- अभिमानी- व्यवहारमें न समझै- और जो बिना बुलाये आवै- ये पांच वैद्य श्रीधन्वंतरि के समान भी होंय तौभी पूजने योग्य नहीं हैं॥

रोगीकेलक्षण

आयुष्मान्सत्ववान्साध्योद्रव्यवानात्मवानपि
उच्यतेव्याधितःपादोबैद्यवाक्यकृदास्तिकः

अर्थ- जिसकी आयु बाक़ी होय- बलयुक्त होय- और साध्य हो- द्रव्यवान्- ज्ञानी हो- वैद्य का आज्ञा कारी होय- और आस्तिक हो- ऐसा रोगी होय॥

उत्तमऔषधकेलक्षण

प्रशस्तदेशसंभूतंप्रशस्तेहनिचोद्धृतम् ःः

अल्पमात्रंबहुगुणंगंधवर्णरसान्वितम् ॥

अर्थ- उत्तम स्थान में प्रगट भई होय- और शुभ दिन में उसको उखाड़ी होय- थोड़ा मात्रा देने सें बहुत गुण करै- दुर्गंधरहित- उत्तम स्वरूप- और रस युक्त होय सो औषध उत्तम है ॥

दुष्ट औषधकेलक्षण

वल्मीककुत्सितानूपश्मशानोखरमार्गजा:।
जंतुवन्हिहिमव्याप्तानौषध्य:कार्यसाधका:

अर्थ- इतने स्थान की औषध कार्य कर्त्ता नहीं होती- बांबी- खोटी धरती की- जल के समीप की- श्मशान की- ऊसर को जहां रेह चूना निकलता होय तहां की- और रास्ते की- कीड़ों की खाई अग्नि से जरी भई- जाड़े की मारी- ऐसी औषध कार्य करने वाली नहीं होती है

अथवृत्तकेलक्षण

स्निग्धोजुगुप्सुर्बलवान्युक्तोव्याधितरक्षणे।
वैद्यवाक्यकृदश्रांत:पाद:परिचर:स्मृत: ॥

अर्थ- नवीन अवस्था का- बलवान्- रोगी की रक्षा करने में तत्पर होय- वैद्य के बचन का करने वाला होवै- आलस्यरहित- ऐसा परिचारक अर्थात् वृत्त होय- ॥ इन पूर्वोक्त को चतुष्पादसम्पत्ति कहते हैं- सो यह बिना आयु शेष के नहीं मिलते ॥

अथउपद्रवसें असाध्यत्व कहतेहैं ॥

हस्तेपादेगुदेनाभ्यांमुखेवृषणयोस्तथा। शोथो
हृत्पार्श्वशूलंचतस्यासाध्योऽशसोहिस:॥

अर्थ- जिसके हाथ-पैर- गुदा- नाभि- मुख- और- अंडकोश- इनमें सूजन हो- हृदय- और पसवाड़े- दूखें- बोरोगी असाध्य जानना ॥ ॥

हृत्पार्श्वशूलंसंमोहश्छर्दिरंगस्यरुकज्वरः।
तृष्णागुदस्यपाकश्चनिहन्युर्गुदजातुरम्।

अर्थ- हृदय- और पसवाड़ेमें दर्द होय- इन्द्री और मन इन मैं मोह होय- वमन- अंगों में पीड़ा- ज्वर- प्यास- गुदा- का पकना- (अर्थात् गुदा के ऊपर पीले फोड़ा) ये लक्षण होने सैं बवासीर वाला रोगी असाध्य जानना ॥

तृष्णारोचकशूलार्त्तमतिप्रस्रुतशोणितं।शो
थातिसारसंयुक्तमर्शांसिक्षपयंतिहि॥

अर्थ- प्यास- अरुचि-शूल- इनसे पीडित जिसके अत्यंत रुधिर बहै- और सूजन अतिसार ये होंय उस रोगी का बवासीर नाश करदेय है ॥

मेढ्रादिष्वपिवक्ष्यंतेयथास्वंनाभिजान्यपि । गं
डुपदास्यरूपाणिपिच्छिलानिमृदूनिच ।

अर्थ- मेढ्र कहिये लिंग आदि शब्द करके- नाक-कान-इत्यादि स्थानों में दोष भेद करके बवासीर होती है सो आगे कहेंगे- उसी प्रकार नाभि स्थान में भी अर्श रोग होता है यह कैंचुए के मुख के समान गाढो और नरम होय है ॥

चर्मकीलकीसंप्राप्ति

व्यानोगृहीत्वाश्लेष्माणंकरोत्यर्शस्त्वचोवहिः
कीलोपमंस्थिरखरंचर्मकीलंतुतद्विदुः

अर्थ- व्यान वायु कफ को लेकर त्वचा में कील के सदृश स्थिर और खरदरी ऐसी बवासीर को करे उसको चर्म कीलक कहते हैं (त्वचोवहि) इसके कहनेसे गुदा होठका त्याग करना ॥

वातादिभेदकरकेउस्के लक्षण

वातेनतोदपारुष्येपित्तादसतिरक्तता ।श्ले
ष्मणास्निग्धताचास्यग्रथितत्वंसवर्णता

अर्थ- बात सें उसमें सुई के चुभाने सें जैसी पीड़ा होय ऐसी पीड़ा हो पित्त सें कठोरता होय- और कफ सें काला- और कुछ लाल तथा चिकनी गांट के समान- देह के बर्ण के समान बर्ण होय ॥

इतिश्रीपण्डितदत्तराममाथुरप्रणीतमाधवार्थबोधनीमाथुरीभाषाटीकायां अर्श रोगसमाप्तः

अर्श रोग सें मन्दाग्निहोतीहै
इसीसे मन्दाग्नि आदिरोगोंकोकहैंहैं

मन्दस्तीक्ष्णोथविषमःसमश्चेतिचतुर्बिधः।
कफपित्तानिलाधिक्यात्तत्साम्याज्जाठरोनलः

अर्थ- मनुष्य के कफ की प्रकृति सें मन्दाग्नि- पित्त की सें तीक्ष्णाग्नि- बात की प्रकृति सें- विषमाग्नि- तथा बात- पित्त- कफ- इन के समान होने सें समाग्नि होय है- ऐसें अग्नि चार प्रकार की है- इस में मन्दाग्नि को दुर्जय होने सें प्रथम कही- और (जाठर) शब्द कहने सें- धातु की अग्नि का त्याग जानना ॥

अजीर्णरोग

विषमोवातजान्रोगान् तीक्ष्णःपित्तनिमित्त
जान् । करोत्यग्निस्तथामन्दोबिकारान्क
फसंभवान् २

अर्थ- बिषमाग्नि बातजन्य ८० रोगोंमें से कोई रोग प्रगट करै- और सामान्य ज्वरातिसारादिक को प्रगट करे- तीक्ष्णाग्नि पित्त के ४० रोगों में से कोई रोग प्रगट करे- इसी प्रकार मन्दाग्नि कफजन्य २०

रोगों में से किसी रोग को पैदा करै और आलस्यादिककोउत्पन्नकरे

समाग्न्यादिकोंकेलक्ष॰

समासमाग्नेरशितामात्रासम्यग्विपच्यते। स्व
ल्पापिनैवमन्दाग्नेर्विषमाग्नेस्तुदेहिनः॥ क
दाचित्पच्यतेसम्यक्कदाचिन्नविपच्यते। मा
त्रातिमात्राप्यशितासुखंयस्यविपच्यते ४ ती
क्ष्णाग्निरितितंविद्यात्समाग्निःश्रेष्ठउच्यते। ÷

अर्थ- समाग्नि वाले पुरुष के यथोचित आहार भले प्रकार पाच न होय- और मंदाग्नि वाले पुरुष के थोड़ा भी आहार यथार्थ नहीं पचे- और विषमाग्नि वाले मनुष्य के कभी तो अच्छी तरह सैं अच्छ पचजाय- और कभी नहीं पचे- और बहुत भोजन कराभी जिसके सुख पूर्वक पचजाय उसको तीक्ष्ण अग्नि कहते हैं- इनचारों प्रकारकी अग्नि मैं समाग्नि उत्तम हैं ॥४॥ तीक्ष्णाग्नि के कहने सैं भस्मक का ग्रहण नहीं करना चाहिये क्योंकि अत्यंत तीक्ष्णाग्निको भस्मक कहते हैं- उसके लक्षण चरक मैं कहे हैं -

यथा

नरेक्षीणकफेपित्तंकुपितंमारुतानुगं ५ सो
ष्मणापाचकस्थानेबलमग्नेःप्रयच्छति। त
दालब्धबलोदेहंरूक्षयेत्सानिलोऽनलः ६
अभिभूयपचत्यन्नंतैक्ष्ण्यादाशुमुहुर्मुहुः। प
क्वान्नंसततोधातून्शोणितादीन्पचत्यपि ७
ततोदौर्बल्यमातंकंमृत्युंचोपानयेत्नरम्। भु
क्तेऽन्नेलभतेशांतिंजीर्णमात्रेप्रताम्यति ८ तृड्
- कासदाहमोहाःस्युर्व्याधयोऽत्यग्निसंभवाः

अर्थ- समाग्निवाले पुरुषके यथोचित आहारभले प्रकार पाच

सें मिलकर उष्मा के साथ पाचक स्थान में आयकर अग्नि को बल देय तब जठराग्निबाल की सहायता पायकर प्रबल होकर देह को रूखा करदेय - और ताके जोर सें बारंबार अन्न को पचावै अन्नको पचाय पीछै रुधिर आदि धातु को पचावै - रुधिर आदिके पचनें सें देह में दुर्बलता - रोग - और मृत्यु को मनुष्य प्राप्त होय - जब अन्न को खाय तबतौ शांति होजाय - और जब अन्न पचजाय तब मूर्च्छि तहोय - प्यास - खांसी - दाह - मोह (अर्थात् कुछ सुध न रहै) ये रोग अत्यंत अग्नि सें होय है ॥ ६ ॥

इतिश्रीपण्डितदत्तरामामाथुरनिर्मितमाधवार्थबोधनीमाथुरीभाषाटीकायांअग्निमांद्यनिदानम्

अथअजीर्णनिदानं

अग्निमांद्य और अजीर्ण इनका परस्पर कारण है
इसीसे अग्निमांद्य के पीछे अजीर्णनिदानको कहते हैं

आमंविदग्धंविष्टब्धंकफपित्तानिलैस्त्रिभिः
अजीर्णंकेचिदिच्छंतिचतुर्थंरसशेषतः १
अजीर्णंपंचमंकेचिन्निर्दोषंदिनपाकिच ।
वदंतिषष्ठंचाजीर्णंप्राकृतंप्रतिवासरम् २

अर्थ - मनुष्य के कफ सें आम - पित्त सें विदग्ध - बात सें विष्टब्ध ऐसें तीन प्रकार का अजीर्ण रोग होता है - और जो भोजन करा सो पक्क होय नहीं रस शेष रहै - सो रस शेष सें चतुर्थ अजीर्ण होय है - और रात्रि दिन में जो आहार पचै और जिस में अफरा - हड फूटन - कु छन होय - ये पांचवां अजीर्ण किसी के मत में है - और जो नित्यही

स्वाभाविक अजीर्ण रहै (बिकृतिजन्यनहोय) उसको रूटा अजीर्ण कहते हैं - इसअजीर्ण के पचाने के अर्थ (सुश्रुत) में वामपार्श्वे शयनादिक उपाय कहे हैं सोकरने चाहियें ॥

यथा

भुक्काशतपदंगच्छेद्वामपार्श्वेनसंविशेत् । शब्दरूपरसस्पर्शगंधांश्चमनसःप्रियान् । भुक्तवानुपसेवेततेनान्नंसाधुतिष्ठति ॥

अर्थ - भोजन करे पीछे सौ पैंड डोलना - वांई करवट शयन करना - अपने मन को जो प्रिय शब्द - रूप - रस - स्पर्श - सुगंध - उन को सेवन करना - या प्रकार करने सें अन्न भले प्रकार पचे हैं ॥

अजीर्णकेकारण

अत्यंबुपानाद्विषमाशनाच्चसंधारणात्स्वप्नविपर्ययाच्च । कालेपिसात्म्यंलघुचापिभुक्तमन्नंनपाकंभजतेनरस्य ३ ईर्ष्याभयक्रोधपरिक्षितेन लुब्धेनशुक्रदैन्यनिपीडितेन । प्रद्वेषयुक्तेनचसेव्यमान मन्नंनसम्यक्परिपाकमेति ४ ॥

अर्थ - बहुत जलपीने सें - भोजन के समय को छांड़ पीछे भोजन करने सें - मल - मूत्र - आदि वेगों के रोकने सें - दिन में सोवने सें रात में जागने सें - इन कारणों सैं भोजन के समय यदि लघु और शीतल पदार्थ खावसौ अन्न अच्छीरीतिसैं नहिं पचे - ये देहके कारण कहे ॥ ३ ॥ अब अजीर्ण के कारण जो मन सैं सम्बन्धरास्वते हैं उनको कहते हैं - ईर्ष्या कहिये पर द्रव्य को न देख सकना - डरना - क्रोधकरना - इन कारणों सें - तथा - लोभ - शोक - दीनता - इन कारणों सें - और मत्सरता करना - इन कारणों सैं मनुष्य के भोजन करभया - अन्न भले प्रकार पचता नहीं हैं ॥ ४ ॥

आमादिक अजीर्णों केलक्षण

तत्रामेगुरुतोत्क्लेदः शोथागंडाक्षिकूटगः । उ
द्गारश्चयथाभुक्तमविदग्धःप्रवर्तते ५

अर्थ- तिन चारों अजीर्ण में प्रथम आमाजीर्ण के लक्षण कहते हैं- पेट और अंग भारी होंय- वमन का आना- ऐसा प्रतीत हो-क पोल- और नेत्रों पे सूजन होवै- और इसी अजीर्ण के प्रभाव सैं जैसा भोजन करो होय मीठा आदि उसी प्रकार की डकार आवै ॥ ॥ ५ ॥ ॥

बिदग्धाजीर्णकेलक्षण

बिदग्धेभ्रमतृण्मूर्च्छाःपित्ताच्चबिबिधारुजः
उद्गारश्चसधूमाम्लः स्वेदोदाहश्चजायते ६

अर्थ- विदग्ध अजीर्ण में भ्रम- प्यास- और मूर्च्छा ये लक्षण होते हैं - और पित्तके अनेक रोग प्रगट हों- तथा धूंए के साथख ट्टी डकार आवैं- पसीना आवै और दाह होय ॥ ६ ॥

बिष्टब्धअजीर्णकेलक्षण

बिष्टब्धेशूलमाध्मानंबिबिधाबातबेदनाः ॥
मलवातप्रवृत्तिश्चस्तंभोमोहोऽगपीडनम् ७

अर्थ- बिष्टब्ध अजीर्ण के यह लक्षण हैं-शूल- अफरा- अने क बात की पीड़ा- मल और अधोवायु का रुक जाना- देह जकड़ जाय- मोह- और देह में पीड़ा होय ॥ ७ ॥

रसशेषअजीर्णकेलक्षण

रसशेषेऽन्नविद्वेषोहृदयाशुद्धिगौरवे ÷

अर्थ- रस शेष अजीर्ण के यह लक्षण हैं- अन्नमैं अरुचि-हृ दय में शुद्धि न होय- और देह भारी होय ॥

अजीर्णकेउपद्रव

मूर्च्छाप्रलापोवमथुःप्रसेकःसदनंभ्रमः॥
उपद्रवाभवंत्येतेमरणंचाप्यजीर्णतः॥ ८ ॥

अर्थ- मूर्छा- बड़बड़- ओकारी अर्थात् वमन- लारका गिरना- ग्लानि- भ्रम- ये अजीर्ण के उपद्रव हैं और बहुत बड़ा अजीर्ण मनुष्य को मार भी डालता है॥ ८॥

बहुतभोजनही अजीर्णका हेतुहै उसीकोकहतेहैं

अनात्मवंतःपशुवद्भुंजतेयेऽप्रमाणतः। रोगानीकस्यतेमूलमजीर्णंप्राप्नुवंतिहि॥ ९ ॥

अर्थ- जिन मनुष्यों को इन्द्री स्वाधीन नहीं हैं वे पशुकेसमान वे अन्दाज भोजन करते हैं तिनके अनेक रोगों का कारण अजीर्ण रोग प्रगट होय है ॥९॥

अब कहते हैं कि अजीर्ण रोग से विषूचिका रोरोग की उत्पत्ति होय है यासें अजीर्णकेअनंतर

बिषूचिकाकोकहेहैं

अजीर्णमामंविष्टब्धंबिदग्धंचयदीरितम्। बिषूच्यलसकौतस्माद्भवेच्चापिविलंबिका

अर्थ- आम- बिष्टब्ध और बिदग्ध ये जो अजीर्ण कहे हैं - उन सें विषूचिका (हैजा) अलस- और विलंबिका पैदा होय हैं इन में चौथा रस शेष अजीर्ण को बिषूच्या दिकउत्पादकनहींलिखाहै इसकाकारणयहहै किउसरसाजीर्ण को अपरिणाम मात्रत्व करके बिषूचिका आदिके आरंभत्वस्वभावादि को पमतके कहने सें + आम बिदग्ध और विष्टब्ध इन सें क्रमपूर्वक विषूचिका अलस- बिलंबिका- ये प्रगट होय हैं ऐसेंका

निक कुंड आचारी कहता है सो असत्य है क्यौं कि बिदग्धाजी र्णको बिलंबिकाकाप्रगटकरना असम्भव है क्यौं कि उस विलंबि काको आमोकफ बात सें प्रगट कहेंगे और बिदग्ध भाव कोपि त्त जन्यता है यासें ये मत मन्तव्य नहीं है ॥ इसी कारण ती नों अजीर्ण मिलकर बिषूचिका आदिको प्रगटकरते हैं य ह वकुल आचारी का मत है ॥

बिषूचिकाकी निरुक्ति कहते हैं

सूचीभिरिवगात्राणितुदन्संतिष्ठते ऽ निलः
यत्राजीर्णेचसावैद्यैर्बिषूचीतिनिगद्यते । ११।

अर्थ- जिस अजीर्ण में बादी देह को सुईके सदृश पीड़ा देय अर्थात् सुई सी चुभै उस्को वैद्य बिशूचिका कहते हैं ११

नतांपरिमिताहाराल्लभंते बिदिताागमाः । मू
ढास्तामजितात्मानोल्लभंते ऽ शनलोलुपाः

अर्थ- जिनका आहार परिमाणका है और जे बैद्य विद्याके कहने पर चलते हैं उनके कदाचित् बिषूचिकारोग नहीं होय औ र जो अज्ञानी तथा जिनकी इन्द्री वसमें नहीं और जो भोजन के लालची हैं ऐसैं मनुष्यों के यह विषूचिका रोग अव श्यहोयहै १२॥

बिषूचिकाकेलक्षण

मूर्च्छातिसारोवमथुः पिपासा । शूलभ्रमोद्वे
ष्टनजृंभदाहाः ॥ वैवर्ण्यकंपौहृदयेरुजश्च
भवंतितस्यांशिरसश्चभेदः १३

अर्थ- मूर्च्छा- अतिसार- वमन- प्यास - शूल- भ्रम - जां घों में पीड़ा- जंभाई - दाह - देहकाविवर्ण - कम्प- हृदयमेंपी

ड़ा - और मस्तकमें पीड़ा ये लक्षण हों उसको बिषूचिका कह ते हैं - इसी को महामारी - अथवा हैजा कहते हैं १३॥

अलसकेल्लक्षण

कुक्षिरानह्यतेऽत्यर्थं प्रताम्येत्परिकूजति।
निरुद्धोमारुतश्चैवंकुक्षावुपरिधावति १४
बातवर्चोनिरोधश्चयस्यात्यर्थंभवेदपि॥त
स्यालसकमाचष्टेतृष्णोद्गारौतुयस्यच

अर्थ - कूख में और पेट में अफरा हो - मोह होय - पीड़ा से पुकारे पवन चलने से रुककर कूख में और कंठादिस्थानों में फिरै - मल मूत्र और गुदा की पवन रुके - प्यास बहुत लगे - डकार आवे - ये लक्षण जिस में होंय उसको अलसकरोग कहते हैं १५

बिलंबिकाकेल्लक्षण

दुष्टंतुभुक्तंकफमारुताभ्यां - प्रवर्त्ततेनोर्ध्व
मधश्चयस्यां॥ बिलंबिकांतांभृशदुश्चिकि
त्स्यामाचक्षतेशास्त्रविदःपुराणाः

अर्थ - जिस मनुष्य के भोजन कराभया अन्न - कफ - वात - करके दूषित होय ऊपर नीचे नहीं जाय - अर्थात् - वमन - विरेचन न होय - उस्को बैद्य बिद्या के जानने वाले जिसकी चिकित्सा नहीं ऐसी बिलंबिका रोग कहते हैं ॥ ✣ ॥ कोई शंका करे कि - अलसक - और बिलंबिका इन दोनों को बात - कफ के प्रबल होने से ऊपर नीचे प्रवृत्ति होती है इन दोनों में भेद कहा है सो कहो ✣ उत्तर ✣ अलसक में शूल आदि घोर पीड़ा कर्त्ता होते हैं - और बिलंबिका में नहीं होइ तना ही भेद है ॥ १६ ॥

अजीर्ण सैं प्रगट बिषूच्यादि को कहिकर अजीर्ण जन्य

आमकेदूसरेकार्यांतरकहैहैं

यत्रस्थमामंबिरुजेत्तमेवदेशंबिशेषेणवि
कारजातैः। दोषेणयेनावततंशरीरंतल्लक्ष
णैरामसमुद्भवैश्च २७॥

अर्थ- जिस ठिकाने पर आम रहता है उस ठिकाने पर जिस दोष सैं बह स्थान व्याप्त हो उसके लक्षण करके (पीड़ा- दाह- गौरव आदि) और आम जन्य बिकार करके (आम बातादिक) बिशेष पीड़ा होती है यासैं जाना गया कि और ठिकाने पर थोड़ी पीड़ा होती है- और (यत्र) या सर्व नाम शब्द सैं कुपित भये वातादिकों के सदृश आमका कोई स्थान नहीं है ये दिखाया ॥ २७ ॥

अबबिषूचिकाऔरअलसकइन केअसाध्यलक्षण

यःश्यावदंतोष्ठनखोऽल्पसंज्ञो वम्यर्दितोऽ
भ्यंतरयातनेत्रः॥ क्षामस्वरःसर्वविमुक्तसंधि
र्यायान्नरोऽसौपुनरागमाय॥ २८॥

अर्थ- जिस रोगी के दांत-नख-होठ-काले पड़जांय- और संज्ञा जाती रहै- वमन सैं पीड़ित होय- और नेत्र भीतर को बैठ जांय-मन्द स्वर हो- तथा हाथ- पैर की संधि ढीली पड़ जांय वो मनुष्य बचै नहीं- विलम्बिका स्वरूप सैंहीं असाध्य है- यह जेज्जट आचार्य का मत है ॥२८॥

निद्रानाशोऽरतिःकम्पोमूत्राघातोविसंज्ञिता
अमीउपद्रवाघोराःविषूच्यांपंचदारुणाः॥प्रा
येणाहारबैषम्यादजीर्णंजायतेन्नृणाम् ॥ त

न्मूलो रोगसंघातास्तद्विनाशाद्विनश्यति १८ ॥

अर्थ- निद्राकानाश - मनकानलगना - कम्प - मूत्रकारुकना - संज्ञाकानाश - ये विषूचिका के घोर पांच उपद्रवहैं ✣ बहुधा भोजन की बिषमता सैं अजीर्ण रोग मनुष्यों के होता है-व ही अजीर्ण सब रोगों का कारण है- उस अजीर्ण रोगके नाशहो ने सैं सब रोगों का नाश होय है ॥१८॥

ये दोनोंश्लोकक्षेपकहैं

अजीर्णजातारहाउस्केलक्षण

उद्गारशुद्धिरुत्साहोबेगोत्सर्गौयथोचित्तः ॥
लघुताक्षुत्पिपासाचजीर्णाहारस्यलक्षणम् ✣

अर्थ- शुद्ध डकार आवै - शरीर मन का प्रसन्न होना-जैसा भोजन करा हो उसके सदृश - मल-मूत्र की भले प्रकार प्रवृत्ति होना- शरीर हलका होय परंतु कोष्ठ बिशेष हलका हो- भूख और प्यास लगे- ये अन्न जबभले प्रकार पच जाय तब यह लक्षण होते हैं ॥१९॥

इतिश्रीपण्डितदत्तरामसमाथुरप्रणीतमाथुरीमाधवार्थबोधनीटीकायांअजीर्णरोगनिदानम्

अजीर्णरोगसेक्रमिरोग

प्रगट होय है इसी सैं अजीर्ण रोग के अनंतर क्रमिरोगकहैहैं

क्रमयस्तुद्विधाप्रोक्ताबाह्याऽभ्यंतरभेदतः।
बहिर्मलकफास्रग्विटजन्मभेदाच्चतुर्विधाः१
नामतोविंशतिबिधा

अर्थ- क्रमि रोग दो प्रकार का है एक बाहरका दूसराभीतरका

तहाँ बाहर के मल (पसीना आदि) और कफ-रुधिर-बिष्ठा- इन कारणों से वहि कृमि रोग चारि प्रकार का है उनके नाम बीस प्रकार के हैं ॥

बाह्यकृमीकेनाम

वाह्यास्तत्रमलोद्भवाः॥ तिलप्रमाणसंस्थानव र्णाः केशांबराश्रयाः ॥२॥ बहुपादाश्चसू-क्ष्माश्चयूकालिक्षादिनामतः ॥ द्विधातेकुष्ठ पिटिकाकंडूगंडान्प्रकुर्वते ३

अर्थ- तहाँ बाहर के मल सैं प्रगट कृमि-तिलके प्रमाणश्वेत- काली- केश और वस्त्र में रहने वाली होती है- तथा बहुत पैर की और छोटी जूं- लीख- नाम सै प्रसिद्ध दो प्रकार की है- ये कृमि रोग कोढ़-पीडिका- खाज- गाँठ इत्यादि रोग प्रगट करै है ॥३॥

कृमिरोगकाकारण

अजीर्णभोजीमधुराम्लनित्योद्रवप्रियःपिष्ट गुडोपभोक्ता ॥ व्यायामवर्जीचदिवाशयानो-विरुद्धभुक्संलभतेकृमींस्तु ४

अर्थ- अजीर्ण में भोजन करै- प्रतिदिन मीठा-खट्टा-खाय-तथा पतला पदार्थ (जैसे- कढ़ी- रायता- आदि) खाय-पिसा अन्न मैदा आदि और गुड़के पदार्थ खाय- और भोजनकरके परिश्रम न करै दिन में सोवै- विरुद्ध भोजन जैसे-दूधमछली आदि को खाय- ऐसें पुरुष के कृमिरोग प्रगट होय है ॥४॥

कौनकारणसेंकौनसीकृमिप्रगटहोयहै

माषपिष्टान्नलवणगुडशाकैःपुरीषजाः। मांसमाषगुडक्षीरदधिशुक्तैःकफोद्भवाः॥ बि

रुद्धाजीर्णशाकाद्यैःशोणितोत्थाभवंतिहि ५

अर्थ- उरद - पिसाअन्न -(लड्डू- घेवर-गूंझाआदि) नोनके - गुड़के- तथा शाक आदि ऐसे पदार्थ खाने सें - मलकीकृमिरोग प्रगट होय है ॥ मांस- उड़द- गुड़- दूध- दही- कांजी- ऐसे पदार्थ खाने सें कफ की कृमि पैदा होती है ॥

बिरुद्ध पदार्थ जैसें दूध मछली- और आधा कच्चा आधापक्का - शाक जैसें हरा चनेका- आदि ऐसे भोजन सें रुधिरजन्यकृमि पैदा होय है ॥ ५ ॥

पेटमेंकृमिपड़गईहोउसका लक्षण

ज्वरोविवर्णताशूलंहृद्रोगःसदनंभ्रमः।भक्तद्वेषोऽतिसारश्चसंजातकृमिलक्षणम्

अर्थ- ज्वर हो- शरीरकारङ्ग और ही प्रकार का हो जाय- शूल हृदय दूखे - बमन कीसी इच्छा हो- भ्रम- भोजन बुरा लगे- दस्त होंय- ये लक्षण जिसके पेट में गिंडोहा आदि कृमि पड़ जांय उस्के होते हैं ॥ ६ ॥

कफकीकृमिकेलक्षण

कफादामाशयेजाताबृद्धाःसर्पंतिसर्वतः।ए
थुवर्ध्मनिभाःकेचित्केचिद्गंडूपदोपमाः।१।
रूढधान्यांकुराकारास्तनुदीर्घास्तथाणवः॥
श्वेतास्ताम्रावभासाश्चनामतःसप्तधातुते।अं
त्रादाउदरावेष्टाःहृदयादामहारुजः।चुरवो
दर्भकुस्मकाःसुगंधास्तेचकुर्वते ६ हृल्लास
मास्यस्त्रवणमाबिपाकमरोचकं।मूर्छाच्छ
र्दिज्वरानाहकार्श्यंक्ष्वथुपीनसान्

अर्थ- कफ सें आमाशय में प्रगट भई कृमि जब बढ़ जाय है तब चारौ तरफ डोलती है- कोई चामके सदृश- कोई गिंडोहेके आकार- कोई धान्यके अंकुरके समान होती है- कितनी छोटी- बड़ी- चौड़ी होती है और किसीका बर्ण श्वेत- किसीका तामेके समान होय है- उन्होंके सात नाम हैं- सो इस प्रकार- १ अंत्राद २ उदरावेष्ट ३ हृदयाद ४ महास्त्र ५ चुरु ६ दर्भकुसुम और ७ सुगंध- ये नाम कोई सार्थक है- और कोई निरर्थक है- ब्यवहार के निमित्त पहले आचार्य्यों ने कहे हैं- इन कृमीन सें बमन की सी इच्छा होय- मुखसें पानी गिरै अन्नका पाक न होना- अरुचि- मूर्च्छा- बमन- प्यास- अफरा- शरीर कृश होय- सूजन- और पीनस- इतने बिकार होंय ॥ १०॥

रुधिरकीकृमिकेलक्षण

रक्तवाहिशिरास्थानारक्तजाजंतवोऽणवः। अ
पादावृत्तताम्राश्चसौक्ष्म्यात्केचिददर्शनाः ॥
केशादारोमबिध्वंसारोमद्वीपाउदुंबराः। षट्
तेकुष्ठैककर्माणःसहसौरसमातरः ११

अर्थ- रुधिर की बहने वाली नाड़ीन्में रुधिरसें प्रगट कृमि बारीक- पादरहित- गोल- तांमेके रंगके होते हैं- कोई बहुत बारीक होती है। वो देखने से भी नहीं दीखे- ये कृमि छः प्रकारकी है- उनके नाम ये हैं- १ केशाद २ रोमबिध्वंस ३ रोमद्वीप ४ उदुंबर ५ सौरस और ६ मातर- ये कुष्ट को पैदा करती है ॥ ११॥

बिष्टासैप्रगटकृमिकेलक्षण

पक्वाशयेपुरीषोत्थाजायंतेऽधोविसर्पिणः।
प्रवृद्धाःस्युर्भवेयुश्चतेयदाऽमाशयोन्मुखाः
तदास्योद्गारनिश्वासाविड्गंधानुबिधायिनः।

पृथुब्रध्नतनुस्थूलाः श्यावपीतसितासिताः। ते
पंचनाम्नाकृमयः ककेरुकमकेरुकाः॥सौसु
रादामलूनाख्यलेलिहाजनयंतिच २५ विड्भेद
शूलविष्टंभकार्श्यपारुष्यपांडुताः। रोमहर्षाग्नि
सदनगुदकंडूर्विमार्गगाः २६

अर्थ- पक्वाशय में बिष्टासैं प्रगटकृमि गुदाके मार्ग होकर बाहर- निकसती है जब यह बढ़जाती है तब आमाशय में --- प्राप्त होकर- डकार और श्वाससैं विष्टा कीसी बास आने लगती है- ये कृमि - बड़ी - छोटी - गोल - मोटी- रंग में काली- पीली - सफेद- नीली होती है- इनके पांच नाम हैं- १ ककेरुक २ अककरुक ३ सौसुरा ४ मलून ५ लेलिह। जबये कृमि मार्ग को छोड़ अन्य मार्ग में जाते हैं- तबइतने रोग प्रगट करे हैं- दस्तका पतला होना- शूल- अफरा- देहमें कृशता- तथा देहमें कठोरता- पांडुरोग- रोमांच- मंदाग्नि- और गुदामें खुजली का होना २६॥

इतिश्रीपण्डितदत्तरामभाथुरप्रणीतमाधवार्थबोधनीभाषाटीकायांकृमिरोगनिदानंसमाप्तम् ॥

अथपांडुरोगनिदानम्

पांडुरोगाः स्मृताः पंच वातापित्तकफैस्त्रयः।
चतुर्थः सन्निपातेन पंचमोभक्षणान्मृदः १

अर्थ- मलसैं प्रगटकृमिरोग पांडु (पीलिया) रोग को प्रगट करै है- इसी कारण कृमिरोगके अनंतर पंडुरोगका निदान कहै हैं- तहां प्रथम पांडुरोगकी संख्या रूप सम्प्राप्ति कहते हैं-१ वातका २ पित्त-

का ३ कफका ४ सन्निपातका और ५ माटी के खाने सैं ऐसें पांडु रोग पांच प्रकार काकहाहै

पांडुरोगकेकारणओरसंप्रा•

व्यवायमम्लंलवणानिमद्यं मृदंदिवास्वप्नमती वतीक्ष्णम् ॥ निषेव्यमाणस्यविदूष्यरक्तंदोषा स्त्वचंपांडुरतांनयंति ॥२॥

अर्थ- अतिमैथुन- खट्टे पदार्थ का भोजन - नोनका पदार्थ खानेसैं- बहुत मद्य पान करने सैं- मट्टी खाने सैं- दिनमेंसोने सैं- अत्यंत तीखा पदार्थ खाने सैं- इनकारणों से तीनों दोष रुधिर को बिगाड़दे हकी त्वचा को पीले रंगकी कर देते हैं- इसजगह रुधिरकातौ उ पलक्षण मात्र है रक्तकेकहनेसैंत्वचा- मांस- इनको दूषितकरते हैं। हारीतने- रसको दूष्य कहा है- दोष नाम बातादिक- औरदू ष्य कहिये-रसरक्तादि-

पूर्वरूप

त्वक्स्फोटनष्ठीवनगात्रसादमृद्भक्षणप्रेक्षण कूटशोथाः ॥ विण्मूत्रपीतत्वमथाविपाको भ विष्यतस्तस्यपुरःसराणि ॥ ३ ॥

अर्थ- त्वचाकाफटना- मुखसें बारबार थूकना- अंगोंकाजकड़ ना माटीखानेकी इच्छा होना- नेत्रों पर सूजन- मल- मूत्र- पीले हों- अन्नका परिपाक न होय- ये लक्षण जब पांडुरोग प्रगटहोने वाला होय है तब होते हैं ३॥

बातकेपांडुरोगकेल•

त्वङ्मूत्रनयनादीनांरूक्षकृष्णारुणाभता । बा तपांड्वामयेकंपतोदानाहभ्रमादयः ४

अर्थ- बात के पांडुरोग में- त्वचा- मूत्र- नेत्र- इनमें रूखापना

कालापना- और लाली होय है- तथा कंप-सुईकासाचसका-अ फरा-भ्रम- आदि शब्द सैं- भेद- और शूलादिक भी होते हैं ॥४॥

पित्तजपांडुरोगकेलक्षण

पीतमूत्रशकृन्नेत्रोदाहतृष्णाज्वरान्वितः भि न्नविड्को ऽतिपीताभःपित्तपांड्वामयीनरः ॥५॥

अर्थ- पित्त पांडु रोगी के ये लक्षण होते हैं-मल-मूत्र- और नेत्र पीले हों- दाह-प्यास-ज्वर- इनसैं पीड़ित हो-मल पतलाहो य-और उस रोगीके देहकी कांती अत्यंत पीरी होय है ॥५॥

कफकेपांडुरोगकेलक्षण

कफप्रसेकश्वयथुतन्द्रालस्यातिगौरवैः। पां डुरोगी कफाच्छुक्लैस्त्वङ्मूत्रनयनाननैः ॥

अर्थ- मुखसैं कफ का गिरना-सूजन-तन्द्रा- आलस्य-शरी रका भारी होना- त्वचा-मूत्र-नेत्र-मुख- इनका सफ़ेदहोना-इन लक्षणों से कफ का पांडु रोग जानना ॥६॥

जिसमें तीनों दोषों के लक्षण मिलते हों उसको सन्निपात का पांडुरोग जानना

सन्निपातयुक्तपांडुरोग के असाध्यलक्षण

ज्वरारोचकहृल्लासछर्दितृष्णाक्लमान्वितः। पांडुरोगी त्रिभिर्दोषैस्त्याज्यःक्षीणोहतेंद्रियः ॥

अर्थ- ज्वर- अरुचि- ओकारी- प्यास- औरक्लम-तथावमन- इतने उपद्रव युक्त जो त्रिदोषजन्य पांडु रोगी- और क्षीण होगया हो- और जिसरोगी के इन्द्रीनकी अपना २ विषय ग्रहण करने की शक्ति जाती रही हो ऐसे रोगी को बैद्य त्यागदे ॥७॥

मट्टीखानेसेप्रगटपांडुरोगकेल०

मृत्तिकादनशीलस्यकुप्यत्यन्यतमोमलः।
कषायामारुतंपित्तमुखरामधराकफं॥८॥ को
पयेन्मृद्रसादींश्चरौक्ष्याद्भुक्तंचरूक्षयेत्। पूर
यत्यविपक्वैवस्रोतांसिनिरुणद्ध्यपि ९ इन्द्रि
याणांबलंहत्वातेजोवीर्यौजसी तथा। पांडुरोगंक
रोत्याशुबलवर्णाग्निनाशनम् ॥

अर्थ- मांटी खाने काजिस मनुष्य को अभ्यास पड़जाय उसको वातादिक दोष कुपित होंय- कषेली माटी सें बात कुपित होय खारी माटी सें पित्त- और मीठीमाँटीसें कफकुपित होय-फिर वही मट्टी पेटमें जाय कर रसादिक धातुन को रूखा करै जबरौक्ष्य गुण प्रगट हो जाय- तब जो अन्न खाय सो रूखा हो जाय- फिर वही मट्टी पेटमें बिनापकेरसकोरस बहनेवालीनसों में प्राप्त कर उन के मार्ग को रोकदे रसके बहने वाली नसों का मार्ग जब रुक जाय तब इन्द्रीन का बल अर्थात् अपने २ विषय ग्रहण करने की शक्ति नाश होय- शरीर की कांति- तेज- और ओज कहिये- सब धातूनका सार- (हृदय में रहता है सो) क्षीण होय कर पांडु रोग प्रगट होय उस में- बल- बर्ण- और अग्नि इनका नाश होय है ॥ १०॥

बिशेषलक्षण

शूनाक्षिकूटगंडभ्रूः शूनपन्नाभिमेहनः॥ ❖ ॥
कृमिकोष्ठोऽतिसार्येतमलंचासृक्कफान्वितम्

अर्थ- नेत्र गोल- गाल- भृकुटी- पैर- नाभि- और लिंग- इनमें सूजन हो- और कोठेमें कृमि पड़ जांय- तथा रुधिर और कफ- मिला दस्त उतरे ✢ सब पांडु रोगों में जब पेटमें कृमि पड़जाय है तबये पूर्वोक्त लक्षण होते हैं- यह (जैज्जट आचारीका) मतहै

और कोई कहता है- ये मृतिका जन्य पाँडु रोग के लक्षण हैं क्यों कि मृत्तिका जन्य पाँडु रोग लक्षण के अनंतर लिखने सें ÷ परंतु विदेह- ने तो ये मृत्तिका जन्य पाँडु रोग के लक्षण स्पष्ट कहे हैं

असाध्यलक्षण

पांडुरोगाश्चिरोत्पन्नः खरीभूतोनसिध्यति । कालप्रकर्षाच्छूनांगोयोवापीतानिपश्यति बद्धाल्पविट्सहरितंसकफंयोऽतिसार्यते । दीनःश्वेतातिदिग्धांगश्छर्दिमूर्च्छातृषान्वितः । सनास्त्यसृक्क्षयाद्यस्तु पांडुःश्वेतत्वमाप्नुयात् । पांडुदंतनखोयस्तु पांडुनेत्रश्चयोभवेत् । २४ । पांडुसंघातदर्शीच पांडुरोगीविनश्यति ॥ ÷ ॥ अंतेषुशूनं परिहीनमध्यंम्लानंतथांतेषुचमध्यशूनं ॥ २५ ॥ गुदेचशेफस्यथमुष्कयोश्च शूनंप्रताम्यंतमसंज्ञकल्पं । विवर्जयेत्पाण्डुकिनंयशोर्थी तथातिसारज्वरपीड़ितंच ॥ २६ ॥

अर्थ- बहुत दिनका पांडु रोग काल बहुत बीतने सें पुराना हो जाय है सो अच्छा नहीं होय ॥

अथवा- सबदेह में सूजन आय गई होय और उसको पदार्थ पीले दीखें सोभी असाध्य है ॥

अथवा- जिस मनुष्य का बंधा हुआ मल थोड़ा हरे रंगका- कफ मिश्रित उतरे सोभी असाध्य है ॥

अथवा- जो पुरुष दीन कहिये ग्लान युक्त हो और जिसकी देहका श्वेत वर्ण हो और वमन- मूर्च्छा- प्यास- इनसें पीड़ित होय सो पांडु रोगी नष्ट होय ॥

अथवा- जो रुधिर क्षय होने सें पांडु रोग उत्पन्न होय सोभी

असाध्य है - जिसके दांत - नख - और नेत्र - पीले होंय - वोरोगी असाध्य है ॥ जिसको सब पदार्थ पीलेही पीले दीखें वोरोगी और - हाथ - पैर - शिर - इनमें सूजन हो - और जिसका मध्य पतलाहोय ऐसा पांडुरोगी असाध्य है - यासें विपरीत साध्य है ॥ जिस रोगी के देह के मध्य में सूजन हो और हाथ - पग - सिर - ये सूख जांय तथा गुदा - लिंग - इनसें सूजन होय - तथा मरे केसमान हो गया होय ऐसे पांडु रोगी को - जिस वैद्य को यश की इच्छा होय सो त्याग दे। इसी प्रकार अतिसार - और ज्वर इनसें पीड़ित रोगी को वैद्य त्याग देवे ॥ २६ ॥ परंतु इस ग्रंथके श्लोक में जो पांडुकिनं) यह पाठ है इस जगह - (पानकिनं) ऐसा पाठ कोई आचार्य मानते हैं - सो ठीक है क्योंकि ऐसा पढ़ने सें पांडुरोगकी अवस्था अर्थात् पांडु रोगका भेद जो पानकी है इसके भी लक्षण इस पाठसैं आय गये - सो (सुश्रुत) में लिखभी है - इसी का आयश लेकर किसीने लिखाभी है ॥ यथा

अंतेशूनः कृशोमध्येत्वथवागुदशेफसि
शूनोज्वरातिसाराद्यैर्मृतकल्पस्तुपानकी ॥

अर्थ - जिस मनुष्यके हाथ - पैर पर सूजन होय - और देहका मध्य कृश होगया होय - अथवा गुदा - लिंग - पर सूजन हो तथा ज्वर अतिसार करके मुर्दाके समान होय यह लक्षण पानकीरोगके हैं ॥ ॥ पांडु रोगकाभेदकामलाहै ॥ ॥

अथकामलाकेलक्षण

पांडुरोगीतुयोऽत्यर्थं पित्तलानि निषेवते । त
स्यपित्तमसृङ्मांसंदग्ध्वा रोगायकल्पते १

१ सकामला पीत कि पांडु रोगः कुम्भाह्वयो लाघवि कोलसस्या: इति

हारिद्रनेत्रः सभृशंहारिद्रत्वङ्नखाननः। र
क्तपित्तशकृन्मूत्रोभेकवर्णोहतेन्द्रियः॥ दा
हाविपाकदौर्बल्यसदनारुचिकर्षितः। का
मलाबहुपित्तैषाकोष्ठशाखाश्रयामता॥

अर्थ- जो पांडुरोगी अत्यंतपित्तकारकबस्तुन्का सेवन करे उ-
स्के पित्त-रुधिर-मांस को जलाय (दुष्टकर) कामलारूपरोग
प्रगट करने को समर्थ होय -उसमनुष्य के नेत्र- अत्यंत पीले हों
य- त्वचा - नख- और मुख ये पीले होंय मल मूत्र काले होंय -
अथवा पीले होंय -वह मनुष्य वर्षा ऋतु के मेंडका के समा
न पीला होय- इन्द्रियों की शक्ति नष्ट होय- दाह- अन्न पचे
नहीं- दुर्वलता- अंगग्लानि - अन्न में अरुचि-इन् सें पीडित
होय- जिस्में पित्त प्रबल ऐसी यह कामला एक कोष्ठाश्रय-
और दूसरी शाखा (रक्तादिधातु) आश्रित है। उसी प्रकार
कामला स्वतंत्र होय है॥ २८॥

अब कहते हैं कि पांडु रोग की उपेक्षा करने में ही कामलादिक
होते हैं। उसी की दूसरी अवस्था कुंभकामला है॥

अथकुंभकामलाकेलक्ष०

कालांतरात्खरीभूताकृच्छ्रास्यात्कुंभकामला।

अर्थ- बहुतकाल सें पुरानी पड़ने सें जो कुंभकामला सो कृच्छ्र
साध्य होय है। कुम्भ कहिये कोष्ठ - त ज्ञत जो कामला अर्थात् को
ष्ठाश्रय कामला-

असाध्यलक्षण

कृष्णपीतशकृन्मूत्रोभृशंशूनश्चमानवः। सं
रक्ताक्षिमुखच्छर्दिविरमूत्रोयश्चताम्यति

अर्थ- जिस मनुष्य का मल काला- और मूत्र- पीला हो-औ
र शरीर पर सूजन विशेष होवै- और-नेत्र-मुख-बमन-मल-
और मूत्र-ये अत्यंत लाल होंय-मोह होय- वो कामलावान् रो
गी वचे नहीं ॥ २०॥

दूसरे असाध्यलक्षण

दाहाऽरुचितृडानाहतंद्रामोहसमन्वितः।
नष्टाग्निसंज्ञः क्षिप्रंचकामलावान्विपद्यते।

अर्थ- दाह- अरुचि- प्यास- अफरा- तंद्रा- मोह- इनलक्ष
णयुक्त-तथा मन्दाग्नि- और विस्मृतिवान् कामलावाला रोगीतत्का
लमरे ॥ २१॥

कुंभकामलाकेअसाध्यल.

छर्द्यरोचकहृल्लासज्वरक्लमनिपीडितः। न
श्यतिश्वासकासार्तोविटभेदीकुंभकामली ॥

अर्थ- बमन- अरुचि- ओकारी-का आना- ज्वर- अनायास-
श्रम- इन सें पीड़ित तथा श्वास-खांसी- इनसे जर्जरित और अति
सार युक्त ऐसा कुम्भ कामला वाला रोगी मरजाय है ॥ २२॥

पांडुरोगसेहलीमकरोगप्रगट होताहैसोकहतेहैं

यदातुपांडु वर्णःस्याद्धरितः श्यावपीतकः।
बलोत्साहक्षयस्तन्द्रामन्दाग्नित्वंमृदुज्वरः।
स्त्रीष्वहर्षोंगमर्दश्चदाहस्तृष्णारुचिर्भ्रमः। ह
लीमकंतदातस्यविद्यादनिलपित्ततः २४

अर्थ- जिस समय पांडु रोगी का वर्ण- हरा- काला- पीला होय-
और बल- व- उत्साह इनका नाश- तंद्रा- मन्दाग्नि- महीनज्वर-
स्त्री संभोग की इच्छा का नाश- अंगो का टूटना- दाह- प्यास- अन्न

में अप्रीति- और भ्रम- ये उपद्रव होंय तौ जानना कि वात पित्तसे प्र गट हलीमक रोग है ॥२४॥

पानकीलक्षण

सन्तापोभिन्नवर्चस्त्वंबहिरन्तश्चपीतता । पां डुतानेत्रयोर्यस्यपानकीलक्षणंभवेत्

अर्थ- सन्ताप कहिये- इन्द्री- मन- इनका ताप- मलका पतलाहो ना- भीतर बाहर पीला होजाय- और नेत्रों का पीला होना- ये पानकी रोगके लक्षण हैं ॥२५॥

इतिश्रीपण्डितदत्तरामभाथुररचितमाधवार्थबोधिन्यांभाषाटीकायांपाण्डुकामलाहलीमकनिदानम्

रक्तपित्तनिदान्

पाँडुरोगकेसदृशरक्त पित्त कोभी पित्त जन्य होने से तदनंतररक्त पित्तनिदान कोकहतेहैं

घर्मव्यायामशोकाध्वव्यवायैरतिसेवितैः । तीक्ष्णोष्णक्षारलवणैरम्लैः कटुभिरेवच १ पि त्तंबिदग्धंस्वगुणैर्विदहत्याशुशोणितम् ततः प्रवर्त्ततेरक्तमूर्ध्वंवाधोद्विधापिवा २ ऊर्ध्वंना- साक्षिकर्णास्यैर्मेढ्रयोनिगुदैरधः । कुपितंरोम कूपैश्चसमस्तैस्तत्प्रवर्त्तते ३॥

अर्थ- धूपमें बहुतडोलनेसें- अतिपरिश्रम करनेसें- शोकसें- बहुत मार्ग चलनेसें- अतिमैथुन करनेसें- मिरच आदि तीखीव-

रूखे खाने सैं - अग्निके तापने सें - जवाखार आदिखारे पदार्थ नोनते आदिले लवण के पदार्थ - खट्टो - कडुवो - ऐसी वस्तूके खाने से - कोप को प्राप्त भया जो पित्त सो अपने तीक्ष्ण - द्रव - प्रति इत्यादि गुणों से रुधिर को बिगाड़े तब रुधिर - ऊपर के - अथवा नीचे के मार्ग अथवा दोनो मार्ग होकर प्रवृत्त हो (निकले) ऊपर के मार्ग नाक - कान - नेत्र - मुख इनके द्वारा निकले - और अधो मार्ग कहिये - लिंग - गुदा - और योनी इनके रास्ते होकर निकले - और जबरुधिर अत्यंत कुपित होय तब दोनों मार्ग और सब रोमांच में से निकले है ॥ ३॥

पूर्वरूप

सदनंशीतकामित्वंकण्ठधूमायनंवमिः ॥
लोहगंधिश्चनिश्वासोभवत्यस्मिन्भविष्यति ॥

अर्थ - ग्लानि - शीत की इच्छा - कंठ से धूआँ निकलना - वमन - और तपाये भये लोह पर जल गेरने से जैसी गंध आवे जैसी श्वासलेने से गंधका आना - जिस मनुष्य में इतने लक्षण मिलते होंय उसके जानना कि इसकेरक्त पित्त प्रगट होयगा ॥ ४॥

कफयुक्तरक्तपित्तकेलक्षण

सांद्रंसपांडुसस्नेहंपिच्छिलंचकफान्वितं ॥

अर्थ - सघन - कुछ पीला - और कुछ चिकना - तथा गाढ़ा ऐसा रक्त पित्त कफ मिश्रित जानना ॥

वातिकरक्तपित्तकेल०

श्यावारुणंसफेनंचतनुरूक्षंचवातकम् ५

अर्थ - नीलावर्ण - लालवर्ण - कुछ झागयुक्त - पतला - और रूखा - ऐसा रक्त पित्त बात का जानना ॥ ५॥

पित्तकेरक्तपित्तकेलक्ष०

रक्तपित्तकषायाभंकृष्णंगोमूत्रसंनिभम् ।मे
चकागारधूमाभमंजनाभंचपैत्तिकम् ६

अर्थ- जो रक्त पित्त-काढे के रंग समान हो - काला गौ के मूत्र समान हो - अथवा मोर की चन्द्रिका के समान नील बर्ण होय- अर्थात् बैंगनी रंग के सदृश होय- घर के धूआँ के- सुर्मा के समान होय- ये पित्त के रक्त पित्त के लक्षण हैं + शंका + क्यौंजी केवल पैत्तिक-रक्त पित्त नहीं हो सके है कारण इस्का यह है कि जैसे कफ के रक्त पित्त का मार्ग कहा है इस प्रकार पित्त के रक्त पित्त का नहीं कहा + उत्तर + तुमने कहा सो ठीक है परंतु यह मार्ग जो कहा है सो बात कफ के लक्षण प्रति नहीं कहा है ॥

द्विदोषजादिलक्षण

संसृष्टलिंगंसंसर्गात्त्रिलिंगंसान्निपातिकं।
ऊर्ध्वगंकफसंसृष्टमधोगंमारुतान्वितम् ७
द्विमार्गकफवाताभ्यामुभाभ्यामनुवर्त्तते +

अर्थ- दो दोष के मिलने से जो रक्त पित्त होय है उसमें दोनों दोषों के लक्षण मिलने से द्विदोषज जानना और जिसमें तीनों दोषों के लक्षण मिलते हों उसको सन्निपात का रक्त पित्त जानना-ऊपर के मार्ग सें कफका- और नीचे के मार्ग हो कर वातका और दोनो मार्ग से जो रक्त पित्त निकले सो बात और पित्त इन दोषों से प्रगट भया जानना ॥

ऊर्ध्वगादिकोंकासाध्या साध्यविचार

ऊर्ध्वंसाध्यमधोयाप्यमसाध्यंयुगपद्गतम्।

अर्थ- ऊपर के मार्ग से लोही निकले सो साध्य है- क्यौं कि कफ से प्रगट है सो कफ के रक्त पित्त में काथ- तीखे रस कफ-पित्त के

हरण कर्त्ता होते हैं- और नीचे के मार्ग से जिसमें रुधिर गिरे सो-या
प्य (साध्यासाध्य) है- इसका कारण यह है कि पित्तके हरण
में विरेचन मुख्य है- और इस पर बातपित्त शमन करने वाला मधुर र
स प्रधान है- बमन देने से बिरुद्ध मार्गी होय है- अर्थात् वेगमात्रका
अवरोधक है- परंतु पित्तका हरण करने वाला नहीं है-॥
और दोनों मार्ग से गिरने वाला रक्त पित्त असाध्य है। कारण इ
सपर बिरुद्ध चिकित्सा करनी पड़ती है॥८॥

साध्यहोनेकेकारण

एकमार्गंबलवतोनातिवेगंनवोत्थितम्। रक्त
पित्तंसुखेकालेसाध्यंस्यान्निरुपद्रवम्

अर्थ- बलबान् पुरुषके एक मार्ग (अर्थात् ऊपरके मार्ग)
से जाता होय- अतिबेग नहीं होय- और नवीन प्रगट भया होय- हेम-
न्त- शिशिर- कालमें प्रगट भया होय- और दुर्बलता आदि उपद्र
व रहित होय। ऐसा रक्तपित्त साध्य होय है॥९॥

दोषभेदसेसाध्यासाध्यलक्षण

एकदोषानुगंसाध्यंद्विदोषंयाप्यमुच्यते। त्रि
दोषजमसाध्यंस्यान्मंदाग्नेरतिवेगितम्। व्या
धिभिःक्षीणदेहस्यवृद्धस्यानश्नतश्चयत्

अर्थ- एक दोषका रक्तपित्त साध्य है- द्विदोषका याप्य है- और
तीनों दोषोंका असाध्य है- मन्दाग्नि- अतिबेगसे होय- रोगसे क्षी
ण देह वाले का- बूढे मनुष्य के और जिसका आहार थक गया हो
य- ऐसे मनुष्य के रक्त पित्त असाध्य होय है॥

रक्तपित्तकेउपद्रव

दौर्बल्यश्वासकासज्वरवमथुमदाःपांडुता।
दाहमूर्छाभुक्तेघोरोविदाहस्त्वधृतिरपि।+।

सदाहृद्यतुल्याचपीड़ा तृष्णाकोष्ठस्यभेदः ॥
शिरसिचतपनंपूतिनिष्ठीवनत्वं भक्तद्वेषावि-
पाकौविकृतिरपिभवेद्रक्तपित्तोपसर्गाः

अर्थ- अशक्तता- श्वास- खांसी- ज्वर- वमन- धतूरेके फल खानेसे जैसी अबस्था होय ऐसी अवस्था- शरीर का पीला बर्ण होजाय- दाह- मूर्छा- अन्न खाने से अत्यंत दाह होय-अधीर पना- सर्व काल हृदय में बिलक्षण पीड़ा- प्यास-कोष्ठ भेद (अर्थात् मल पतला होय-) मस्तक में पीड़ा- दुर्गंधयुक्त थूकना-अन्नमें अरुचि- अहार का परिपाक न होना- ये रक्त पित्तके उपद्रव हैं-और इसी प्रकार इस रक्त पित्त की विकृति भी होय है सो आगे (मांसप्रक्षालनाभं) इत्यादि श्लोक करके कहते हैं ॥ ३१॥

असाध्यलक्षण

मांसप्रक्षालनाभंक्वथितमिवचयत्कर्दमांभोनि
भंवा मेदःपूयास्रकल्पंयकृदिवयदिवापक्व-
जम्बूफलाभम् । यत्कृष्णंयच्चनीलंभृशमतिकु
णपंयत्रचोक्ताविकारा स्तद्वर्ज्यंरक्तपित्तंस्करप-
तिधनुषाश्चतुल्यंविभाति ३२

अर्थ- जो रक्त पित्त मांस धोये हुए जलके समान हो-अथवा सड़े पानी के समान- अथवा कीचके समान- अथवा जल के समान-उसी प्रकार मेद- राध-रुधिर- इनके समान- अथवा कलेजे के टुकड़े के समान- अथवा पके जामन के समान- किंवा काले रंगका किंवा नील कहिये पपैया पक्षी के पंख के समान- अथवा जिसमें मेर खटमल कीसी बास आवै- और जिसमें पूर्वोक्त कहे श्वास- कासादि बिकार युक्त हों- ऐसा रक्त पित्त बर्जित है- और जो रक्त पित्त इन्द्र धनुषके बर्ण समान रंग हो सो बीत्याज्य है- अर्थात् ऐसे रक्तपित्तका

वैद्य चिकित्सा न करे ॥२२॥

दूसरे असाध्यलक्षण

येनचोपहतोरक्तंरक्तपित्तेनमानवः। पश्येद्द
श्यंवियच्चापितच्चासाध्यमसंशयम्

अर्थ- जिसरक्त पित्त ने मनुष्य को ग्रसलियाहोय वोदृश्य कहि ये घटपटादि- और अदृश्य कहिये आकाश इनको रक्तवर्ण का देखे वो रोगी निःसन्देह असाध्य जानना ॥२३॥

दूसरे असाध्यलक्षण

लोहितंछ र्दयेद्यस्तुबहुशोलोहितेक्षणः लो
हितोद्गारदर्शीचम्रियतेरक्तपैत्तिकः२४

अर्थ- जो बारंबार रुधिरको बमन करे- और जिसके लाल नेत्र होंय- तथा डकारभीलाल आवे सोरक्तपित्तवाला रोगीमर जाय ॥

इतिश्रीपण्डितदत्तराममाथुरनिर्मितमाधवा थेबोधनीमाथुरीभाषाटीकायांरक्त पित्तनिदानम्

अथराजयक्ष्मानिदानम्

वेगरोधात्क्षयाच्चैवसाहसा द्विषमाशनात्। त्रि
दोषोजायतेयक्ष्मागदो हेतुचतुष्टयात् १

अर्थ- वात- मूत्र- पुरीष- आदि वेगों के रोकने से- अतिमैथु न- उपबास- इर्ष्या- खेद- इत्यादिक- धातु क्षय के कारणोंसे- बलबा नसे बैरकरने से विषमाशन कहिये कुसमय- थोड़ा अथवा बहुत भो जनकरने से- इन चार कारणों तीनों दोषों के कोपसे मनुष्य के- राजयक्ष्मा रोग होय है। बेग कारोकना ही बात कोप का कारण है यह सत्य है तथापि वात कोप से अग्नि दुष्ट होकर कफ पित्त का

कोप होय है- इन चार हेतून में असंख्य हेतून्का अन्तर्भाव होय है- रसादिधातुन् के शोषण (सुखानेसे) इस रोगको (शोष) कहते हैं- तथा शरीर में पाचनादि सर्व क्रियान् को क्षय करे है इसी से इस रोगको (क्षय) कहते हैं- और राजा (चन्द्र) इस रोग से अति पीड़ितभया इसीसे इसको (राजयक्ष्मा) कहते हैं यह (सुश्रुत) का आशय है और (वाग्भट) ने इसको सर्वरोगों का राजा कहा है- इसी से इसको (राजयक्ष्मा) नाम कहा है- इस श्लोक में जो कहा है कि त्रिदोष का एकही यक्ष्मारोग प्रगट होय है-उसका तात्पर्य यह है कि तीनों दोषों के कारण भेदसे अनेक प्रकार का नहीं हैं- सो (सुश्रुते) में कहाभी है और इसश्लोकमें (वेगरोधात्) इस पद से केवल वात-मूत्र-मल-इनका ही ग्रहण करना चाहिये- श्रमादिक सबों का ग्रहण नहीं है- सो (चरके) में लिखा है इति ॥१॥

राजयक्ष्माकीविशिष्टसंप्राप्ति

कफप्रधानैर्दोषैस्तुरुद्धेषुरसवर्त्मसु। अतिव्यवायिनोवापिक्षीणेरेतस्यनंतराः क्षीयंतेधातवःसर्वेततःशुष्यतिमानवः

अर्थ- कफहै प्रधान जिनमें ऐसे जो वातादिक दोषतिनकरके

१ संशोषणाद्रसादीनांशोषइत्यभिधीयते क्रियाक्षयकरत्वाच्चक्षयइत्युच्यतेपुनः। राज्ञश्चंद्रमसोयस्मादभूदेषकिलामयः तस्मात्तंराजयक्ष्मेति केचिदाहुर्मनीषिणः इति॥

२ एक एवमतः शोषः सन्निपातात्मकोयतः। उद्रेकात्तत्रलिंगानि दोषाणां निमित्तं तिहि इति॥

३ ह्रीमत्वाद्वाघृणित्वाद्वाभयाद्वावेगमागतम्। वातमूत्रपुरीषाणांनिगृह्णातियदानरः इत्यादि॥

रसके बहनेवाली नाड़ीन्के मार्ग रुकजाने सें (इससे यह श्रुच
ना करी कि रस मार्ग बंद होने से हृदय में स्थित जो रस उसको बिगा
ड़ और उसी स्थान में विकृति (कहिये और प्रकारका स्वरूप)
कर खाँसी के वेग से मुख मार्ग होकर निकाले) सो (चरक)
में लिखा भी है « इससे अनुलोम क्षय दिखाया » « अब* प्रतिलो
मक्षय कैसा होय है उसको कहते है » अथवा अति मैथुन करने
से मनुष्य का वीर्य क्षीण होय है- जब शुक्र क्षीण हो जाय तब
समीप की धातु क्षीण होय - तब पुरुष सूखने लगे जैसे शुक्र
क्षीण के अनन्तर मज्जा क्षीण होय - मज्जा क्षीण के अनन्तर ह
ड्डी क्षीण होय ऐसे पूर्व पूर्व धातू क्षीण होय जांय + शंका +
क्यौं जी रस - रुधिर- मांस- मेदा - हड्डी- मज्जा - शुक्र- इन में
क्रम से प्रत्येक के क्षीण होनेसे शुक्र का क्षय होना उचित है परंतु
कार्य भूत शुक्र का क्षय होने सें कारण भूत धातून्का नाश कैसे
होय है + उत्तर + जब शुक्र का क्षय होय है तब बात कुपित हो
ता है सो तंत्रांतरो में लिखा है अर्थात् धातु के नष्ट होने सें पवन
के बहने वाली नाड़ीन्का मार्ग बन्द होकर बायु को कुपित करे-त
ब वही पवन समीप की मज्जा धातु को सुखावे तदनंतर हड्डी औ
र उसके पश्चात् मेदा इसी रीति सें रस पर्यंत धातून्को सुखावे है
इसजगेपर (दृष्टांत) है- जैसे अग्नि में तपाया भया लोह
का गोला गीली पृथ्वी में धरने से प्रथम समीप की पृथ्वी के आर्द्र
पने को शोषण करे पीछे दूर का गीलापना शोषण करे उसी रीति
से यहां जानना चाहिये ॥२॥

+ रससैं रुधिर- रुधिरसे मांस इसी रीति सैं शुक्रपर्यंत धातून्का क्षय होय सो-
* प्रतिलोम कहिये शुक्र सैं रस पर्यंत धातून्को शोष-

पूर्वरूप

श्वासांगसादकफसंस्रवतालुशोषवम्याग्निसा
दमदपीनसकासनिद्राः । शोषेभविष्यतिभ-
वन्तिसचापिजंतुः । शुक्केक्षणोभवतिमांसपरो
रिरंसुः ३ स्वप्नेषुकाकशुकशल्लुकनीलकंठ
गृध्रास्तथैवकपयःकृकलासकाश्च । तंवाहयं
तिसनदीर्विजलाश्चपश्येच्छुष्कांस्तरून्पवन
धूमदवार्द्दितांश्च ॥४॥

अर्थ- श्वास-हाथ पैरकागलना-कफका थूकना- तालुवे का सूखना - बमन- मन्दाग्नि - उन्मत्तता - पीनस - खाँसी - और नि द्रा- ये लक्षण धातु शोष वाले के होते हैं- और उस मनुष्य के ने त्र सफ़ेद होते हैं - और उस मनुष्य की मांस खाने पर तथा स्त्री संग करने की इच्छा होय- और सपने मैं कौआ- तोता-सेह-नी लेकंठ- गीध-बन्दर - करकैंटा - इनपर अपने को बैठा देखे- त था जल युक्त - और जल हीन नदी को देखे - तथा पवन- धूर- और धूंआं - इनसे पीड़ित भैसे बृक्ष देखे चकार से-तृण-केश- आदि का गिरना ये होते हैं- येसब स्वप्न क्षई रोग होनेके पहले दीखते हैं- (सोचरक में लिखा है) + शंका + क्यौंजो शुक्र का तो क्षय होजाय है फिर (रिरंसुः) यह पद क्यौंधरा (उ- त्तर) यह केवलव्याधिके बढ़ने से मनके दोषसेजानना चाहिये ४

---

१ पूर्वरूपंप्रतिश्यायोदौर्वल्यंदोषदर्शनं । अदोषेष्वपिभावेषुकायेबीभत्स दर्शनम् ॥ घृणित्वमश्नतश्चापिवलमांसपरिक्षयः । स्त्रीमद्यमांसप्रियता प्रियताचावगुंठने । मक्षिका घुणकेशादि तृणानांपतनानिच । प्रायोन्न पाने केशानांनखानां चाभिबर्द्धनम् । पतत्रिभिः पतंगैः

त्रिरूपक्षयकेलक्षण

अंशपार्श्वाभितापश्चसंतापः करपादयोः ज्व
रःसर्वांगगश्चैवलक्षणंराजयक्ष्मणः ५

अर्थ- कन्धा और पसवाड़ेन्में पीड़ा-हाथ पैर में जलन-और सर्व अंगों में ज्वर-ये राज यक्ष्मा के लक्षण-ये तीन लक्षण अवश्य होते हैं ऐसे चरक ने कहा है ॥५॥

एकादशरूप-षड्रूप-औरत्रिरूप शोषकेलक्षणकहतेहैं

स्वरभेदोऽनिलाच्छूलंसंकोचश्चांशपार्श्वयोः
ज्वरोदाहोऽतिसारश्चपित्ताद्रक्तस्यचागमः ६
शिरसःपरिपूर्णत्वमभक्तच्छन्दएवच।कासः
कंठस्यचोद्धंसोविज्ञेयःकफकोपतः ७ एका
दशभिरेतैर्वाषड्भिर्वापिसमन्वितम्।कासाति
सारपार्श्वार्तिस्वरभेदारुचिज्वरैः ८ त्रिभिर्वापी
डितंलिंगैर्ज्वरकासास्रगामयैः।जह्याच्छोषा
र्दितंजंतुमिच्छन्सुविपुलंयशः ९

अर्थ- राजयक्ष्मा ये त्रिदोष से उत्पन्न है-इसमें दोषोंकेन्यारे न्यारे मिलायकर सब ग्यारह रूप हैं-ये व्याधिके प्रभाव से होते हैं-सन्निपात ज्वर के सदृश सब लक्षण सब दोषों सेनहीं होते पृथक् २ होतेहैं सो दिखाते हैं-बादी के प्रभाव से-स्वरभेद कंधा और पसवाड़े इनमें संकोच-और पीड़ा होय- पित्तसे-

श्वश्वापदैश्चापिधर्षणम्।स्वप्नेकेशास्थिराशीनांभस्मनश्चाधिरोहणम्।
जलाशयानां शैलानांवनानांज्योतिषामपि।शुष्यतांक्षीयमाणानां पततांचापि
दर्शनम् प्राग्रूपंबहुरूपस्यतज्ज्ञेयंराजयक्ष्मणःइति अजश्वा पदाश्चा आदयः॥

ज्वर- दाह- अतिसार- और मुख से रुधिर का गिरना- और कफके कोप से मस्तक का भारीपना- अन्नसे द्वेष- खांसी- स्वरभेदये लक्षण होते हैं- इसमें तीन तो बात से- और चार लक्षण पित्तसे- तथा चारही लक्षणकफसे- ऐसे सब ग्यारह लक्षण से- अथवा खांसी- अतिसार- पसबाड़ेन्में पीड़ा- स्वरभेद- अरुचि- और ज्वर- येछः लक्षणों से अथवा- ज्वर- खांसी- और रुधिरबिकार- इन तीन लक्षणों से पीड़ित खई रोग वाले मनुष्य तथा जिस्का बल- मांस- क्षीण- होगया होय- ऐसे रोगी को यशेच्छू बैद्य त्यागदेय ऐसा रोगी असाध्यहै ॥९॥

साध्यासाध्यबिचार

सर्बैरर्द्धैस्त्रिभिर्वापिलिंगैर्वापिवलक्षये ॥
युक्तोवर्ज्यश्चिकित्स्यस्तुसर्बरूपोप्यतोऽन्यथा

अर्थ- स्वर भेदादिक जो ग्यारह लक्षणकहे बोसबलक्षण करके अथवा उनमें से आधे (अर्थात् छःलक्षणोंसे) अथवातीनलक्षण कहे- इन्से युक्त जो षई रोगी- बल मांस- क्षीण होनेपर त्याज्य है- यदि बल- मांस- जिस्का क्षीण न भया हो परंतु- सर्व लक्षण युक्त भी है तथापि त्याज्य नहीं है उस्की चिकित्सा करनी चाहियेहै ॥१०॥

असाध्यलक्षण

महाशिनंक्षीयमाणमतिसारनिपीडितम् ।शू
नमुष्कोदरंचैवयक्ष्मिणंपरिवर्जयेत् ११

अर्थ- जो बहुत भोजन करे परंतु दिन दिन प्रति क्षीण होताजाय (येअसाध्यरोगी है) अतिसार करके अत्यंत पीड़ित होय सो रोगी भी असाध्य होय है क्यौं कि खई रोग वाले का जीना मल के आधीन है (जैसे लिखाहै) उक्तंच-

यथा- मलायत्तं बलं पुंसांशुक्रा यत्तंतुजीवितम् तस्मा द्यत्नेनसंरक्षेद्यक्ष्मिणोमलरेतसीति ॥ और जिसके अंड कोश - और उदर - ये सूज गये हों - ऐसा रोगी असाध्य है क्यों कि शोथ वाला दस्त के कराने से अच्छा होय है रोगइसप रदस्त कराना बर्जित है इसीसे ऐसे रोगी को बैद्य त्यागदेय॥

कौनसेरोगीकोऔषधदेनायोग्य हैसोकहतेहैं

ज्वरानुबंधरहितंबलवन्तंक्रियासहं । उप क्रमेदात्मवंतंदीप्ताग्निमकृशंनरम् १२

अर्थ- जिस खई रोग वाले मनुष्य को ज्वर का सम्बन्ध होयन हों - बलवान् - औषधादि उपचार का सहने वाला - और जि सकी इन्द्री बस में हो - तथा जठराग्नि जिसकी दीप्त होय - औ र कृश न होय - ऐसे रोगी की चिकित्सा (उपचार) करना चाहिये इसश्लोक में (अकृशं) इस पद के धरने का यह प्रयोजन है कि पुष्ट देह वाला भी इस खई रोग से हज़ार दिन बच सके है सोई ग्रन्थान्तरमें लिखा है ॥ *

असाध्यलक्षण

प्रफुल्लाक्षमचन्द्रेष्टारमूर्ध्वश्वासनिपीडितम् कृच्छ्रेण बहुमेहंतंयक्ष्माहंतीहमानवम् १३

अर्थ- सफेद नेत्र जिसके होगये होंय - अन्न जिसको बुरा लगे - ऊर्द्ध्वश्वास से पीड़ित - और कष्ट से बहुत मूतने वाला अ र्थात् मल सुख से उतरे - यासे ये दिखाया कि जो आहार खाय सो मल होजाय - जब आहार का मल होगया तब उसके मांस - रुधिर -

* परंदिनसहस्रंतु यदि जीवति मानवः । सुभिषग्भिरुपक्रांत स्तरुणः शोष पीड़ितः इति

इनका क्षय होय - इसीसे यह असाध्य है शुक्रक्षयादिकये प्रत्येक अलग २ भी असाध्य हैं-अबकहते हैं कि अतिमैथुनादि करनेसे धातुका क्षय होय है- इसी से खईरोग प्रगट होय है ऐसा नहीं किंतु औरभी कारण से होय है उस को कहते हैं ॥

व्यवायशोकवार्धक्यव्यायामाध्वप्रशोषिणः ॥
व्रणोरःक्षतसंज्ञौचशोषिणोल्लक्षणंश्रृणु ।२४।

अर्थ- अतिमैथुनका शोष - शोक शोषी - वार्द्धक्य शोषी - व्यायाम शोषी - मार्ग शोषी - व्रणशोषी - और उरःक्षत शोषी इन्के न्यारे न्यारे लक्षण कहता हूं ॥२४॥

व्यवायशोषीकेलक्षण

व्यवायशोषीशुक्रस्यक्षयलिंगैरुपद्रुतः ।पां
डुदेहोयथापूर्वंक्षीयंतेचास्यधातवः२५

अर्थ- व्यवायशोषी (अतिमैथुनसेक्षीणभया) (सुश्रुत) केकहे अनुसार शुक्रक्षयलक्षणों से (शुक्रक्षयहोनेसे लिंग ग और अंडकोश में पीड़ा होय-मैथुन करने में अशक्ति और वल से मैथुन करै तौ वहुत देरमें शुक्रका श्राव होय- और वह श्राव वहुत अल्प होय- अथवा रुधिर का श्राव होय) पीड़ित होय- उसके देहका वर्ण पीला होजाय - और शुक्र से मज्जा मज्जा से हड्डी ऐसे उलटे धातु क्षीण होते जाते हैं ॥२५॥

शोकशोषीकेलक्षण

प्रध्यानशील:स्रस्तांगः शोकशोष्यपितादृशः

अर्थ- शोक शोषी अर्थात् शोच से जिस्को क्षय हो वहचिंता करे- और हाथ-पैर- गलने लगें- तथा शुक्र क्षयव्यतिरिक्त शोष वान् हो और पांडु देह होय- ऐसा शोच से क्षयवाला पुरुष होता है ॥

जराशोषीकेलक्ष०

जराशोषीकृशोमन्दवीर्यबुद्धिबलेन्द्रियः।कं
पनोऽरुचिमान्भिन्नकांस्यपात्रहतस्वरः।ष्ठी
वतिश्लेष्मणाहीनंगौरवारुचिपीडितः।संप्र-
स्रुतास्यनासाक्षःशुष्करूक्षमलच्छविः

अर्थ- जरा (बुढ़ापा) शोषी मनुष्य कृश होय है-उस्केवी
र्य- बुद्धी - बल- और इन्द्री ये मन्द होजांय- कंप होय- अन्नमें
अरुचि- फूटे कांसे के बासन को लकड़ी से बजाने सेजैसाशब्द
होय ऐसा शब्द होय-कफरहित बारबार थूके-(अर्थात्कफके
निकालने के वास्ते यत्न करे तथापि कफ नहींनिकले) शरीरभा
री रहै- अरुचि से पीड़ित-(पुनः अरुचि ग्रहण बिशेषताद्यो
तक के वास्ते कही है-) मुख-नाक- और नेत्र इन्से स्राव होय-
मल सुस्क उतरे- और देह की कांति निस्तेज होय॥ १७॥

अध्वप्रशोषीकेलक्षण

अध्वप्रशोषीस्रस्तांगःसंभृष्टपरुषच्छविः।प्र
सुप्तगात्रावयवःशुष्कक्लोमगलाननः १८॥

अर्थ- अध्वप्रशोषी-(अतिमार्गचलनेसेक्षीणभया) मनुष्य
के हाथ- पैर- सिथिल होजांय-उस्के देह का वर्ण भूंजे पदार्थ
के सदृश- और खरदरा होय है- सर्व देह में प्रसुप्तता-हृदय में
प्यास कास्थान है सो- गला- और मुख-इन्का सूखना-॥शंका
÷ क्योंजी जरा शोषी के अनंतर व्यायाम शोषी के लक्षण
कहने चाहिये अध्व (मार्ग) शोषी के लक्षण नहीं कहने चा
हिये- फिर-माधवाचार्यने अध्वशोषी के लक्षण क्यों कहे ÷
उत्तर ÷ अध्वशोषी के लक्षण इस वास्ते पहले कहेकि
व्यायाम शोषी में इसके सब लक्षण मिलते हैं- अच्छा आप

ऐसे कहोगे तो व्यायाम शोषी में अध्व शोषी के कौंनसे लक्षण नहीं मिलते + उत्तर + तुमने कहा सो ठीक है-परंतु-अध्व शोषी में उरःक्षतः आदि चिन्ह नहीं है यासे पूर्व अध्वशोषी के लक्षण कहे ॥१९॥

व्यायामशोषीकेलक्षण

व्यायामशोषीभूयिष्ठमेभिरेवसमन्वितः । लिं
गैरुरःक्षयकृतैःसंयुक्तश्चक्षतंविना १९

अर्थ- व्यायाम शोषी (अत्यंत दंडकसरत आदि श्रमसे क्षीण) मनुष्य विशेष करके अध्व शोषी के लक्षण स्रस्तांगतादियुक्त होय है अर्थात् जो लक्षण अध्व शोषी में थोड़े थोड़े होते हैं-वे व्यायाम शोषी में अधिक होते हैं - और उस मनुष्य के घाव के बिनाही उरःक्षत के लक्षण मिलते हैं उरःक्षत केलक्षण (सुश्रुत) में लिखे हैं ॥

तीनकारणोंसेव्रणशोषहोय हैसोकहतेहैं ॥

रक्तक्षयाद्वेदनाभिस्तथैवाहारयंत्रणात् । व्र
णिनश्चभवेच्छोषःसचासाध्यतमोमतः

अर्थ- रुधिर के क्षय सैं - फोड़ा की पीड़ा से - तैसेही आहार के घटने से - व्रणी पुरुष के जो शोष होय सो अत्यंत असाध्य जानना ॥२०॥

उरःक्षतसैंधातुशोषहोनेकासम्भवहैअ तएवशोषप्रकर्णमेंनिदानसहित ।

१ तस्योरसिक्षतेरक्तंभूयःश्लेष्माचगच्छति कासमानश्छर्दयेच्च पीतरक्तासितारुणम् । संतप्तवक्षसोत्यर्थं दयनात् परितास्यति । दुर्गंधोच्छ्वासवदनो भिन्न वर्णस्वरोनरः ॥

उरःक्षतरोगकहतेहैं

धनुषायस्यतोऽत्यर्थंभारमुद्वहतोगुरुं। युध्य
मानस्यबलिभिः पततोविषमोच्चतः॥वृषंह
यंबाधावंतंदम्यंचान्यंनिगृण्हतः। शिला
काष्ठाश्मनिर्घातान्क्षिपतोनिघ्नतःपरान्॥
अधीयानस्यवाऽत्युच्चैर्दूरंवाव्रजतोद्रुतम्।म
हानदीर्वातरतोहयैर्वासहधावतः॥२३॥स
हसोत्पततोक्रूरान्तूर्णंवातिप्रनृत्यतः।तथान्यैः
कर्मभिःक्रूरैर्भृशमभ्याहतस्यच २४ ताडि
तेवक्षसिव्याधिर्बलवान्समुदीर्यते। स्त्रीषु-
चातिप्रसक्तस्यरूक्षाल्पप्रमिताशिनः

अर्थ- बहुत तीरंदाज़ी करने से- बहुत भारी वस्तु उठाने से बलवान् पुरुष से युद्ध करने से- ऊंचे स्थान से गिरने से- बैल- घोड़ा- हाथी- ऊंट- इत्यादिक दौड़ते भयेन्को थामने से- भारी शिला- लकड़ी- पत्थर- निर्घात् (अस्त्रविशेष) इनके फेंक नेसे शत्रु को मारने वाला- जोरसे वेदादिक शास्त्र को पढ़नेसे अथवा दूर दिशावर शीघ्र चलकर जानेसे- गंगा यमुनादिमहा नदी को तरने वाला- अथवा घोड़ा के साथ दौड़नेवाला- अकस्मात् कलाखाने वाला जल्दी जल्दी बहुत नाचने से- या प्रकार दूसरे मल्ल युद्धादि क्रूर कर्म करने से- उर (छाती) फटजाय- ऐसे पुरुष की छाती दूखने से बलवान् उरःक्षतरूप व्याधी उत्पन्न होय है और बहुत मैथुन करै- तथा रूखा थोड़ा कुसमय भोजन करनेवाले के॥

उरोविरुज्यतेऽत्यर्थंभिद्यतेऽथविरुज्यते।
प्रपीड्यतेतथापार्श्वेशुष्यत्यंगंप्रवेपते॥ २६॥

क्रमाद्वीर्यंबलंवर्णोरुचिरग्निश्चहीयते। ज्व
रोव्यथामनोदैन्यंविड्भेदोऽग्निवधादपि॥ दु
ष्टःश्यावःसुदुर्गंधिः पीतोविग्रथितोबहु। कास
मानस्यचाभीक्ष्णंकफःसास्त्रःप्रवर्तते॥ सक्षतः
क्षीयतेऽत्यर्थंतथाशुक्रौजसोःक्षयात्॥

अर्थ- पूर्वोक्तलक्षणयुक्त ऐसे पुरुष का हृदय फटेगे,समा न मालूमहो अथवा हृदय केदो टूक करडाले ऐसा मालूम होय- और हृदय में पीड़ा अत्यंत होय- और उसके पसवाडे में पीड़ा अत्यंत होय- अंग सब सूखने लगे- तथा थर थर कांपने लगें- और शक्ति- मांस- वर्ण- रुचि- और अग्नि ये सब क्रमक्रम से घटने लगें- ज्वर रहे- व्यथाहोय- मनमें सन्ताप- ग्लानहोय- अग्नि मन्द होने से दस्त होने लगें- और बारंबार खांसते खांसते दुष्ट- काला- अत्यन्त दुर्गन्धि युक्त- पीला- गांठ केसमान- बहुत- और रुधिर मिला- ऐसा कफ गिरै- या प्रकार क्षत रोगी अत्यंत क्षीण होय- सोकेवल क्षत से ही क्षीण हो जाय- ऐसा नहीं किन्तु स्त्री सेवन करने से- शुक्र और ओज (सबधातुन्कातेज) इनका क्षय होनेसेये मनुष्य क्षीण होय है॥ २८॥

पूर्वरूप

अव्यक्तंलक्षणंतस्य पूर्वरूपमितिस्मृतम्॥ २६

अर्थ- उस उरःक्षत के अप्रगटलक्षणोंकोपूर्वरूप कहते हैं॥

क्षतक्षीणकेअसाध्यल•

उरोरुक् शोणितच्छर्दिः कासो वैशेषिकः क्षते
क्षीणेसरक्तमूत्रत्वं पार्श्वपृष्ठकटिग्रहः॥ ३०॥

अर्थ- क्षतक्षीणरोगीकेहृदय में पीड़ा होय- रुधिर कीउलटी करे- और विशिष्ट कास (अर्थात पूर्वकहेजोदुष्टश्या मादि लक्ष

णतिनकरके युक्त होय) और रुधिर युक्त मूत्र का उतरना-पसवाड़े- पीठ- और कमर इन्में पीड़ा होय ॥ ३० ॥

अथसाध्यलक्षण

अल्पलिंगस्यदीप्ताग्नेः साध्योबलवतोनवः
परिसंवत्सरोयाप्यः सर्बलिंगंबिवर्जयेत् ३१

अर्थ- जिसमें थोड़े लक्षण मिलते हों - और जिसकी अग्नि दीप्त होय- ऐसे पुरुष बलवान् के होय - तथा रोग नया होतो वो साध्य है- और रोग को भये एक बर्ष व्यतीत होगया होय। सो याप्य (साध्यासाध्य) है। और जिसमें सर्ब लक्षण मिलते होंय - सो असाध्य है उसको बैद्य त्याग देय ॥ ३१ ॥

इतिश्रीपण्डितदत्तराममाथुररचितमाधवार्थबोधनीमाथुरीटीकायांराजयक्ष्मानिदानम् ✣

अथकासनिदानम्

अथकारण- सम्प्राप्ति- और निरुक्ति

धूमोपघाताद्रजसस्तथैव व्यायामरूक्षान्न-
निषेवणाच्च । विमार्गगत्त्वादपिभोजनस्य।
वेगावरोधात्क्षवथोस्तथैव १ प्राणो ह्युदा
नानुगतः प्रदुष्टः संभिन्नकांस्यस्वनतुल्यघो
षः निरेतिवक्त्रात्सहसासदोषो मनीषिभिः
कासइतिप्रदिष्टः २

अर्थ- नाक- मुख में धूर जानेसे तथा नाक-मुख में धूआँ जानेसे - दंडकसरत- रूक्षान्न- इनके नित्य सेवन करने से-भोजनके कुपथ्यसे- मल- मूत्र- के रोकने से- इसी प्रकार छिका- अर्थात् (छींक) आनीभई के रोकने से- प्राण बायु अत्यंत दुष्ट

होकर - और दुष्ट उदान बायु से मिलकर - कफ पित्तयुक्त अकस्मात् मुखसे बाहर निकले उसका शब्द फूटेकांस्यपात्र के समान होयउसको विद्वानलोग कांस (खाँसी) कहतेहैं २॥

पंचकासाःस्मृताबातपित्तश्लेष्मक्षतक्षयैः
क्षयायोपेक्षिताःसर्वेबलिनश्चोत्तरोत्तरम् ३

अर्थ- बात-पित्त-कफ-क्षत-औरक्षय- ऐसेपांच प्रकारके खाँसी होय है इनकी औषधन करैतो सर्व का क्षयरूपहोजा य है- ये उत्तरोत्तर बलवान् जाननी जैसे बातसेपित्तकीपित्तसेक फकी-कफसेक्षतकी-क्षतसेक्षयकी खाँसी प्रबल है ॥३॥

पूर्वरूप

पूर्वरूपंभवेत्तेषांशूकपूर्णगलास्यता।कंठे
कंडूश्चभोज्यानामवरोधश्चजायते ४

अर्थ-मुख- और गलेमें कांटे से पडजांय-तथाकंठमें खुज लीचले-भोजनकरा न जाय-येखाँसी होन हारके लक्षण हैं ॥

बातकीखांसीकेलक्षण

हृच्छंखमूर्धोदरपार्श्वशूली क्षामाननःक्षी
णबलस्वरौजाः। प्रसक्तवेगस्तुसमीरणेन भि
न्नस्वरःकासतिशुष्कमेव ५

अर्थ- हृदय-कनपटी-मस्तक-उदर-पसवाड़ा-इनमें शूल चले- मुंह उतरजाय-बल-स्वर-पराक्रम-ए क्षीण पडजांय- बारं बार खांसी का उठना-स्वरभेद- और सूखी खांसी उठे यह बात की खांसी के लक्षण हैं ॥ ५॥

पित्तकीखांसीकेलक्षण

उरोविदाहज्वरवक्त्रशोषैरभ्यर्दितस्तिक्त
मुखस्तृषार्तः। पित्तेन पीतानिवमेत्कटूनि ॥

कासेनपांडुःपरिदह्यमानः ॥ ॥ ६ ॥ ॥

अर्थ- पित्त की खाँसी से हृदय में दाह होय- ज्वर-मुखकास खना- इन से पीडित होय- मुख कडुआ रहै- प्यास लगै- पीले रंगकी- और कडुवी- ऐसी पित्त के प्रभाव से वमन होय- रोगी का पीलावर्ण होजाय- और सब देह में दाह होय ॥६॥

कफकीखांसीकेलक्षण

प्रलिप्यमानेनमुखेनसीदन् शिरोरुजाऽऽर्तः
कफपूर्णदेहः। अभक्तरुग्गौरवकंडुयुक्तः
कासेद्भृशंसान्द्रकफःकफेन ॥७॥

अर्थ- कफ की खाँसी में मुख कफसे लिपटा रहै- मथबाय रहै- सबदेहकफसे परिपूर्ण रहै- अन्न में अरुचि- शरीरभारी रहै- कंठमें खुजली- औररोगी बारंबार खांसे- कफकी गांठ थूके तब सुख मालूम होवे ॥७॥

क्षतकासलक्षण

अतिव्यवायभाराध्वयुद्धाश्वगजनिग्रहैः।रू
क्षस्योरःक्षतंवायुर्गृहीत्वाकासमावहेत् ॥स
पूर्वंकासतेशुष्कंततःष्ठीवेत्सशोणितम् ॥
कंठेनरुजताऽत्यर्थंविरुग्णेनेवचोरसा ८।
सूचीभिरिवतीक्ष्णाभिस्तुद्यमानेनशूलिना।
दुःखस्पर्शेनशूलेनभेदपीडाभितापिना ९
पर्वभेदज्वरश्वासतृष्णावैस्वर्यपीडितः ॥
पारावतइवाकूजन्कासवेगात्क्षतोद्भवात्।

अर्थ- बहुत स्त्रीसंगकरने से- भारके उठानेसे- बहुत मार्गचलने से- मल्लयुद्ध (कुश्ती) करनेसे- हाथी- घोडा दौड़तेको रोकनेसे इनकारणों से रूक्ष पुरुषका हृदयफटकर वायु कोप

होकर खाँसी को प्रगट करे। सो पुरुष प्रथम सूखी खाँसे-पीछे रुधिर मिला थूके-कंठ अत्यंत दूखे-हृदय फूटे सदृश मालूम होय-और तीखी सुई के से चमका चले-और उस्को हृदय का स्पर्श सुहाय नहीं-दोनों पसवाड़ों में शूल होय-यह (वाग्भट) का मत है-तथा दाह होय-उस रोगी के संधिसंधि में पीड़ा होय-ज्वर-श्वास-प्यास-स्वरभेद-इनसे पीडित होय क्षतजन्य-खाँसी के वेग से रोगी कबूतर की तरह घुंघु शब्द करे॥

क्षयकी खाँसी के लक्षण

विषमासात्म्यभोज्यातिव्यवायाद्वेगनिग्रहात्
घृणिनांशोचतांनृणांव्यापन्नेऽग्नौत्रयोमला:
कुपिता:क्षयजंकासंकुर्युर्देहक्षयप्रदम्।
सगात्रशूलज्वरदाहमोहान्। प्राणक्षयंचापि
लभेतकासी १३ शुष्यन्विनिष्ठीवतिदुर्बलस्तु
प्रक्षीणमांसोरुधिरंसपूयम्॥ तंसर्वलिंगंभृश
दुश्चिकित्स्यंचिकित्सितज्ञा:क्षयजंवदंति

अर्थ-कुपथ्य और विषमासन के करने सें-अति मैथुन-मलमूत्रादिक वेग धारण इनसे-अति दया करने से-अति शोक करने से-अग्नि मन्द होय-(अर्थात् आहार थकने से बायु कुपित होकर अग्नि को नष्ट करे-) तब तीनों दोष कोप को प्राप्त होकर क्षयजन्य और देह का नाशक ऐसी खाँसी को प्रगट करे-तब वह खाँसी देह को क्षीण करे-शूल-ज्वर-दाह-और मोह ये होय तब यह प्राण का नाश करे-सूखी खाँसी-दुबरो होतो जाय-रुधिर-मांस-शरीर को सूखदजानों-रुधिर-और राध थूके-सर्व लक्षण-युक्त-और चिकित्सा करने में अति कठिन-ऐसे इस खाँसी को बैद्य क्षयज कहते हैं॥१४॥

साध्यासाध्यबिचार

इत्येषःक्षयजःकासःक्षीणानांदेहनाशनः
साध्योबलवतांवास्याद्याप्यस्त्वेवंक्षतोत्थितः
नवौकदाचित्सिध्येतामपिपादगुणान्वितौ
स्थविराणांजराकासःसर्वोयाप्यःप्रकीर्ति-
तः २६ त्रीन्पूर्वान्साधयेत्साध्यान्पथ्यैर्याप्यां
स्तुयापयेत् २७॥

अर्थ- या प्रकार यह क्षयजकास (खाँसी) क्षीण पुरुषकी घातक होय है-बलवान् पुरुषके असाध्य-अथवा याप्य (साध्या साध्य होय है- क्षतजखांसी भी इसी प्रकारकी होती है-बैद्यादि पाद चतुष्टय संपन्न होयतौ येदोनों प्रकारकी खाँसी नवीनहोय तौ कदाचित् साध्यहोय-और बूढ़े पुरुषके जराकास अर्थात् धातुक्षीणहोनेसे भई जो खांसी सो सब प्रकार की याप्य है- सो सब इन्ही के अंतर्गत जाननी-अब कहते हैं कि बात-पित्त-कफ-ये तीनखांसी साध्य हैं- और बाक़ी तीन याप्य हैं वो पथ्य सेवन करने से नाश होय-और + अवज्ञा करने से असाध्य होजाय है॥

इतिश्रीपण्डितदत्तरामसाथुरनिर्मितमाधवार्थबोधनीमाथुरीटीकायांकासरोगनिदानम्

हिक्काऔरश्वासनिदान

विदाहिगुरुविष्टंभरूक्षाभिष्यंदिभोजनैः।

+ पूयाभमस्रं पश्यावं हरितंपीतनीलकं। निष्ठीवेच्छ्वासकासार्तोनजीवतिहतस्वरः। कासश्वासक्षयच्छर्दिस्वरभेदादयोगदाः भवंत्युपेक्षया ऽसाध्यास्तस्मात् तान्त्वरयाजयेत् इति॥

शीतपानाशनस्नानरजोधूमातपानिलैः २व्या
यामकर्मभाराध्ववेगघातापतर्पणैः। हिक्काश्वा
सश्चकासश्चनृणांसमुपजायते २

अर्थ- दाहकारक- भारी - अफराकारक -रूखी- अभिष्यंदी ऐसे भोजन करने से- शीतलजलपीनेसे- शीतल अन्नखानेसे- शीतलजलसे स्नान करने से-रज- और धूआं का मुख नाक में जाने से- गरमी- हवा में डोलने से- दंड कसरत के करनेसे- भार के उठाने से - बहुत मार्ग के चलने से - मलादिक बेगकेरो कने से- और उपवास के करनेसे- मनुष्य के हिक्का (हिचकी) श्वास-(दमा) और कास (खांसी) येरोग उत्पन्न होय हैं॥

हिक्काकास्वरूपऔरनिरुक्ति

मुहुर्मुहुर्वायुरुदेतिसस्वनोयकृत्प्लिहांत्राणि
मुखादिवाक्षिपन्।सघोषवानाशुहिनस्त्यसू-
न्यतस्ततस्तुहिक्केत्यभिधीयतेबुधैः ३॥ ॥

अर्थ- उदानबायु- प्राणवायुके साथ मिलकर जब निकले तब मनुष्य हिग् हिग् शब्द ऐसा करे और कलेजे में- प्लीह-इनको मुख पर्यंत खींचलावे (इस स्थान में मुख शब्द करके प्राण जल- अन्न-इनके बहने वाले मार्ग जानने) और मुखमें होय कर बड़ा शब्द निकले उसको बैद्यवर- हिक्का- (हिचकी) रोग कहे हैं यह शीघ्र प्राणों का हर्त्ता होय है॥

हिक्काकेभेदऔरसंप्राप्ति

अन्नजांयमलांक्षुद्रांगंभीरांमहतींतथा। बा
युःकफेनानुगतःपंचहिक्काःकरोतिहि

अर्थ- बात कफ से मिलकर १ अन्नजा २ यमला ३ क्षुद्रा ४गं भीरा ५ और महती ऐसे पांच प्रकार की हिचकीरोग को प्रगटक

उक्तंच- प्राणोदकान्नवाहीनिस्रोतांसिविकृतोनिलः हिक्काकरोतिसंरुध्यतासांलिंगंपृथक् पृणुइति

रे ॥ ४॥

पूर्वरूप

कंठोरसोर्गुरुत्वंचवदनस्यकषायता । हिक्का
नांपूर्वरूपाणिकुक्षेराटोपएवच ५

अर्थ- कंठ- और हृदय भारीरहे- और बादी से मुख कसैलारहै- कूख में अफरा रहै- यह हिचकी का पूर्वरूपजानना ५

अन्नजाकेलक्षण

पानान्नैरतिसंभुक्तैः सहसा पीडितोऽनलः।
हिक्कयत्यूर्ध्वगोभूत्वातां विद्यादन्नजांभिषक्

अर्थ- अन्न बहुतखाय- और पानी बहुतपीवै- बात अकस्मात् कुपित होय- ऊर्द्ध गामी होयकर मनुष्य के अन्नजाहिचकी प्रकट करे ॥ ६ ॥

यमलाकेलक्षण

चिरेणयमलैर्वेगैर्याहिक्कासंप्रवर्त्तते । कंप
यंती शिरोग्रीवांयमलांतांविनिर्दिशेत्

अर्थ- देरदेर में दोदो हिचकी चलें- सिर कंधा कोकंपावै उसको चिकित्सक यमला हिचकी कहते हैं ॥ ७ ॥

क्षुद्राकेलक्षण

प्रकृष्टकालैर्यावेगैर्मन्दैःसमभिवर्त्तते । क्षु
द्रिका नामसाहिक्काजत्रुमूलात्प्रधावति

अर्थ- जो हिचकी बहुत देर में कंठ हृदय की संधिसें मंदमंद चले उस्को क्षुद्रा नाम हिचकी कहते हैं ॥ ८ ॥

गंभीरीकेलक्षण

नाभिप्रवृत्तायाहिक्काघोरागंभीरनादिनी । अ
नेकोपद्रववतीगंभीरानामसास्मृता ॥ ९ ॥

अर्थ- जो हिचकी नाभिके पाससे उठे- और गंभीर शब्द करे-

और जिस में प्यास - ज्वरादि अनेक उपद्रवयुक्त होय उस्को गं-
भीराहिचकीकहतेहैं ८

महतीहिचकीकेलक्ष.

मर्मा ण्युत्पीडयंतीवसततंया प्रवर्त्तते । महा
हिक्केतिसाज्ञेयासर्वगात्रप्रकंपिनी ९

अर्थ -जो हिचकी सर्व मर्म स्थान में पीड़ा करती हुई- और स
र्व गात्र को कपावती हुई सर्व काल प्रबल होय उस्को महा हिक्का
कहते हैं ॥

असाध्यलक्षण

आयम्यते हिक्कतोयस्यदेहोदृष्टिश्चोर्ध्वंताम्य
तेयस्यनित्यं । क्षीणो ऽन्नद्विट्क्षौतियश्चाति
मात्रंतौद्वौचात्यौवर्जयेद्धिक्कमानौ

अर्थ- हिचकी से जिसका देह तन जाय- और ऊंची दृष्टि होजाय
- और मोह होय- क्षीण पड़जाय- भोजन से अरुचि होय- और
छींक बहुत आवें - ये दोनों हिचकी वाले रोगी अर्थात् जिस्को ग
म्भीरा और महती हिचकी होय सो वैद्य को त्याज्य है ॥ ११ ॥

असाध्यलक्षण

अतिसंचितदोषस्यभक्तच्छेदकृशस्यच । व्या
धिभिःक्षीणदेहस्यवृद्धस्यातिव्यवायिनः । आ
सांयासासमुत्पन्नाहिक्काहंत्याशुजीवितम् ॥

अर्थ- जिस्के अत्यन्त दोषों का संचय होगया हो- और जिस्का
अन्न छूट गया हो - जो कृश होगया हो - जिसके अनेक व्याधि से
देह क्षीण होगया होय - और जो वृद्ध है- अति मैथुन करने वाला हो-
ऐसे पुरुष के ये दोनों हिचकी उत्पन्न होय तौ तत्क्षण उस रोगी के
प्राण नाश करे ॥

यमिकाके असाध्यलक्ष•

यमिकाचप्रलापार्तिमोहतृष्णासमन्विता २३

अर्थ- बकबाद करे- शूलहोय- मोह- प्यास- इन लक्षणोंयुक्त जो यमिका नामकी हिचकी सो तत्काल प्राण हर्त्ती जाननी ॥

यमिकाके साध्यलक्षण

अक्षीणश्चाप्यदीनश्चस्थिरधात्विंद्रियश्चयः।
तस्यसाधयितुंशक्या यमिकाहंत्यतोऽन्यथा२४

अर्थ- बलवान्- प्रसन्नमन- जिस्की धातु और इन्द्री स्थिरहोय- ऐसे पुरुष की यमिका हिचकी साध्य है- और इससे विपरीत (अर्थात् क्षीण- दीन- इत्यादि) पुरुष को तत्काल ही नाश करे + अन्नजा- क्षुद्रा- यह दोनों साध्य ही दो बार आने से यमिका कहाती है- चरकोक्त यमला इस जगह नहीं ग्रहण करनी चाहिये ॥२४॥

इतिश्री पण्डितदत्तराममाथुरनिर्मितमाधवार्थबोधनीमाथुरीभाषाटीकायां हिक्कारोगनिदानसमाप्तम्

अथश्वासनिदानं

महोर्ध्वछिन्नतमकक्षुद्रभेदैस्तुपञ्चधा।भि
द्यतेसमहाव्याधिःश्वासएकोविशेषतः

अर्थ- हिक्का श्वासका एक हेतु होने से हिक्काके अनन्तर- श्वास रोग को कहते हैं- महाश्वास- उर्ध्व श्वास- छिन्नश्वास- तमक श्वास- और क्षुद्र श्वास- इन भेदों से एक श्वास रोग पांच प्रकारका है ॥ २॥

श्वासके पूर्वरूपके ल•

प्राग्रूपंतस्यहृत्पीडाशूलमाध्मानमेवच ।
आनाहोवक्त्रवैरस्यंशंखनिस्तोदएवच ॥
अर्थ- हृदय दूखे - शूल होय - अफरा होय - पेटतनासा होय - कनपटी दूखे - मुख में रस का स्वाद आवे नहीं - यह श्वास रोगका पूर्वरूपहै॥२॥

श्वासरोगकीसम्प्राप्ति

यदास्रोतांसिसंरुध्यमारुतःकफपूर्वकः
बिष्वक्व्रजतिसंरुद्धस्तदाश्वासान्करोतिसः
अर्थ- सर्व देह में बिचरनेवालो पवन जब कफ से मिलकर सब - प्राण - अन्न - उदकबहनेवालीनसों के मार्ग को रोकेदेयतबप बन फिरने से रुककर श्वास रोग को प्रगट करे ॥३॥

महाश्वासकेलक्षण

उद्धूयमानवातोयःशब्दवद्दुःखितोनरः। उ
च्चैःश्वसितिसंरुद्धोमत्तर्षभइवानिशं ४ प्र
नष्टज्ञानबिज्ञानस्तथाबिभ्रांतलोचनः। बि
स्तब्धाक्षाननोबद्ध मूत्रवर्चाविशीर्णवाक्
दीनःप्रश्वसितंचास्यदूराद्विज्ञायतेभृशम्।
महाश्वासोपसृष्टस्तुक्षिप्रमेवविपद्यते।६।
अर्थ- जिस्का वायु ऊपर को जाय के प्राप्तहो ऐसा मनुष्य दुखित होकर मुख से शब्द युक्त श्वास को निकाले - ऊंचे स्वर से अथवा जैसे मत्त वाला बैल शब्द करे या प्रकार रात्रि दिन श्वास से पीड़ित होय - उसका ज्ञान वग़ैरह जाता रहै - नेत्र चंचल होंय - और जिस्का श्वास लेते में नेत्र और मुख फटजाय - मल मूत्र बन्द होजाय - बोला जाय नहीं - अथवा बोले तो मन्द बोलै - मन खिन्न होय - और जिस्का श्वास दूरसे सुनाई देय - यह महा श्वास जिस पुरुष -

को होय वह तत्काल मरण को प्राप्त होय ॥६॥

उर्ध्वश्वासके लक्षण

ऊर्ध्वंश्वसितियोदीर्घंनचप्रत्याहरत्यधः॥
श्लेष्मावृत्तमुखस्रोताः क्रुद्धगंधवहार्दितः ७
उर्ध्वदृष्टिर्विपश्यंश्चविभ्रांताक्षइतस्ततः। प्र
मुह्यन्वेदनार्तश्चशुष्कास्योऽरतिपीडितः

अर्थ- बहुत देर पर्यंत ऊंचो श्वास लेय - नीचे आवै नहीं - कफ से मुख भर जाय - तथा और सब नाड़ीन्के मार्ग कफ से वन्द होजाय - कुपित वायू से पीड़ित होय - ऊपर को नेत्र कर चंचल दृष्टिसे चारों ओर देखें - मूर्च्छा से और पीड़ा से अत्यंत पीड़ितहोय - मुख सूखे - तथा बेहोशहोय - यहऊर्ध्वश्वासकेलक्षणहैं ८

ऊपर कोहीश्वासले नीचेनहीं आवेये जोकहाउसमेंकारणकहतेहैं

ऊर्ध्वश्वासेप्रकुपितेह्यधःश्वासोनिरुध्यते
मुह्यतस्ताम्यतश्चोर्ध्वंश्वासस्तस्यैवहंत्यसून्।

अर्थ- ऊपर का श्वास कुपित होने से नीचे का श्वास वंद होय अर्थात् हृदय में रुकजाय- अथवा श्वास करिये वायू सो खाली नीचे नहीं उतरे- तब मनुष्य को मोह होय - ग्लानि होय- औसे पुरुषकैं ऊर्ध्व श्वास प्राण का हरण करे ॥९॥

छिन्नश्वासकेलक्ष.

यस्तुश्वसितिविच्छिन्नंसर्वप्राणेनपीडितः
नवाश्वसितिदुःखार्तोमर्मच्छेदरुगार्दितः १०
आनाहस्वेदमूर्च्छार्तोदह्यमानेनबस्तिना।वि
प्लुताक्षःपरिक्षीणःश्वसन्रक्तैकलोचनः

विचेताः परिशुष्कास्योविवर्णः प्रलपन्नरः। छिन्नश्वासेनविच्छिन्नःसशीघ्रंविजहात्यसून् २३॥

अर्थ- जो पुरुष-ठहर ठहर कर जितनी शक्ती उतनी शक्ति से श्वास को त्याग करे अथवा क्लेश को प्राप्त हो श्वासकोनहिं छोड़े- और मर्म कहिये - हृदय-बस्ती (मूत्रस्थान) औरनाड़ी औनको मानो कोई छेदन करे ऐसी पीड़ा होय - पेटका फूलना - पसीना - और मूर्च्छा - इनसे पीडित होंय - बस्ती (मूत्रस्थान में जलन होय - चलायमान नेत्र होंय - अथवा नेत्र - अश्रुपात से भरे होंय - श्वास लेते लेते थक जांय - तथा श्वासलेतेएक २ नेत्रलाल होजाय- (यह व्याधी के प्रभाव से होय है-दोष - के प्रभाव से होंय तो दोनों होजांय-) उद्विग्नचित्त होयजाय) मुख सूखे - देह का वर्ण पलट जाय - बकवाद करे-संधिकेसब बंध शिथिल हो जांय - इस छिन्न श्वास करके मनुष्य शीघ्रप्राणकात्यागकरे॥ २१॥

तमकश्वासकेलक्ष०

प्रतिलोमंयदावायुःस्रोतांसिप्रतिपद्यते ॥ ग्रीवांशिरश्चसंगृह्यश्लेष्माणंसमुदीर्यच ॥ करोतिपीनसंतेनरुद्धोघुर्घुरकंतथा। अतीवतीव्रवेगंनश्वासंप्राणप्रपीडकम् २४ प्रताम्यतिसवेगेनत्रस्यतेसन्निरुद्ध्यते। प्रमोहंकासमानश्चसगच्छतिमुहुर्मुहुः २५ श्लेष्मण्यमुच्यमानेनभृशंभवतिदुःखितः। तस्यैवचाविमोक्षांतेमुहूर्तंलभतेसुखम् २६ तथास्योध्वंसतेकंठःकृच्छ्राच्छक्नोतिभाषितुं

नचापिनिद्रांलभते शयानः श्वासपीड़ितः २५
पार्श्वेतस्यावगृह्णाति शयानस्यसमीरणः ॥
आसीनोलभते सौख्यमुष्णंचैवाभिनन्दति २६
उच्छ्रिताक्षोललाटेन स्विद्यताभृशमार्तिमान्।
विशुष्कास्योमुहुःश्वासोमुहुश्चैवावधम्यते
२६ मेघांबुशीतप्राग्वातैःश्लेष्मलैश्चविवर्द्धते।
सयाप्यस्तमकश्वासःसाध्योवास्यान्नवोत्थितः ३०

अर्थ- जिस काल में शरीर की पवन उलटी गतिसे नाड़ीन्के छिद्रमें प्राप्त होकर मस्तक तथा कंठका आश्रय कर कफ संयुक्त होय तब कफ से रुक कर अति बेग पूर्वक कंठ में घुर घुर शब्द करे- और मस्तक में पीनस रोग करे- और अत्यन्त तीव्र बेग से हृदय को पीड़ा का करने वाला- ऐसा श्वास को उत्पन्न करे- उसश्वास के बेग से मूर्च्छित होय- त्रास को प्राप्त होय- चेष्टा रहित होय- और खांसी के उठने से बड़े मोह को प्राप्त होय -बारंबार औरजब कफ छूटे तब दुख होय- और कफ छूटने के बाद दो घड़ी पर्यन्त सुख पावै- कंठ में खुजली चले - बड़े कष्ट से बोले - श्वास की पीड़ा से सोवै तौ नींद न आवै- और सोवैतौ बायु से पसवाड़ों में पीड़ा होय- बैठेही चैन पड़े - और गरमीके पदार्थ से खुस होय - नेत्रों में सूजन होय- ललाट में पसीना आवै- अत्यन्त पीड़ा होय- मुख सूखे - बारंबार श्वास और बारंबारहाथी पर बैठने के सदृश सब देह चलायमान होवे- यहश्वास- मेघ के बर्षने से- शीत से- पूरब की पवन से- और कफ कारक पदार्थ इनके सेवनकरने से बढ़े है-यह तमक श्वास याप्य है यदि नया प्रगट भया होय तौ साध्य होय है ॥

तमककोपित्तकाअनुबंध

होकरज्वरादिकोंकायोगहोनेसेप्रतमक होयहै उसको कहते हैं

ज्वरमूर्च्छापरीतस्याबिद्यात्प्रतमकन्तुतम् ॥

अर्थ-इस तमक श्वास में-श्वास-ज्वर- और मूर्च्छा ये दोनों लक्षण होने से इसको प्रतमक श्वास कहते हैं ॥

प्रतमककेदूसरेलक्षणऔरकारणकहतेहैं

उदावर्त्तरजोजीर्णक्लिन्नकायनिरोधजः २१

तमसावर्धतेऽत्यर्थंशीतैश्चाशुप्रशाम्यति।

मज्जतस्तमसीवास्यबिद्यात्प्रतमकंतुतम् २२

अर्थ- उदावर्त्त-धूल-आमादि-अजीर्ण-विदग्धान्न-मल-मूत्रादि बेग के रोकने से (अथवाक्लिन्नकायकहिये बृद्ध मनुष्य और निरोध (कहिये) बेगरोध) इन कारणों से प्रगटभईजो श्वास सो अंधकारसे अथवा तमोगुण से अत्यन्त बढे-और शीतल उपचार से शीघ्र शांति हो जाय-इस श्वास के योग से रोगी को अन्धकार में बूड़ासदृशमालूमहोय-इसको प्रतमक श्वास ऐसे कहते हैं ॥२२॥

क्षुद्रश्वासकेलक्षण

रूक्षायासोद्भवःकोष्ठेक्षुद्रोवातमुदीरयेत् ॥

क्षुद्रश्वासोनसोऽत्यर्थंदुःखेनांगप्रबाधकः२३

हिनस्तिनसगात्राणिनचदुःखोयथेतरे। न

चभोजनपानानांनिरुणद्ध्युचितांगतिं २४

नेंद्रियाणांव्यथांचापिकांचिदापादयेद्रुजम्

समाध्यउक्तः,

अर्थ- रूखा पदार्थ खाने से-श्रमके करने से- प्रगट भई जो

क्षुद्रश्वास सो पवन को ऊपर ले जाय- यह क्षुद्र श्वास अत्यंत दुःखदायक नहीं हैं- तथा अंगों को कुछ बिकार नहीं करे- जैसे उर्ध्व श्वासादिक दुःखदायक हैं + ऐसे यह नहीं हैं- और भोजन पानादिकोंकी उचित गति को बंद नहीं करे- और इन्द्रीन को भी पीड़ा नहीं करै- और कोई रोग को भी नहीं प्रगट करे- यहक्षुद्र श्वाससाध्यकहाहै

बलिनःसर्वेचाव्यक्तलक्षणाः॥ क्षुद्रःसाध्य तमस्तेषांतमकःक्षुद्रउच्यते॥ त्रयःश्वासा नसिद्ध्यंतितमकोदुर्बलस्यच॥२६॥

अर्थ- बलवान् पुरुष के सब महा श्वासादिकों के लक्षण प्रगट न होंय तौ साध्य है- तिनमें भी क्षुद्र श्वास अत्यंत साध्य है- और तमकको क्षुद्र कहते हैं- अथवा (तमकःक्षुद्रउच्यते) इस जगह (तमकःकृच्छ्र उच्यते) ऐसा भी पाठ कोई कहते हैं- उस्का अर्थ यह है कि तमक कृच्छ्र साध्य है- महान्-उर्ध्व और छिन्न- ये तीन श्वास सम्पूर्ण लक्षण युक्त साध्य नहीं हों- और निर्बल पुरुषके तमक श्वास भी साध्य नहीं होय॥२६॥

कामंप्राणहरारोगाबहवोनतुतेतथा। यथा श्वासश्चहिक्काचहरतःप्राणमाशुवै

अर्थ- प्राण हरण करने वाले- जैसे सन्निपात- ज्वरादिक रोग बहुत में हैं सो ठीक है- परंतु श्वास और हिचकी ये जैसे जल्दी प्राण हरण करें ऐसे और ज्वरादिक नहीं करैं॥२७॥

इतिश्रीपण्डितदत्तरामबिरचितमाधवार्थ बोधनीमाथुरीभाषाटीकायांहिक्का तथाश्वासनिदानसमाप्तम्

स्वरभेदनिदान

अत्युच्चभाषणविषाध्ययनाभिघात । संदूष
णैःप्रकुपिताःपवनादयस्तु । स्रोतःस्वतेस्व
रवहेषुगताःप्रतिष्ठां । हन्युःस्वरंभवतिचा-
पिहिषड्विधःसः ॥२॥

अर्थ- बहुत ज़ोर के बोलने से-बिषके खाने से-ऊंचेस्वर के पाठ करने से अर्थात् वेदादि पाठ करने से कंठमें लकड़ी-काष्ठ आदि की चोट लगने से-कोप को प्राप्त भये जो- बात-कफ पित्त-सो कंठ में स्वर के बहने वाली (चोरनसें हैं) उनमें प्राप्त हो अथवा उनमें बृद्धि कोप्राप्त स्वर को नाश करे- यह (स्वरभेद) रोग-बात-पित्त-कफ-सन्निपात-क्षय और भेद इनभेदों से छः प्रकारका है ॥२॥

बातस्वरभेदकेलक्षण

वातेनकृष्णनयनाननमूत्रवर्चा- भिन्नंस्वरंव
दतिगर्द्धभवत्स्वरंच

अर्थ- बायु से स्वर भंग होय तौ-रोगी के नेत्र-मुख-मूत्र और विष्ठा- यह काले होय वह पुरुष टूटो शब्द बोले अथवा गधा के स्वर प्रमाण कर्कश स्वर बोले ॥

पित्तजस्वरभेदकेलक्षण

पित्तेनपीतनयनाननमूत्रवर्चा ब्रूयाद्गलेनस
चदाहसमन्वितेन ॥२॥

अर्थ- पित्तस्वर भेद वाले मनुष्य के-नेत्र-मुख-मूत्र-औरविष्ठा ये पीले होते हैं- और बोलते समय गले में दाह होय है ॥

१ यदुक्तं सुश्रुते - द्वाभ्यांभाषतेद्वाभ्यां घोषं करोति भाषण घोषणयोरल्पमहत्वाभ्यांभेदः

(विषाध्ययनाभिघातैः) अत्रस्थानेविषम प्राणाभिघातैरितिपाठस्साधुः

कफकेस्वरभेदकेलक्ष·

बूयास्तकफेनसततंकफरुद्धकंठः स्वल्पंशनै
र्वदतिचापिदिवाबिशेषात् ॥

अर्थ- कफ के स्वरभेद से- कंठ कफ से रुका रहै- और मंद मंद तथा थोड़ा वोले दिन में बहुत बोले ॥

सन्निपातकेस्वरभेदका·

सर्वात्मकेभवतिसर्वविकारसंपत्तंचाप्यसा
ध्यमृषयः स्वरभेदमाहुः ॥ ३ ॥

अर्थ- सन्निपात के स्वर भेद में तीनों दोषों के लक्षण होयहैं यह स्वरभेद असाध्य है ऐसे ऋषि कहते हैं ॥ ३ ॥

क्षयजन्यस्वरभेदकेलक्ष·

धूम्येतवाक्क्षयकृतेक्षयमाप्नुयाच्च । वागेष
चापिहतवाकपरिवर्जनीयः

अर्थ- क्षई के स्वर भेद वाले पुरुष के बोलते समय मुख से धूआँ सरीखा निकले- और वाणी क्षय होजाय- अर्थात् यथार्थ स्वर नहीं निकले । इस स्वरभेद में जिस समय- वाणी हत होजाय अर्थात् ओज का क्षय होने से बोलने की सामर्थ नहीं हो - तब यह असाध्य होय है - और ओजका क्षय (नाश) नहीं होय तौ साध्य है ॥

मेदकेस्वरभेदकेल·

अंतर्गतंस्वरमलक्ष्यपदंचिरेणमेदोन्वयाद्व
दतिदिग्धगलस्तृषार्त्तः ४

अर्थ- मेदके सम्बंध से कफ अथवा मेद इन्से गला लिप्तहोय अथवा मेद सैं स्वर के मार्ग रुकजाने से प्यास बहुत लगे- गले के भीतर वोले- और मंद वोले ॥ ४ ॥

असाध्यलक्षण

क्षीणस्यवृद्धस्यकृशस्यचापि । चिरोत्थितो यस्यसहोपजातः । मेदस्विनःसर्वसमुद्भव
श्चस्वरामयोयोनससिद्धिमेति ५

अर्थ- क्षीण पुरुषके - वृद्ध के - कृषाके - बहुत दिनका जन्म के संगही प्रगट भया - मोटे पुरुष के - और सन्निपातोद्भव - असा स्वरभेद रोग साध्य नहीं होय ॥ ५ ॥

इतिश्रीपण्डितदत्तराममाथुरनिर्मितमाधवार्थबोधनीमाथुरीभाषाटीकायांस्वरभेदरोगनिदानंसमाप्तम्

अरोचकनिदानम्

वातादिभिःशोकभयातिलोभ क्रोधैर्मनोघ्नाशनरूपगंधैः ॥ अरोचकाःस्युःपरिहृष्टदंत कषायवक्त्रस्यमतोऽनिलेन१

अर्थ- पृथक् बातादिक दोष करके ३ सन्निपातसे १ शोक से १ भय सें १ अति लोभसे १ तथा अति क्रोधसे असे ८ प्रकार का अरोचक (अरुचि) रोग है वह मन को क्लेश देने वाले अन्न - रूप - और गंध इन कारणों से प्रगट होय है - परंतु (सुश्रुत) और अन्य ग्रन्थों के मत से पांच ही प्रकार की मुख्य मानी है - भय - लोभ - क्रोध की अरुचि को शोक की ही अरुचिके अन्तर मानते हैं ॥ बादी की अरुचि से दांत

---

१ अरोचके भवेद्दोषैरेकौ हृदय संश्रयैः सन्निपातेन मनसः सन्तापेनच पंचमः इति

खट्टे हों - और मुख कसेला होय ॥

कट्वम्लमुष्णंविरसंचपूति पित्तेनविद्यात्-
लवणंचवक्त्रं । माधुर्यपैच्छिल्यगुरुत्वशै
त्यविबद्धसंबद्धयुतंकफेन २

अर्थ- पित्तकी अरुचि से - कडुआ - खट्टा - गरम - बिरस -
दुर्गंधयुक्त ऐसा मुख होय

कफ की अरुचि से खारा - मीठा - पिच्छल - भारी - शीतल - ऐ
सा मुख होय है - और बंधा सरीखा अर्थात् खाय नहीं - और आं
तकफसेलिप्तहोय

शोकादिअरुचिकेलक्ष॰

अरोचके शोकभयातिलोभ क्रोधाद्यहृद्या
ऽशुचिगंधजेस्यात् । स्वाभाविकंचास्यमथारु
चिश्चत्रिदोषजेनैकरसंभवेत् ३

अर्थ- शोक - भय - अतिलोभ - क्रोध - अहृद्य (अर्थात् अप
ने मनको बुरी लगै ऐसी बस्तु) अपवित्र - बास इन्से प्रग
ट भई अरुचि में मुख स्वाभाविक रहै अर्थात् बातजादिकोंके
सदृश कसेला - खट्टा - आदि नहीं होय ।

सन्निपात की अरुचि में अन्न सें अरुचि तथा मुखमें अनेक
रसमालूमहों

बातजादिभेदकरके मुखकी विकृतिको कहिकर अन्यारिकानेपरजोविकृति होयहैउसेकहतेहैं

हृच्छूलपीड़नयुतंपवनेनपित्तात्तृट्दाहचो
षबहुलंसकफ प्रसेकं । श्लेष्मात्मकंबहुरु
जंबहुभिश्चविद्याद्वैगुण्यमोहजड़ताभिरथा

पंच॥४॥

अर्थ- बात की अरुचि में हृदय में शूल- और बेदना होतीहै पित्त से- प्यास-दाह- और चूषने के सदृश पीड़ा ये लक्षण होते हैं-
कफ की अरुचि मुखसे कफ गिरे-
सन्निपात की अरुचि में पीड़ा अत्यंत होय-
वैगुण्य- (कहिये मनकी व्याकुलता) मोह- जड़त्व- इनलक्षणों से अपर कहिये आगंतुज अरोचक जाने-
भूख होय परंतु खाने की सामर्थ्य न होना इस्को- अरुचि- कहते हैं आप को प्रियवी अन्न किसी ने दिया परंतु खाय नहीं उस्को अन्नाभिनन्दन कहते हैं-
अन्नके- स्मरण- श्रवण- दर्शन- और वास- इनसे जिस्को त्रास प्राप्त होय- उस्को- भक्तद्वेश- कहते हैं- या प्रकार ये रोग तीनप्रकार का है- इसी वास्ते- चरक- सुश्रुत ने- अरोचक- शब्द करके संग्रह करा है॥

इतिश्रीपण्डितदत्तराममाथुरनिर्मितमाधवार्थबोधनीमाथुरीभाषाटीकायांअरुचिरोगनिदानंसमाप्तम्

छर्दिनिदानम्

छर्दिकेकारणऔरनिरुक्ति

दुष्टैर्दोषैः पृथक्सर्वैर्बीभत्सालोकनादिभिः

१ उक्तं हि वृद्धभोजेन- प्राक्षिप्तं यन्मुखे चान्नं जंतोरास्वदते मुहुः। अरोचकः सविज्ञेयो भक्तद्वेष मथोश्रृणु ॥ चिंतयित्वातुमनसादृष्ट्वाश्रुत्वाथभोजनं । द्वेषमायातियोजन्तुर्भक्तद्वेषः स उच्यते । कुपितस्य भयार्त्तस्य अभिचाराभिभूतये- यस्यान्नेनभवेत्- श्रद्धा सभक्तद्वेषउच्यते ॥ इति ॥

छर्दयःपंचविज्ञेयास्तासांलक्षणमुच्यते १
अतिद्रवैरतिस्निग्धैरहृद्यैर्लवणैरपि ।अका
लेचातिमात्रैश्चतथासात्म्यैश्चभोजनैः २ श्र
माद्भयादथोद्वेगादजीर्णात्क्रमिदोषतः ।नार्या
श्चापन्नसत्वायास्तथातिद्रुतमश्नतः ३ बीभत्सै
र्हेतुभिश्चान्यैर्द्रुतमुत्क्लेशितोबलात् ।छादय-
न्नाननंबेगैरर्दयन्नङ्गभञ्जनैः ४ निरुच्यतेछ
र्दिरितिदोषोवक्त्रम्प्रधावति ॥ ४॥

अर्थ- दुष्ट भये पृथक् और सब दोषों करके - तथा दुष्ट बस्तु के देखने से आदि शब्द करके दुष्ट गंध के भक्षण से पांच प्रकार की छर्दि (अर्थात् जिस्को रद्द-वमन - उलटी कहते हैं) उस्के लक्षण आगे कहते हैं

अत्यंत पतले अथवा चिकने अहृद्य (अप्रिय) वस्तु खारे के पदार्थ इन्के सेवन करने से - कुसमय भोजन करने से अथवा अत्यंत भोजन करने से - अथवा जो न पचे ऐसे भोजन करने से - श्रम - भय - उद्वेग - अजीर्ण - कृमिदोष - इन कारणों से गर्भिणी स्त्री के गर्भ की पीड़ा से - तथा जल्दी - जल्दी भोजन करने से - अथवा और बीभत्स (खोटे) कारणों से जैसे विष्टा-राध- आदिका देखना - इन्सेतीनों दोष कुपित हो बल से मुख को अच्छादन करे और अंगों को पीड़ा कर मुखद्वारा खायापिया भया सब काढ़ देय - इस्को (छर्दि) उलटी ऐसे मनुष्य कहते हैं + उदान वायू बमन कराती है ॥ ४॥

पूर्वरूप

हृल्लासोद्गारसंरोधौ प्रसेकोल्लवणस्तनुः । द्वे
षोन्नपानेचभृशंवमीनांपूर्वलक्षणम् ५

अर्थ- हृदय से खारा- खट्टा प्रथम ही निकले- अथवा स्रुखी रहै होय - डकार आवै नहीं - लार गिरे - खारी मुख हो जाय- अन्न और पानी में अत्यंत अरुचि होय - येछर्दि (छांट) के पूर्वरूपहैं

बातकीछर्दिकेलक्ष.

हृत्पार्श्वपीड़ामुखशोषशीर्ष नाभ्यर्त्तिकास स्वरभेदतोदैः । उद्गारशब्दंप्रवलंसफेनं वि-च्छिन्नकृष्णंतनुकंकषायम् ॥ ६॥ कृच्छ्रेणचाल्पंमहताचवेगे नाऽर्त्तोऽनिलाच्छर्दयतीहदुःखम्

अर्थ- हृदय और पसवाड़ा इन्में पीड़ा होय-मुख शोष-मस्तक - और नाभि इन्में शूल होय- खांसी - स्वरभेद-सुई चुभने कीसी पीड़ा होय- डकार का शब्द प्रबल होय-बमन में झाग आवैं - ठहर ठहर कर वमन होय- तथा थोड़ी होय - वमन का रंग काला होय-पतली- और कसैली - होय- बमन का बेग बहुत होय- परंतु वमन थोड़ा होय - और बेग के प्रभाव से दुःख बहुत होय ये लक्षण बाय की छर्दि के हैं ॥

पित्तकीछर्दिकेलक्षण

मूर्छापिपासामुखशोषशीर्ष- ताल्वक्षिसंतापतमोभ्रमार्तः । पीतंभृशोष्णंहरितंसतिक्तं । धूम्रंचपित्तेनवमेत्सदाहम् ॥ ७ ॥

अर्थ- मूर्च्छा - प्यास- मुख शोष- मस्तक- तालु आ- नेत्र-इन्में सन्ताप- अर्थात् तपायमान रहैं- अंधेरा आना-चक्कर आवै- रोगी पीला - गरम- हरा न कड़ुआ धूआँ के रंग का- और दाह युक्त ऐसा पित्तको वमन करे यह पित्तकोवमनका लक्ष

णहै ॥

कफकीछर्दिकेलक्षण

तंद्रास्यमाधुर्यकफप्रसेकसंतोषनिद्राऽरु
चिगौरवार्तः स्निग्धघनंस्वादुकफाद्धिशुद्धं ॥
सरोमहर्षोऽल्परुजंवमेत्तु ८॥

अर्थ- तन्द्रा-मुखमें मिठास-कफका पड़ना-संतोष-(अन्नमें अरुचि) निद्रा-अरुचि- भारीपना-इनसे पीड़ित हो-चिकना-गाढ़ा-मीठा-सफेद-ऐसे कफको बमन करे-जब ओके तब पीड़ा थोड़ी होय-रोमांच होंय- ये कफ की छर्दि के लक्षणहैं ८॥

त्रिदोषछर्दिकेलक्ष-

शूलाविपाकाऽरुचिदाहतृष्णाश्वासप्रमो
हप्रबलाप्रसक्तं । छर्दिस्त्रिदोषाल्लवणाम्ल
नीलसांद्रोष्णरक्तंवमतांनृणांस्यात् ९

अर्थ- शूल-अजीर्ण-अरुचि-दाह-प्यास-श्वास-मोह-इन लक्षणों से प्रबल भई जो वमन सो सन्निपात से होयहै-रद्द करने वाले की बमन-खारी-खट्टी-नीली-संघट्ट-(जिस्को देसवारी मनुष्य-जाड़ी कहे हैं) गरम-लाल-ऐसी होय है ९॥

असाध्यलक्षण

विट्स्वेदमूत्रांबुवहानिवायुः स्रोतांसिसंरुद्ध्य
यदोर्ध्वमेति ॥ उत्सन्नदोषस्यसमाचितंतं-
दोषंसमुद्धूयनरस्यकोष्ठात् ॥ १०॥ विण्मूत्रयो
स्तत्समगन्धवर्णंतृट्श्वासकासार्तियुतंप्रस
क्तं ॥ प्रच्छर्दयेद्दुष्टमिहातिवेगात्तयार्दितश्चा
शुविनाशमेति ॥

१ सदुक्तं-सुश्रुते-श्लक्ष्णं हिमं सांद्रं कफं कफेन इति

अर्थ- जिस समय यह वायु-पुरीष-पसीना-मूत्र-और जल-इनके बहने वाली नाड़ीन्के मार्ग को रोक कर ऊपर आवै तब ऊपर आवै जो दोष (मलमूत्रादि) उन्को कोठे से बाहर निकाल वमन करावै-उस बमन में मल मूत्र की सी दुर्गंध आवै तथा बर्ण भी मल मूत्र के सदृश होय-प्यास-श्वास-खाँसी और शूल-ये होय-और यह वमन बारंबार बड़े बेग से होय है-इस बात से पीड़ित मनुष्य थोड़े काल में नाश को प्राप्त हो-यह भी सन्निपात को है ऐसे कोई आचारी कहते हैं-और अन्य आचारी कहते हैं कि सब छर्दि प्रबल है ऐसी छर्दि असाध्य है ॥

आगंतुजछर्दिके लक्ष॰

वीभत्सजा दोहदजाऽमजाचयाऽसात्म्यजाचा
कृमिजाचयाहि। सा पंचमी तांचविभावयेत्तु
दोषोच्छ्रयेणैवयथोक्तमादौ ॥१२॥

अर्थ- वीभत्स पदार्थ-कहिये-मल-राध-रुधिर-आदि अपवित्र बस्तु के देखने से-गंध से-स्वाद से-स्त्री के गर्भ रहने से-आम से-असमान भोजन से-अथवा कृमि रोग से-इन कारणों से प्रगट भई-आगंतुज पांचमी छर्दि होय है-उस में पूर्वोक्त कहे लक्षणों में से जिस दोष के अधिक लक्षण मिलें उसी दोष को प्रबल जाने १२

कृमिकी छर्दिके लक्षण

शूलहृल्लासबहुलाकृमिजाच विशेषतः। कृ
मिहृद्रोगतुल्येनलक्षणेनचलक्षिता १३

अर्थ- कृमि की छर्दि में-शूल-खालीरद-ये बिशेष होते हैं-और बहुधा करके कृमि और हृदय रोग इन्के लक्षण सदृश लक्षण जानने जैसे पिछाड़ी कहि आये हैं ॥ ॥ यथा ॥ ॥

उत्क्लेदः ष्ठीवनंतोदः शूलंहृल्लासकस्तमः अ
रुचिःश्रवावनेत्रत्वंशोषश्छर्दिक्रमिजेभवेत् ॥

साध्यासाध्यलक्षण

क्षीणस्ययाछर्दिरतिप्रसक्ता सोपद्रवा शोणित
पूययुक्ता। सचंद्रिकांतांप्रवदेदसाध्यांसाध्यां-
चिकित्सेन्निरुपद्रवांच ॥ २४॥

अर्थ- क्षीण पुरुष की- अथवा बारंबार एकसी होनेवाली
- और कासादि उपद्रव युक्त - और रुधिर-राध मिली-मोर
चंद्रिका के समान- ऐसी छर्दि असाध्य है- और जो उपद्रवर
हित हो उस्को साध्य समझ कर उपाय करे ॥ २४॥

उपद्रव

कासश्वासौज्वरोहिक्का तृष्णावैचित्यमेवच ॥
हृद्रोगस्तमकश्चैवज्ञेयाश्छर्देरुपद्रवाः २५॥

अर्थ- खांसी-श्वास-ज्वर-हिचकी-प्यास-बेचैन-हृदयरो
ग- अंधेराआना-येछर्दिरोगके उपद्रव होय हैं ॥२५॥

मधुकोशंमुनिर्मथ्यसारमाकृष्यवैमया ब्रज
भाषाकृताटीकामाधवार्थप्रकाशिका-

इतिछर्दिनिदानम्

अथतृष्णानिदानलिख्यते

सम्प्राप्ति

भयश्रमाभ्यांवलसंक्षयाद्वाप्यूर्ध्वंचितंपित्तवि
वर्धनैश्च। पित्तसवातंकुपितंनराणांतालुप्रप
न्नंजनयेत्पिपासाम् ॥१॥

अर्थ- भय से- श्रम से- बल के क्षय से- और पित्तके बढानेवा

ले क्रोध-उपवासादिकों से- अपने स्थान में संचित भयो जो पित्त और वात ये कुपित होकर ऊपर तालु को (पिपासास्थान में आय तृष्णा (प्यास) को उत्पन्न करे। इस जगह तालु का तो उपलक्षण मात्र है तालुके कहने से क्लोम स्थान (हृदयमें जो प्यास का स्थान है का भी ग्रहण है क्योंकि वोभी प्यास का स्थान है-सो (चरक) में लिखा है[1]

अन्नजादिकतृष्णाकीसंप्रा

स्रोतःस्वपांवाहिषुदूषितेषुदोषैश्चतृष्णाभवतीहजंतोः। तिस्रःस्मृतास्ताःक्षतजाचतुर्थी। क्षयात्तथाह्यामसमुद्भवाच[2] भक्तोद्भवासप्तमिकेतितासांनिबोधलिंगान्यनुपूर्वशश्च॥

अर्थ- जलके बहने वाली नसके दूषित होने से दोष (अन्न कफ- और-आम) इन्से तृष्णा रोग होय है - सो तीन और चौथी क्षतज - तृष्णा (जो व्रण वाले पुरुष के होती है) पाँचमी क्षय से होती है - छटी आम से होय है- सातवी अन्न से होयहै उन्के लक्षण क्रमसे कहता हूं इन्से पहिली चार तृष्णा सुखसाध्य साध्य है- और वाकी की तीन कष्ट साध्य हैं ÷ शंका ÷ क्यौं जी इस श्लोक में (स्रोतःसु) यह बहुबचन क्यौं धरा ये बिरुद्ध है क्योंकि (सुश्रुत) में तो जलके बहने वाली दोही नाड़ी मानी है ÷ उत्तर ÷ अन्न- कफ- आम- को दुष्ट करने से- तथा दुष्टरोगोंके सम्बन्ध होने से- अन्न- आम- कफ- को दोषत्व ग्रहण है- यह- गयदास का मत है अथवा दोष के

[1] रसवाहिनीच धमनी जिव्हामूलगलतालुक्लोम्नः संशोष्य नृणां देहे कुरुतस्तृष्णामतिप्रबलौतास्विति॥ [2] हे उदकवहे इति॥

कहने से बात-पित्त-कफ-काही ग्रहण करना चाहिये ॥

बातकीतृषाकेलक्ष०

क्षामास्यतामारुतसंभवायां । तोदस्तथाशं
खशिरःसुचापि ॥ स्रोतोनिरोधोविरसंचव
क्त्रं शीताभिरद्भिश्चविवृद्धिमेति ३

अर्थ- बात की तृषा (प्यास) सें-मुख उतर जाय- अथवा दीन होय-कनपटी- और मस्तक-इन ठिकाने नोचने के समान पीड़ा होय-रस- और जल बहने वाली नाड़ीन्का मार्ग रुक जाय- मुख से स्वाद जाता रहै- और शीतल जलके पीने से प्यास बढ़े-यह अनुपशय के लक्षण हैं-चकारसे निद्रा का नाश होय ३॥

पित्तकीतृषाकेलक्षण

मूर्च्छान्नबिद्वेषबिलापदाहा । रक्तेक्षण-
त्वंप्रततश्चशोषः ॥ शीताभिनंदामुखति
क्तताच । पित्तात्मिकायांपरिदूयनंच ४

अर्थ- पित्तकी तृषा में मूर्च्छा- अन्न में अरुचि- बड़बड़-दाह- नेत्रों में लाली - अत्यंत शोष- शीत पदार्थ की इच्छा-मुख में कड़वाट - और सन्ताप-यहलक्षण होते हैं ॥४॥

कफकीतृषाकेलक्षण

बाष्पावरोधात्कफसंवृतेऽग्नौ-तृष्णाब
लासेनभवेत्तथातु । निद्रागुरुत्वंमधुरास्य
ताचतृष्णार्दितःशुष्यतिचातिमात्रं ५

अर्थ- अपने कारण से कुपितकफ करके जठराग्नि आच्छादितहोय-तब अग्नि की गरमी अधोगत जल के बहने बालीनाड़ीन्को सुखाय- कफ की तृषा को प्रगटकरे- + केवल कफ सेतृष्णा को प्रगट होना असंभव है-क्यों कि-केवल कफवंढे भरका

द्रवी स्रतधर्म-(पतला) होनेसे प्यासकर्तृत्व असंभव है-औरवा
त पित्त की तृषा करने वाले होनेसे सो ग्रन्थान्तर में लिखा भी है॥
इसी से चरकाचार्य ने कफ की तृष्णा नहीं कही-सुश्रुतने चिकि
त्सा में भेद होने से कही है-और हारीत ने भी सपित्त-कफ की
तृषा मानी है-केवल कफ की नहिं मानी- ÷ इस त्रिषा में निद्रा-
भारीपना-मुख में मिठास-यह लक्षण होते हैं। इसत्रिषा से
पीड़ित पुरुष अत्यन्त सूख जाय है॥५॥

क्षतजतृष्णाकेलक्षण

क्षतस्यरुक्शोणितनिर्गमाभ्यां तृष्णाच
तुर्थीक्षतजामतातु

अर्थ- शस्त्रादिक के लगने से घाव होय तब उस पुरुष के पी-
ड़ा-और रुधिर का स्राव होने से जो तृष्णा होय-यह चौथी क्ष
तजतृष्णाजाननी ÷

क्षयजतृषाकेलक्षण

रसक्षयाद्याक्षयसंभवासा-तयाभिभूतस्त
निशादिनेषु॥ पेपीयते भः ससुखंनया
ति तांसन्निपातादितिकेचिदाहुः॥७॥रस
क्षयोक्तानिचल णानि तस्यामशेषेणभि
षग्व्यवस्येत्

१ यदुक्तं-पित्तंसवातं कुपितं नराणांइत्यादि

चरकेप्युक्तम्-मंदस्याग्नेर्विनाहित्तृष्णा पवनाद्वातौहिशोषणे हेतुरिति

सुश्रुतेप्युक्तम्-मंदस्याग्नेयवायव्यौगुणावंबुवहानिच। स्रोतांसिशोषयेच्चस्मात्त
त्तृष्णा प्रवर्तते॥ ÷ ॥ तदुक्तंहारीतेन- स्वाद्वम्ललवणाजीर्णैः क्रुद्धः श्लेष्मासहोष्मणा
प्रपद्याम्बुवहस्रोतस्तृष्णांसंजनयेन्नृणाम्॥ शिरसोगौरवंतंद्रामाधुर्यंवदनस्यच भक्तद्वे
षः प्रसेकश्चनिद्राधिक्यंतथैवच। लिंगैरेतैर्विजानीयात् तृष्णां कफसमुद्भवाम्॥ ÷

अर्थ- रसक्षय से जो तृष्णा होय उसमें जो लक्षण होय हैं सो सब क्षयज तृष्णा में होते हैं- तिस्से पीडित तथा पुरुष रात्रि-दिन बारं बार पानी पीवै- परंतु संतोष नहीं होय - कोई आचारी इसको सन्निपात से प्रगट कहते हैं - रस क्षय के जो लक्षण कहे हैं[१] वे सब होते हैं सो वैद्योंको जानने चाहिये (रसक्षयलक्षण - सुश्रुतमें - कहेहैं सो या प्रकार - रसक्षय होने से - हृदय में पीड़ा होय - कंप - शोष - बधिरता - (बहरापना) या प्रकार और प्यास

आमजतृष्णाकेलक्ष-

त्रिदोषलिंगाऽमसमुद्भवातु हृच्छूलनिष्ठीव नसादकर्त्री ८

अर्थ- आमज कहिये - अजीर्ण से जो तृष्णा होय उसमें तीनों दोषों के लक्षण होते हैं सो सुश्रुत में लिखा भी है और हृदय में शूल - लारकागिरना - ग्लानि - येसब होय हैं

अन्नजतृषाकेलक्षण

स्निग्धंतथाम्ललवणंचभुक्तंगुर्वन्नमेवाशु तृषंकरोति ॥

अर्थ- चिकना - खट्टा - खारा - चकार से कडुआ - कषैला आदि जानना - ऐसे भोजन से - तथा मात्राधिक - और भारी ऐसे अन्न खाने से - अवश्य ही शीघ्र प्यास को प्रगट करे - दृढबल - आचारी ने पाँचही प्रकार की तृष्णा कही है - वात की - पित्त की - क्षय की - आमकी - उपसर्गकी - नहीं कफ की - तृषा के अंतर्गत कही है - और क्षतजा वात की तृषा के अंतर्गत जाननी - और अन्नजा

१ रसक्षये हृत्पीडा - कंप - शोष - बधिरता - तृष्णा चेति -

२ अजीर्णात्पवनादीनां विभ्रमो बलवान् भवेत् इति। सततंयःपिबेत्तोयंनतृप्तिमधिगच्छति। पुनःकांक्षतितोयंच तंतृष्णार्दितमादिशेत् इति ॥

भी वात की तृषा के अंतर्गत कही है - क्यौं कि भोजन सेवा
त का कोप होय है - ÷ शंका ÷ क्यौं जो सुश्रुत ने मद्य
के प्रकर्ण में मद्य की तृष्णा कही है - फिर माधवाचार्य ने सा
तही तृष्णा कैसे कही हैं ÷ उत्तर ÷ दृढ़बल आचारी के म
त से मद्य की तृषा को वात की तृषा के अन्तर्गत होने से माधवा
चार्य ने सात ही कही हैं

उपसर्गजतृषा के लक्षण ।

दीनस्वरः प्रताम्यन्दीनाननशुष्कहृदयग
लतालुः ॥९॥ भवतिखलुसोपसर्गात्तृष्णा
साशोषिणीकष्टा । ज्वरमोहक्षयकासश्वासा
द्युपसृष्टदेहानां १०

अर्थ- हीनस्वर - मोह - मनमें ग्लान होय - मुख दीन होजाय -
हृदय - गला - और तालु - सूख जायं - यह तृष्णा उपद्रव से हो
य है - यह मनुष्य को सुखाय डाले ब्याधि से शरीर कृश होने से -
यह कष्ट साध्य हो जाय है - वो उपद्रव यह हैं - ज्वर - मोह - क्ष
य - खांसी - श्वास - आदि शब्द से अतिसारादिकों का ग्रहण है ॥
ये रोग जिस्के होय उस्के तृष्णा कष्ट साध्य जाननी ॥१०॥

असाध्यलक्षण

सर्वास्त्वतिप्रसक्तारोगकृशानांवमिप्रसक्ता
नाम् ॥ घोरोपद्रवयुक्तास्तृष्णामरणायवि
ज्ञेयाः ११

अर्थ- वातआदि - सब प्रकार की तृष्णा अत्यन्त बढ़ी हुई - अ
थवा रोग से कृश भया ऐसे पुरुष के जो तृष्णा है सो - अथवा -
छर्दि से प्रगट भई जो तृषा - और जो भयंकर उपद्रव करके युक्त
ऐसी तृष्णा मारने का कारण होय है ॥ ११ ॥

मधुकोशंमुनिर्मथ्यसारमाकृष्यवैमया ॥
ब्रजभाषाकृताटीकामाधवार्थप्रकाशिका॥
इतिश्रीपण्डितदत्तरामसमाथुरनिर्मितमाधवार्थबो
धनीमाथुरीभाषाटीकायांतृष्णारोगनिदा
नंसमाप्तम्

मूर्च्छानिदान

निदान और संप्राप्ति

क्षीणस्यबहुदोषस्य विरुद्धाहारसेविनः ।
वेगाघाताद्भीघाताद्धीनसत्वस्यवापुनः१
करणायतनेषुग्राबाह्येष्वाभ्यंतरेषुच । नि
विशंतेयदादोषास्तदामूर्च्छंतिमानवाः २॥
संज्ञावहासुनाड़ीषुपिहितास्वनिलादिभिः।त
मोऽभ्युपैतिसहसासुखदुःखव्यपोहकृत् ३
सुखदुःखव्यपोहाच्चनरःपततिकाष्टवत्। मो
होमूर्च्छेतितामाहुःषड्विधासाप्रकीर्त्तिता ४
वातादिभिःशोणितेनमद्येनचविषेणच। ष
ट्स्वप्येतासुपित्तंतुप्रभुत्वेनावतिष्ठते॥ ५॥

अर्थ– तृष्णा में मोह होयहै इसी से तृष्णा के अनन्तर मूर्च्छा को कहते हैं- क्षीण पुरुषके -बहुत दोष के संचय होनेसे - विरुद्ध आहार क्षीर मत्स्यादिक के सेवन करने से मल- मूत्रादि वेग के धारण करने से- लकड़ी आदिके चोट लगने से- अथवा जिस पुरुष का सतोगुण क्षीण होगया होय- ऐसे पुरुष की बाहरको और भीतर की मन के बहने वाली नाड़ीन्में दोष प्रवेशकरें तब मनुष्य को मूर्च्छा आती है - अर्थात् संज्ञा के बहनेवाली

नाड़ीन्में बातादि दोषों करके आच्छादित होने से सुखदुःख का ज्ञान नष्ट होय तब मनुष्य पृथ्वी पर काष्ट कीसी तरह गिरिड़रा रोग को मूर्च्छा - अथवा मोह ऐसे कहते हैं - अथवा बाहर की इन्द्री जो नेत्र-कान-आदिकइंद्रि- और बुद्धीन्द्री इन्में - बलवान् दोष (बात-पित्त-कफ-) घुसकर संज्ञा को बहनेवाली जो नाड़ी तिन्को बह-बात-पित्त-कफ-रोक अंधकार को प्रगट करें तब मनुष्य काष्ठ की भांति पृथ्वी पर गिरै उसको मूर्च्छा कहते हैं- अथवा मोह कहते हैं - सो मूर्च्छा छः प्रकार की है-बात-पित्त-कफ-से तीन प्रकार की और रुधिर- विष- और मद्य इन भेदों से तीन प्रकार- की इन तीनों मूर्च्छान्में पित्त है सो मुख्य प्रधान है-अथवा व्यापक है

मूर्च्छाकापूर्वरूप

हृत्पीडाजृंभणंग्लानि:संज्ञादौर्बल्यमेवच ।
सर्वासांपूर्वरूपाणियथास्वंताविभावयेत् ॥

अर्थ- हृदय में पीड़ा-जंभाई-ग्लानि-भ्रांति-ये मूर्च्छा के पूर्व रूप हैं- आगे उस मूर्च्छा के बातादि भेद जानने-यह प्रगट अवस्था के पूर्व रूप अवस्था के भेद नहीं यह (जैज्जटा) चार्य कहते है

बातकीमूर्च्छाकेलक्षण

नीलंवायदिवाकृष्णमाकाशमथवाऽरुणम्
पश्यंस्तम:प्रविशतिशीघ्रंचप्रतिबुध्यते ॥ वे
पथुश्चांगमर्दश्चप्रपीडाहृदयस्यच । कार्श्यश्या
वारुणाछायामूर्च्छायेबातसंभवे ॥

अर्थ- जो मनुष्य नीले रंग का- अथवा काले रंगका- तथा लाल रंगका- आकाश को देखे पीछे मूर्च्छा को प्राप्त होय- और जल्दी

१ उक्तंचाभिधानांतरे-संज्ञोपघातेमूर्च्छायोमूर्च्छास्यान्मूर्च्छनंतथा ॥ कश्मलंप्रलयोमोहः संन्यासरूपमतोपमः इति ॥

होश होजाय- देहमें कंप- अंगोंकाटूटना- हृदय में पीड़ा होय- शरीर कृश होजाय- शरीर कारंग काला लाल पड़जाय- उसको वात की मूर्च्छा जाननी ॥ ८ ॥

पित्तकीमूर्च्छाकेल०

रक्तंहरितवर्णंवावियत्पीतमथापिवा। प
श्यंस्तमः प्रविशतिसस्वेदश्चप्रबुध्यते ९
सोपपासःससंतापोरक्तपीताकुलेक्षणः। सं
भिन्नवर्चाः पीताभोमूर्च्छायांपित्तसंभवे १०।

अर्थ- जिस्को आकाश- लाल- हरा- पीला- दीखै पीछे मूर्च्छा- आवै- और सावधान होते समय- पसीना आवैं- प्यास होय- संताप होय- नेत्रलाल- पीले होंय- मल पतलाहोय- देहका वर्ण पीला होय- ये लक्षण पित्त की मूर्च्छा के हैं ॥ १० ॥

कफकीमूर्च्छाकेलक्षण

मेघसंकाशमाकाशमावृतंवातमोघनैः। प
श्यंस्तमःप्रविशतिचिराच्चप्रतिबुध्यते ११ गु
रुभिः प्रावृत्तै रंगैर्यथैवार्द्रेणचर्मणा। सप्रसे
कःसहृल्लासोमूर्च्छायेकफसंभवे १२

अर्थ- कफ की मूर्च्छा में आकाश- को मेघके समान- अथवा अंधकार के समान अथवा बद्दल इन्से व्याप्त देखकर मूर्च्छा गत होय- देरमें सावधान होय- भारी वोझासा देह पर भार माल्ूम होय- अथवा गीला चमड़ा धारण करा सा माल्ूम होय- मुख से पानी गिरे- रद्द होयगी- ऐसा माल्ूम न होय ॥ १२ ॥

सन्निपातकीमूर्च्छाकेल०

सर्वाकृतिःसन्निपातादपस्मारइवापरः। सं
जंतुंपातयत्याशुविनाबीभत्सचेष्टितैः २३ ॥

अर्थ- सन्निपात की मूर्च्छा में सब दोषों के लक्षण होते हैं - ये रोग दूसरा अपस्मार (मृगी) जानना चाहिये - परन्तु अपस्मार में दांतों का चबाना - मुख से फाग का गेरना - नेत्रों का हाल औरही प्रकार का हो जाना इत्यादिक लक्षण होते हैं सो इस रोग में नहीं होते - इतना ही भेद है - + शंका + क्यौंजी पूर्व तो छः प्रकार की मूर्च्छा कहि आये - फिर सन्निपात की मूर्च्छा कैसे कही + उत्तर + चरक की अष्टोत्तरीयाध्याय में लिखा है- जैसे अपस्मार चार प्रकार का है - बातका - पित्तका - कफका - सन्निपात का - उसी प्रकार मूर्च्छा रोग भी चार प्रकार का है - यही मत को ग्रहण कर माधवाचार्य ने सन्निपातकी मूर्च्छा कही है॥

रक्तकीमूर्च्छाकेल.

पृथिव्यापस्तमोरूपंरक्तगंधस्तदन्वयः। त
स्माद्रक्तस्यगंधेनमूर्च्छंतिभुविमानवाः १४
द्रव्यस्वभावइत्येकेदृष्ट्वायदभिमुह्यति। +

अर्थ- पृथ्वी - और जल - ये दोनों तमोगुण विशिष्ट हैं - (सो सुश्रुत में लिखा है) और रुधिर की गंध भी उन दोनों से - अर्थात् पृथ्वी और जल से प्रगट है - तो रुधिर की गंधभी तमो गुण विशिष्ट हुई - इसी से जो तामस पुरुष है सो रुधिर की गंधीसे मूर्च्छित होते हैं - और जो राजसी - सात्वकी - पुरुष हैं सो मूर्च्छित नहीं होते + शंका + क्यौंजो चंपक (चम्पा) पुष्पकी गंधसे भी मूर्च्छा होनी चाहिये - क्यौंकि उसमें भी पार्थिव अर्थात् तामस गुण बि-

१ चतस्रो मूर्च्छा अपस्मारे व्याख्याताः यथा चत्वारो पस्माराः बातेन - पित्तेन - श्लेष्मणा - सन्निपातेन - तद्वन्मूर्च्छा अपीत्यर्थ -
२ तमो बहुला पृथ्वी तमो बहुला आप इति

शिष्ट गंध है - इस वास्ते कहते हैं - (द्रव्यस्वभावमित्येके) अर्थात् कोई आचार्य कहते हैं कि ये द्रव्य का हीस्वभाव है अर्थात् रुधिर का यही स्वभाव है कि जिसकी गंधसे ही मनुष्य मूर्च्छित होय है - अब प्रभाव को और चोद्दढ़ करते हैं - (दृष्टायदभि मुह्यति) अर्थात् रक्त के देखने से भी मूर्च्छित होय है - सोलि खावो है ॥ २४॥

विषऔरमद्यसेउत्पन्नमूर्च्छाकोकहते हैं

गुणास्तीव्रतरत्वेनस्थितास्तु विषमद्ययोः। त
एवतस्मादाभ्यांतुमोहौस्यातांयथेरितौ २५।

अर्थ- तैलादिकों में जो दश गुण हैं वोही गुण विष औरमद्य में अत्यंततीव्रता से रहते हैं - इसी से विष- और मद्य के सेवन करने से मोह होय है इस में भी मद्य में तीव्र रहैं और विषमेंतीव्रतर हैं - इसी सें विषका मोह स्वयं शांति नहीं होय - क्यौं कि विष अपाकी है और मद्य का मोह - मद्य के नसा उत्तरे पर शांति हो जाय है - यह भेद विष और मद्य सें रहता है ॥ २५॥

रक्तजादितीनमूर्च्छोंकेल.

स्तब्धांगदृष्टिरुधिरजामूढोच्छ्वासश्चमूर्च्छितः १६
मद्येनविलपञ्शेतेनष्टविभ्रांतमानसः। गा
त्राणिविक्षिपन्भूमौजरायावन्नयातितत् १७ वे
पथुस्वप्नतृष्णाःस्युस्तमश्चविषमूर्च्छिते।वेदि
तव्यंतीव्रतरंयथास्वंविषलक्षणैः।१८

१ यदुक्तं - भवस्तब्धांगदृष्टिश्च गुढोच्छ्वासस्तथैवच। दर्शनादस्त्रजस्तस्मात्गंधाच्चैवप्रमुह्यति ॥१॥

२ यदुक्तं दृढवलेन - लघुरूक्षं आशुविशदं व्यवायि - तीक्ष्णं - विकाशि सूक्ष्मंच उष्णमनिर्देश्यरसं दशगुणमुक्तं विषंतज्ज्ञैः ॥२॥

अर्थ- रुधिर की मूर्च्छा में अंग और नेत्र निश्चल होजांय-और श्वास अच्छे प्रकार आवै नहीं ॥

बहुत मद्य के पीनेसे जो मूर्च्छा होय उसके ये लक्षण हैं-बहुत बके- सोयजाय- संज्ञा जाती रहै- भ्रमयुक्त होय- और जबतक मद्य न पचे- तबतक पृथ्वी में हाथ पैर पटके-

विषजन्य मूर्च्छा में-कांपे- सोवे-प्यासलगे- और अंधेराआवै और मूल-पत्र-दूध- इन्के भेद कर जो विष भक्षण से लक्षण होते हैं- सो सब लक्षण होते हैं ॥ १८॥

मूर्च्छा-भ्रम-तन्द्रा-औरनिद्राइन्के भेदकहतेहैं

मूर्च्छापित्ततमः प्रायारजः पित्तानिलाद्भ्रमः।
तमोवातकफात्तन्द्रानिद्राश्लेष्मतमोभवा १९

अर्थ- मूर्च्छा में पित्त और तमोगुण अधिक रहै हैं-रजोगुण पित्त और बायु इनसे भ्रम होय है-तमोगुण-बायु- और कफ- इनसे तन्द्रा - और कफ- तथा तमोगुण- इन्से निद्रा उत्पन्न होय है

तन्द्राकेलक्षण

इन्द्रियार्थेष्वसंप्राप्तिर्गौरवंजृंभणंक्लमः। नि
द्रार्त्तस्येवयस्येहतस्यतंद्रां विनिर्दिशेत् २०।

अर्थ- इन्द्री अपने अपने विषय को ग्रहण न करें-देहभारी होजाय- अर्थात् सुस्त होजाय-जंभाई- और क्लम होय -ये लक्षण निद्रार्त्त पुरुषके सदृश जिस्के होंय-उसको तन्द्रा कहतेहैं- इसमें

+ ये विषस्य गुणाः प्रोक्ताः संनिपातप्रकोपिणः त एव मद्ये दृश्यंते विषे तु बलवत्तराः इति

१ तत्र भ्रमः स्थाणौ पुरुषज्ञानं पुरुषे विपरीत सत्व ज्ञानादिकं अन्ये- चक्रस्थितस्येव संभ्रामवस्तु दर्शन मिति

आधे नेत्र खुले रहते हैं - निद्रा में इन्द्री और मन को मोह होय है- और तन्द्रा में केवल इन्द्रीन्कों ही मोह होय है - निद्रा और भ्रम ये दोनों अति प्रसिद्ध होने से माधवाचार्य ने नहीं कहे - परंतु - चरक[१] में कहे हैं - सो या प्रकार - जिस समय मन खेदको प्राप्त होय इन्द्री खेदको प्राप्त होय - और अपने अपने बिषय (शब्द-स्पर्श-रूप-गंध-रस) को त्याग देय तब यह मनुष्य को निद्रा आवती है ॥२०॥

संन्यासकेभेदकोकहतेहैं

दोषेषुमदमूर्च्छाद्यागतवेगेषुदेहिनाम्
स्वयमेवोपशाम्यंतिसंन्यासोनौषधैर्बिना २१

अर्थ- दोषों के वेग नष्ट होने से - मद - मूर्च्छादिक अपने आप शांति हो जाय हैं - परंतु संन्यास यह औषध के विना शांति नहीं होय है ॥२१॥

संन्यासकेलक्षण

वाग्देहमनसांचेष्टा आक्षिप्यातिबलामलाः
संन्यस्यंत्यबलंजंतुं प्राणायतनमाश्रिताः
२२ सनासंन्याससंन्यस्तः काष्ठीभूतोमृतो
पमः। प्राणैर्बिमुच्यते शीघ्रंमुक्त्वासद्यःफ
लांक्रियाम् ॥२३॥

अर्थ- अत्यन्त बलिष्ठ भये जो दोष सो - बाणी - देह - और मन इन्के व्यापार को बंद कर हृदय में प्राप्त हो निर्बल मनुष्य को मूर्च्छित करें - वह संन्यास सें पीड़ित मनुष्य काष्ठ की भाँतिपृथ्वी

१ यदातुमनसिक्लान्ते कर्मात्मानः क्लमान्वितः बिषयेभ्योनिवर्त्तन्ते तदा स्वपिति मानवः॥ २ योनायासश्रमो देहे प्रवृद्धः श्वासवर्जितः क्लमः स इति विज्ञेय इन्द्रियार्थप्रबाधकः॥

पर गिरे- उसकी सद्यः फल चिकित्सा अर्थात् सुई से छेदना-तीखा-अंजन का लगाना - अनामिका को पीड़ित करना- कोंचकी फली लगाना - दाह देना - नास देना- इत्यादिक क्रियन करै तौ वह रोगी प्राण बियुक्त कहिये मरणको प्राप्त हो अन्यथा बचे है ॥

मधुकोशंसुनिर्मथ्यसारमाकृष्ययत्नतः ॥
ब्रजभाषाकृताटीकामाधवार्थप्रकाशिका ॥

इतिश्रीपण्डितदत्तरामखाथुरनिर्मितमाधवार्थबोधनीमाथुरीभाषाटीकायांमूर्च्छानिदानं

मदात्ययनिदान

येविषस्यगुणाः प्रोक्तास्तेपिमद्येप्रतिष्ठिताः
तेनमिथ्योपयुक्तेनभवत्युग्रोमदात्ययः १ किं
तुमद्यंस्वभावेनयथैवान्नंतथास्मृतम् । अयु
क्तियुक्तंरोगाययुक्तियुक्तंयथाऽमृतम् २

अर्थ- विषके जो गुण कहे हैं सोई गुण मद्य में हैं- अर्थात् यही मद्य अविधि सें सेवन करा भया घोर भयंकर मदात्यय रोग प्रगट करै है - कोई ऐसी शंका करे कि - विषके गुण मद्य में हैं - या से विषके समान मद्य को सेवन न करै इस विषय में कहते हैं मद्य यह स्वभाव से ही- जैसे अन्न देह धारक है ऐसा ही है परंतु वो मद्य अविधि से पीवै तौ रोग कारक होय है- और बिधीसे

२ विधिश्चायं तद्यथा-कुसुमितलतोपगूढः प्रकटनिरंतरनवांकुरनिकरै रोमांचैः मधुकरमधुकरचुत्कारशित्कारैर्मुक्तकंठकलकंठकूजितैर्दक्षिणसमीरणोद्वेजितसमुच्छ्वासितपल्लवकरप्रचारैस्तरुणतरुभिः उपकांततरललतभिरतिशोभनेषुवनोपवनेषु तुषारकिरण रंजित

सेवन करे तौ अमृत के समान गुण करे ॥३॥

बिधिसेमद्यपीनेकाफल

बिधिनामात्रयाकाले हितैरन्नैर्यथाबलं। प्र
हृष्टोयः पिवेन्मद्यंतस्यस्यादमृतंयथा॥४
स्निग्धैःसदन्नैर्मांसैश्चभक्ष्यैश्चसहसेवितम्।
भवेदायुःप्रकर्षायबलायोपचयायच॥ ५ ॥

अर्थ- बिधि पूर्बक - प्रमाण के संग - योग्य काल में - चिकना आदि अच्छे अन्न के संग - बलाबल के अनुसार - अत्यंत हर्षके साथ- जो मद्य पान करे उसको अमृत के तुल्य गुण करे - इसके पीने की विधि मदात्यय के दूसरे श्लोक की टिप्पनी में लिख आये हैं - तथा और ग्रन्थान्तरों में बिधि- तथा - मात्रा - काल - का नियम - लिखा है- अर्थात् शुद्ध शरीर होकर प्रातः काल शोपदंश - (अर्थात् मद्यपान करने के बाद जो चटनी आदि पदार्थ खाये जांय हैं सो) इन करके सहित सो दो पल पीवै - मध्यान्ह को चार पल पीवै-तदनंतर चिकना पदार्थ भोजन करे- और सायं काल को आठ पल पीवै-इस जगह पलनाम जैपुरसाई १८कापैसे

प्रदोषेषु शृंगार समुचिता लंकृतकमनीयकामिनीसमर्पितंललितचलनोपनीयमानं सुरभिः रुचिर रूप रसोपदंशकं नामपरीमितपरार्द्धमधुपानं कंनसुखयति चरकेणतुविस्तरेणैनदुक्तंविधि॥१- शुद्धकायः पिवेत्प्रातः शोपदंशं पलद्वयंमध्यान्हेद्विगुणंतच्चस्निग्धाहारेण पाययेत् प्रदोषेष्टपलंतद्धन्मात्रामद्येरसायनम्।आरोग्यंधातुसात्म्यंच-कांतिपुष्टिवलप्रदं अनेनविधिनासेव्यंमद्यंनित्यमतंद्रितैः अन्यैस्तु आवश्योयावदुल्लसंतिनिरत्ययाः मंत्रियंविहितामद्यपानेरोगायचापरा कालइति तत्रकालोद्विविधः नित्यकः आवश्यकश्च-तत्रनित्यगः। ऋतुसंबंधिर्यथा-ग्रीष्मेशीत-मधुरं माध्विकादि- शीते- उष्णातीक्ष्णं-गौड़िक पिष्टकादि-तथा आवश्य के काले-वाते स्निग्धादि एवं वयस्युदाहार्यं

को कहते हैं ५ अथवा चिकने अन्न के साथ-मांस के साथ-अथवा और भक्ष्य है उनके साथ मद्य को सेवन करे-तो मनुष्य की आयुष्य वढ़े-बलबढ़े-तथा देह पुष्ट होय-इस श्लोक में (स्निग्धैः सदन्नैः) यहजो पदधरा सो स्निग्ध का एक उपलक्षण मात्र है-अर्थात् जो मद्य से विपरीत गुण रखते हैं-जैसेतीक्ष्णादि दश गुण हैं-उन्से बिपरीत होय उसके साथ मद्य पीना चाहिये सो तीक्ष्णादि दशगुणग्रन्थांतरों में लिखे हैं-और विशेषदेखना होय सो (भावप्रकाश) में देखलेवे-इसस्थलमें ग्रन्थ विस्तार भय से हमने त्याग दीने हैं ॥५॥

विधिसेमद्यपीनेकेदूसरेगुण

काम्यताम्मनसस्तुष्टिस्तेजोविक्रमएवच ॥ वि
धिवत्सेव्यमानेतुमद्येसंनिहिताःगुणाः ॥ ६ ॥

अर्थ- मद्य को बिधि पूर्बक पीनेसे-सुन्दर स्वरूप-मनको संतोष-उत्साह-दूसरे को जीतने की सामर्थ्य इत्यादि हितकारक गुण होय हैं-कहीभई बिधिसे बिरुद्ध मद्यपान करने से मदात्यय रोग होय है-सो मदात्यय तीन प्रकार का है-पूर्व मद-मध्यमद-और अन्त्यमद-॥६॥

पूर्वमदकेलक्षण

बुद्धिस्मृतिप्रीतिकरःसुखश्च पानान्ननि
द्रारतिबंधनश्च । संपाठगीतस्वरबर्द्धनश्च
प्रोक्तोऽतिरम्यःप्रथमोमदोहि

१ लघु तीक्ष्णोष्णसूक्ष्माम्लो व्यवाय्याशुगमेवच । रूक्षंविकाशिविशदं मद्येदशगुणाःस्मृताः॥ (तथाचसुश्रुते) मद्यंचाम्लंतथातीक्ष्णंसूक्ष्मंविशदमेवच। सूक्ष्ममाशुकरंचैव व्यवायेचविकाशिचेति- २ अत्र अम्लरसत्वंचास्योद्भूतरसत्वेनोक्तं यदुक्तमन्यत्र- सर्वेषामम्लजातीनांमद्यंमूर्द्धिव्यवस्थित मिति

अर्थ- बुद्धि-स्मरण-और प्रीति-इन्को करे-सुखकरे-पान (पीना) अन्न-निद्रा-और रति इन्को बढ़ावे-सुन्दर पाठ-और गीत गाने को बढावे-ऐसा प्रथम मद अति रमणीय कहाहै **+ शंका +** क्यौं जो मद तौ मनमें विकार उत्पन्नकरेहै-फिर आप इसको रमणीय कैसे कहते हो **+ उत्तर +** आपने कहा सो ठीक है-परंच दुखको दूरकरने से इसको रमणीयता है-इसी कारण-सुश्रुतने (हर्ष) को मनके विकारोंमेंकहा है-

द्वितीयमदकेलक्षण

अव्यक्तबुद्धिस्मृतिवाक्विचेष्टाः सोन्मत्त
लीलाकृतिरप्रशांतः । आलस्यनिद्राभिहतो
मुहुश्च मध्येनमत्तःपुरुषोमदेन ८

अर्थ- मध्यम मदसे मतवाला भया पुरुषकी-बुद्धि-स्मरण-और वाणी-यथार्थ नहीं होय-वो पुरुष विरुद्ध चेष्टा करे और बावलेकीसी चेष्टा करे-प्रचंड होजाय-और बारंबार-आलकस-निद्रा-सें पीड़ित होजाय ॥८॥

तृतीयमदकेलक्षण

गच्छेदगम्यांनगुरूंश्चपश्येत्खादेदभक्ष्याणि
चनष्टसंज्ञः । ब्रूयाच्चगुह्यानिहृदिस्थितानिम
देतृतीये पुरुषोऽस्वतन्त्रः॥९॥

अर्थ- तीसरे मदसे पुरुष मद के स्वाधीन होकर अगम्या । (गुरूकी स्त्री आदिसे) गमन करे-बड़ेन्को न माने-जो वस्तु खाने के योग्य नहीं हैं उस्को खाय-संज्ञा जाती रहै-और जो गुप्तबात हृदय में हैं उनको कहने लगे ॥९॥

चतुर्थमदकेलक्षण

चतुर्थेतुमदेमूढोभग्नदार्विवनिष्क्रियः ।

कार्याकार्यविभागाज्ञोमत्तादप्यपरोस्ततः १०
कोमदंतादृशंगच्छेदुन्मादमिवचापरम्। ब
हुदोषमिवारूढः कांतारंस्ववशःकृती ११

अर्थ- चतुर्थ मद से मनुष्य मूढ़ होकर टूटे वृक्ष के समान क्रिया रहित होय- कार्य (करनेयोग्य) अकार्य (नहींकरनयोग्य-) इन को न समझे वो पुरुष- मरे सेभी अधिक मराभयाहै- कौन ऐसा स्ववश अथवा सुकृती पुरुष ऐसे निंद्य मद (अमल) का सहन शील होय है- अर्थात् कोई नहीं होय- कैसे कि जैसे सिंह व्याघ्रादि हिंसक पशू जिस बन में बहुत हैं- ऐसे निर्जर वनमें मार्ग में कौन चतुर मनुष्य जायगा- ÷ **शंका** ÷ चरक- बिदेह- बाग्भट आदि- आचार्यों ने तौ चतुर्थ मद कहाही नहीं है- और सुश्रुत ने कहा है- इन में बिरोध क्यौं है- ÷ **उत्तर** ÷ चरक में जो दूसरे और तीसरे में अन्तर कहा है सोई सुश्रुत ने तृतिय मद को मानकर उसके लक्षण कहे हैं और जो चरक में तृतिय मद के लक्षण कहे हैं- सो सुश्रुत ने चतुर्थ मद के लक्षण कहे हैं- ऐसें बिरोध नहीं हैं वास्तव में तीन ही मद हैं ÷ **शंका-** ÷ क्यौंजी एक मद्य से ३ प्रकार के मद होंय हैं इसैं क्या कारण है ÷ **उत्तर** ÷ मद्य यह अग्नि के समान है जैसे अग्नि में सुवर्ण (सोना) तपाने से- उत्तम- मध्यम- अधम- की परीक्षा होय है- ऐसे ही मद्य भी- सतोगुण- रजोगुण- तमोगुण- वाले पुरुषों की प्रकृति सूचक है अर्थात् सतोगुण वाले पुरुष को प्रथम मद- रजोगुण वाले पुरुष को दूसरा मद- तमोगुण वाले पुरुष को तीसरा मद प्राप्त होय है- सो (चरक) में लिखा है १

१ प्रधानावरमध्यानांरुक्माणांव्यक्तिदर्शकः। यथाग्निरेवंसत्वानांमद्यं प्रकृतिदर्शकम्॥

बिधिहीनमद्यसेवनसेऔर बिकारहोतेहैंउन्कोकहतेहैं

निर्भक्तमेकान्ततएवमद्यं निषेव्यमाणंमनुजे ननित्यम् । आपादयेत्कष्टतमान्विकारानापा दयेच्चापिशरीरभेदं १२

अर्थ- जिस पुरुष ने अन्न रहित निरन्तर मद्य पान नित्य करा होय वो अत्यन्त दुःख दायक बिकार (पानात्ययादिक) उत्प न्न करे है- और शरीर का बिनाश करे है ॥ १२ ॥

अन्नकेसाथमद्यसेवनकरभयाभीक्रुद्धत्वा दिकारणसे बिकारकर्त्ताहोयहै सोक हतेहैं॥

क्रुद्धेनभीतेनपिपासितेन शोकाभितप्तेनबुभु क्षितेन । व्यायामभाराध्वपरिक्षतेनवेगावरो धाभिहतेनचापि ॥ १३ ॥ अत्यम्लभक्ष्यावत्त तोदरेण साजीर्णभुक्तेनतथाऽबलेन । उष्णा भितप्तेनचसेव्यमानं । करोतिमद्यंबिबिधा नविकारान् १४ ॥

अर्थ- क्रोधयुक्त- भय से पीड़ित- प्यासा- शोकवान्- क्षुधायु क्त- दंड कसरत- और भार से जो क्षीण होगया होय- मल- मूत्र- आदि वेग से पीड़ित हो- अत्यंत अम्लरस भक्षखाने से जिसका पेट भर रहा होय- अजीर्ण में भोजन करने वाले पुरुष के- निब ल पुरुष के- गरमी से तपायमान- ऐसे मनुष्य के मद्य सेवन क रने से- अनेक बिकार उत्पन्न होते हैं ॥ १४॥

उनबिकारोंकोकहतेहैं

पानात्ययंपरमदंपानाजीर्णमथापिवा। पान
विभ्रममुग्रंचतेषांवक्ष्यामिलक्षणम्

अर्थ- पानात्यय - परमद- पानाजीर्ण- और पानविभ्रम-इत्या
दिक भयंकर बिकार होतेहैं २५॥

उनकेलक्षण कहताहूं

बातमदात्ययकेलक्ष.

हिक्काश्वासशिरःकंपःपार्श्वशूलप्रजागरैः।
बिद्याद्बहुप्रलापस्यबातप्रायंमदात्ययम् २६।

अर्थ-हिचकी-श्वास-मस्तकका कंपहोना- पसवाड़ों में पीड़ा-
निद्रा का नाश- और अत्यन्त बकबाद-ये लक्षण जिसमें होंय उस
कोबातप्रधानमदात्ययजानना

पित्तमदात्ययकेलक्षण

तृष्णादाहज्वरस्वेदमोहातीसारविभ्रमैः।
बिद्याद्धरितवर्णस्यपित्तप्रायंमदात्ययम् २७

अर्थ- प्यास- दाह- ज्वर-पसीना- मोह- अतिसार- विभ्रम (कु
छ कुछ ज्ञान होय) देह का वर्ण हरा होय- इन लक्षणों से पि
त्त प्रधान मदात्यय जानना ॥२७॥

कफमदात्ययकेलक्षण

छर्द्यरोचकहृल्लासतन्द्रास्तैमित्यगौरवैः॥
बिद्याच्छीतपरीतस्यकफप्रायंमदात्ययम्॥

अर्थ-बमन- (रद्द) अन्न में अरुचि-खालीरद्द (ओकारी)
तन्द्रा-देह- गीली- औरभारी- और शीत लगे- इन लक्षणों सेकफ
प्रधान मदात्यय जानना ॥२८॥

सन्निपातमदात्ययकेल.

ज्ञेयस्त्रिदोषजश्चापिसर्वलिंगैर्मदात्ययः॥

अर्थ-जिस में तीनों दोषों के लक्षण मिलते हों उसको सन्निपात प्रधान मदात्यय जानना ॥

परमदकेलक्षण

श्लेष्मोच्छ्रयोऽङ्गगुरुतामधुरास्यताच। विण्मूत्रसक्तिरथतंद्रिररोचकश्च लिंगं परस्यतुमदस्यबदंतितज्ज्ञास्तृष्णारुजाशिरसिसंधिषुचातिभेदः १९

अर्थ-कफ का कोप (यह नासास्त्रावादिक जानना) देह का जड़ होना- मुख में मिठास- मल- मूत्र का अवरोध- तन्द्रा- अरुचि- प्यास- मस्तक- में पीड़ा- और संधिन्में कुहारी से तोड़ने सरीखी पीड़ा होय- ये परम मद के लक्षण जानने ॥ १९ ॥

पानाजीर्णकेलक्ष०

आध्मानमुग्रमथवोद्गिरणंविदाहः। पानेत्वजीर्णमुपगच्छतिलक्षणानि ॥२०॥

अर्थ-अत्यन्त पेटका फूलना- वमन- अथवा डकार का आना - जलन होना- ये लक्षण जब मद्यजीर्ण होय है तब होते हैं- ॥

पानविभ्रमकेलक्षण

हृद्गात्रतोदकफसंस्रवकंठधूममूर्च्छावमिज्वरशिरोरुजनप्रदेहाः। द्वेषःसुरान्नविकृतेष्वपितेषुतेषु। तंपानविभ्रममुशंत्यखिलेनधीराः॥२१॥

अर्थ- हृदय- और गात्र इनमें सुई चुभाने कीसी पीड़ा होय- कफ का स्त्राव होय- कंठ से धूआँ सा निकले कीसी पीड़ा- मूर्च्छा-वमन- ज्वर- सिरमें पीड़ा- मुख कफ से लिहसा सा होय- अनेक प्रकारको- मैरेय- पैष्टिक इत्यादिक- सुराविकृति- औरलड्डु

-पेड़ा- आदि अन्न बिकृति इनमें द्वेष होय- ये सर्व लक्षण से इस रोग को (पानबिभ्रम) ऐसे कहते हैं ये परमदादिक तीनों चरकने नहिं कहे क्यौं कि सन्निपात के अन्तर्गत होने से और सुश्रुत उक्त त्रिदोषज मदात्यय को पृथक् कहा है क्यौं कि पूर्वोक्त मदात्यय के लक्षणों से बिलक्षण होनेसे ॥२१॥

असाध्यलक्षण

हीनोत्तरौष्ठमति शीतममन्ददाहं। तैलप्र
भास्यमतिपानहतंत्यजेत्तु। जिह्वौष्ठदन्त
मसितंत्वथवापि नीलं। पीतेचयस्यनयने
रुधिरप्रभेवा २२॥

अर्थ- ऊपर के होठ से नीचे का होठ कुछ लम्बा होय- देह के बाहर अति शीत लगे- और भीतर अत्यन्त दाह होय-तेल से लिप्त सदृश मुख हो- जीभ-होठ-दांत- ये काले-अथवा नीले होय जांय- नेत्रपीले- अथवा रुधिर के समान लालहोय ऐसा अति पान से अर्थात् अति मद्य पीने से नष्ट मनुष्य को बैद्य त्याग देय-॥२२॥* (चरकेमें) ध्वंसक-बिक्षेपक-दो मद्य बिकार और कहे हैं॥

उपद्रव कहतेहैं

हिक्काज्वरौवमथुवेपथुपार्श्वशूलाः। कासभ्र
मावपिचपानहतंत्यजेत्तम्॥२३॥

अर्थ- हिचकी- ज्वर- वमन- कम्प- पसबाड़ों में पीड़ा होय-

२ विच्छिन्नमद्यःसहसायोतिमद्यंनिषेवते। ध्वंसो विक्षेपकश्चैवरोगस्तस्योपजायते + श्लेष्माप्रसेकःकंठास्य शोषसर्वासहिष्णुता निद्रानन्द्रातियोगश्चज्ञेयंध्वंसकलक्षणम्॥१॥ हृत्कण्ठरोगसंमोहः छर्दिरंगरुजाज्वरः। तृष्णा कास शिरःशूलमेतद्विक्षेपलक्षणम्॥२॥

खांसी - भ्रम- ये उपद्रव जिस्के होंय उस को बैद्य त्यागदे-परन्तु जैज्जट आचारी कहते हैं- यह लक्षण होने से रोगी कृच्छ्रसाध्य जानना असाध्य न जानना क्यों कि असाध्य लक्षण से पृथक् पाठ होनेसे

इतिश्रीपण्डितदत्तराममाथुररचितभावार्थबोधनीमाथुरीभाषाटीकायांमदात्ययरोगनिदानसमाप्तम्

अथदाहनिदानम्

त्वचंप्राप्तः समानोष्मापित्तरक्ताभिमूर्च्छितः।
दाहंप्रकुरुतेघोरंपित्तवत्तत्रभेषजम्॥१॥

अर्थ- दाह रोग सात प्रकार का है तिसमें प्रथम मद्य जन्य दाह के लक्षण कहते हैं- मद्य पान करने से कुपित भया जो पित्त उस पित्त की उष्णता पित्त रक्त को बढ़ाय कर भयंकर दाह रोग उत्पन्नहोय इसमें पित्तके समान औषधकरे १

रक्तज औरपित्तजदाहकेलक्ष०

कृत्स्नदेहानुगंरक्तमुद्रिक्तंदहतिध्रुवम्।
समुष्यतेतृष्यतेचताम्राभस्ताम्रलोचनः २
लोहगंधांगबदनोबन्हिनेवावकीर्यते।पित्तज्वरसमः पित्तात्साचाप्यस्य बिधिः स्मृतः॥३॥

अर्थ- सर्व देह का रुधिर कुपित होकर अत्यन्त दाह करे-और वह रोगी अग्नि के समीप रहने से जैसा तपे है-ऐसा तपे-प्यास युक्त ताम्र के रंग सदृश देह का रंग होय - और नेत्र भी लाल होय

तथा मुख से और देह से तप्त लोहे पर जल डालने कीसी गंध आ वे और अंगों में मानों किसीने अग्नि लगाय दीनी जैसी बेदना होय पित्त से जो दाह होय उसमें पित्तज्वर केसे लक्षण होते हैं - उसमें पित्त ज्वर की चिकित्सा करनी चाहिये - पित्त ज्वर में और पित्त के दाह में इतना अन्तर है कि पित्त ज्वर में - अग्नि और आम शय का दुष्ट होना होय है - और पित्त के दाह में नहिं होय - और सब लक्षण होते हैं ॥ ३॥

प्यासरोकनेकेदाहकेल०

तृष्णानिरोधादप्धातौक्षीणेतेजःसमुद्धत-
म्। सवाह्याभ्यंतरंदेहंप्रदहेन्मंदचेतसः। सं
शुष्कगलताल्वोष्ठोजिव्हानिष्कृष्यवेपते ॥ ४॥

अर्थ- प्यास के रोकने से जलरूप धातु क्षीण होकर तेजकहिये पित्त की गरमी को बढ़ावे तब वुह गरमी देहके बाहर और भीतर दाह करे - इस दाह से रोगी बेसुध होय - और गला - तालू - होठ - यह अत्यंत सूखें - और जीभ को बाहर काढ़दे - कांपे ॥

शस्त्रघातजदाहकेल०

अस्रजः पूर्णकोष्ठस्य दाहो ऽन्यः स्यात्तु
दुःसहः ॥ ५॥

अर्थ- शस्त्र कहिये तलवार आदि के लगने से प्राप्त रुधिर उस रुधिर से कोष्ट कहिये हृदय भरजाय तब दाह अत्यन्त दुःसह प्रगट होय ॥ ५॥

धातुक्षयजन्यदाहकेलक्ष०

धातुक्षयोत्थोयोदाहस्तेनमूर्च्छातृषान्वितः।
क्षामस्वरःक्रियाहीनःसीदेद्भृशपीडितः ६ ॥

अर्थ- धातु के क्षय होने से जो दाह होय - उसमें रोगी को मूर्च्छा

प्यास- इन से युक्त होय - स्वर भंग- औरचेष्टा हीन होय- औरइस दाह से पीड़ित होकर यदि चिकित्सा न करावे तौ वो रोगी मरण को प्राप्त होय ॥

क्षतजदाहकेलक्षण

क्षतजो ऽस्नतश्चान्यः शोचतो वाप्यनेकधा
तेनांतर्दह्यते ऽत्यर्थं तृष्णामूर्च्छाप्रलापवान् ७

अर्थ- क्षत (घाव) के होने से जो दाह होय- उस्से आहार थोड़ा रहिजावे- और अनेक प्रकार के शोककर दाह होय- और इस दाह करके अभ्यन्तर दाह होय- तथा प्यास- मूर्च्छा- और प्रलाप (बकबाद) ये लक्षण होंय ॥ ७ ॥

मर्माभिघातजदाहकेल.

मर्माभिघातजोप्यस्तिसो ऽसाध्यःसप्तमोमतः
मर्मस्थान (हृदय- शिर- वस्ति-) में जो चोट लगानेसेजो दाह होय सो सातमा असाध्य है- अर्थात् और जो छः दाहहैं सोसाध्यहैं ॥

सर्व एवच वर्ज्याः स्युः शीतगात्रस्यदेहिनः
अर्थ- सब दाहों में शीतल देह वाला रोगी त्याज्य है ॥ ८ ॥

इतिदाहनिदानम्

अथउन्मादनिदानम्।

मदयंत्युद्गतादोषायस्मादुन्मार्गमाश्रिताः।
मानसोऽयमतोव्याधिरुन्मादइतिकीर्त्यते १

अर्थ- दोष कहिये (वात- पित्त- कफ) बढ़कर अपने २ मार्ग को छोड़ अन्य मार्ग अर्थात् मनोवह धमनी में प्राप्त होकर मन को भ्रम करे यह व्याधि मानस है इस्को (उन्माद) ऐसेक

हैहैं ॥ एकैकशः सर्वशश्च दोषैरत्यर्थमूर्च्छितैः । मानसेनचदुःखेनसपंचविधउच्यते २ विषा द्भवतिषष्ठश्चयथास्वंतत्रभेषजं । सचाप्रवृ द्धस्तरुणोमदसंज्ञांविभर्तिच ॥३॥

अर्थ- अत्यन्त कुपित भये पृथक् २ दोषों से ३ सन्निपात और मानसिक दुःख से यह रोग पांच प्रकार का और बिष खाने से ६ छटा इन्में यथा दोषानुसार औषध देनी चाहिये जब तक यह रोग बढे नहीं- और जब तक तरुण रहै-तब तक इस रोग को मद ऐसे कहते हैं

उन्मादकेसामान्यकारण और सम्प्राप्ति

बिरुद्ध दुष्टाऽशुचिभोजनानि । प्रधर्षणं देवगुरुद्विजानाम । उन्मादहेतुर्भयहर्षपू र्वौ मनोभिघातो विषमाश्चचेष्टाः ॥ ४ ॥ तैर ल्पसत्वस्यमलाः प्रदुष्टा बुद्धेर्निवासंहृदयं प्रदूष्य । स्रोतांस्यधिष्ठायमनोवहानि । प्र मोहयंत्याशुनरस्यचेतः ५

अर्थ- बिरुद्ध दुष्ट कहिये ज़हर मिला अन्न आदि अशु चि चांडोला दिसैस्पर्श तथा) ऐसा भोजन-देवता-गुरु-ब्राह्म ण इन्का तिरस्कार करने से भय और हर्ष के होने से मन बिगड़ा और सब चेष्टा बिपरीत करे (अर्थात् टेढ़ा तिरछा चलै चलवा न से बैर करै-बकने लगे-) इस श्लोक में पूर्व शब्द करण का है- और चकार से काम क्रोध लोभादिक भी उन्माद रोग के कारण-यह जैज्जट का मत है ॥४॥

इन में कहे जो कारणों से अल्प (थोड़ा) मल गुण पुरुष के

बातादिक दोष कुपित होकर बुद्धि का निवास स्थान (रह नेकाठिकाना) कोनहृदय कहिये-मन-उसको बिगाड़मनके बहने बाली नसों में प्राप्त हो मनुष्य के अंतःकरणको मोहितकरे

उन्मादकास्वरूप

धीविभ्रमः सत्वपरिप्लवश्च पर्याकुलादृष्टि रधीरताच ॥ अबद्धवाक्त्वंहृदयंचशून्यं-सामान्यमुन्मादगदस्यचिन्हम् ६

अर्थ- बुद्धी में भ्रम-मन का चञ्चल होना-दृष्टिका सर्वत्र चलना- अधीरजपना-(डरपना) कुछकाकुछ बोलना-हृदय शून्य होजाय- (अर्थात् बिचार शक्ति का नाश होना-) येउ न्माद रोगके सामान्य लक्षण हैं ६॥

विशेषलक्षण

रूक्षाल्पशीतान्नबिरेकधातु क्षयोपवासै रनिलोतिबृद्धः॥ चिन्तादिदुष्टंहृदयंप्रदू-ष्य बुद्धिंस्मृतिंचापिनिहंतिशीघ्रं॥७॥अस्था नहासस्मितनृत्यगीत वागंगविक्षेपणरोद-नानि। पारुष्यकार्श्यारुणवर्णताच जीर्णेब लंचानिलजस्वरूपम्॥८॥

अर्थ- रूखा- थोड़ा- और- शीतल- ऐसा अन्न- बिरेक-इ स शब्द से-इस जगह दस्त-औरबमन जानना-धातुक्षय- और उपबास-इन कारणों से अत्यन्त बढ़ी जो बायु- चिन्ता- शोकादि करके- युक्त हो कर हृदय (मनको) अत्यंत दुष्ट कर बुद्धि-और स्मरण- इनका शीघ्र नाश करै- और हंसने के कारण वि ना हंसे- मंद मुसकानकरे- नाचे- गीत और बोलना बिना प्रसंग के करे- हाथों को सर्वत्र चलावै- रोवै- और शरीर रूखातथा

कृश- और लाल होजाय- और आहार का परिपाक भये पर ज्यादा ज़ोर होय- यह वातज उन्माद के लक्षण हैं ॥ ८॥

पित्तजउन्माद के कारण और लक्षण

अजीर्णकट्वम्लविदाह्यशीतै र्भोज्यैश्चितंपित्तमुदीर्णवेगम् ॥ उन्मादमत्युग्रमनात्मकस्य हृदिस्थितंपूर्ववदाशुकुर्यात् ॥ ९ ॥ अमर्षसंरंभविनग्नभावाः संतर्जनाभिद्रवणौष्ण्यरोषाः प्रच्छायशीतान्नजलाभिलाषाः पीतास्यतापित्तकृतस्यलिंगम् ॥ १० ॥

अर्थ- अधकच्ची- कड़वी- खट्टी - दाह करनेवाली- और गरम - ऐसा भोजन करने से- संचित भया जो पित्त सो तीव्रवेग होकर अजितेंद्री पुरुष के हृदय में प्रवेश कर पूर्ववत् अतिउग्र उन्माद तत्काल उत्पन्न करे- इस उन्माद से- असहन शील- हाथ-पैरों में पटकना - नग्न होजाय - डरपे - भाजने लगे - देहगरम होजाय- क्रोधकरे - छाया में रहै- शीतल अन्न और शीतल जल इनकी इच्छा - पीला मुख होजाय- यह लक्षण पित्तजउन्माद के हैं ॥ १० ॥

कफजउन्माद के कारण और लक्षण

सम्पूरणैर्मन्दविचेष्टितस्यसोष्माकफोमर्मणिसंप्रवृद्धः । बुद्धिंस्मृतिंचाप्युपहन्तिचित्तं । प्रमोहयन्संजनयेद्विकारम् ॥ ११ ॥ वाक्चेष्टितंमन्दमरोचकश्च नारीविविक्तप्रियताऽतिनिद्रा । छर्दिश्चलालाचबलंचभुक्तेनखा

दिग्धौ ब्रुय चकफाधिकेस्यात्

अर्थ- मेद- भूख में भर पेट भोजन कर कुछ परिश्रम न करे ऐसे पुरुष के पित्त युक्त कफ - हृदय में अत्यन्त बढ़कर बुद्धि स्मरण और चित्त इन की शक्ति का नाश करे और मोहित कर उन्माद रूप बिकार को उत्पन्न करे - उस बिकार से बाणी का व्यापार कहिये बोलना इत्यादि - मन्द होय - अरुचि होय - स्त्री प्यारी लगे - एकान्त बास करे - निद्रा अत्यन्त आवे - वमन होय - मुख से लार बहे - भोजन करे पिछाड़ी - इस रोग का जोर हो - नख - आदि शब्द से त्वचा - मूत्र - नेत्रादिक यह सफ़ेद होंय - यह लक्षण कफ के उन्माद के हैं ॥१२॥

सन्निपातके उन्मादके लक्ष॰

यःसन्निपातप्रभवोऽतिघोरः सर्वैः समस्तै रपिहेतुभिः स्यात् । सर्वाणिरूपाणिविभर्ति ताहक् बिरुद्धभेषज्यविधिर्विवर्ज्य १३

अर्थ- जो उन्माद बातादिक दोष करके अथवा तीनों दोषों के कारण करके होय - वह सन्निपात जन्य उन्माद बहुत भयंकर होय - उस में सब दोषों के लक्षण होते हैं - इस में विरुद्ध औषध की बिधि बर्जित है - यह उन्माद बैद्यों करके त्याज्य है कारण यह असाध्य है १३

शोकज उन्माद के लक्षण

चौरैर्नरेन्द्र पुरुषैररिभिस्तथान्यै वित्रासित स्यधनबांधबसंक्षयाद्वा ॥ गाढंक्षते मनसिचप्रिययारिरंसो र्जायेतचोत्कटतरोमनसो विकारः ॥१४॥ चित्रंब्रवीतिचमनोनुगतं विसंज्ञो गायत्यथोहसतिरोदितिचातिमू-

ढः॥ २५॥

अर्थ- चोरी ने- राज के मनुष्यों ने- अथवा शत्रुओं ने- तैसे और सिंह-व्याघ्र- हाथी आदि किसी ने त्रास दिया होय- अथवा धन- बंधू- के नाश होने से- ऐसे पुरुष का अन्तःकरण अत्यन्त दुखे- अथवा प्यारी स्त्री से संभोग करने की इच्छा वाले पुरुष के मन में भयंकर बिकार उत्पन्न होय- वो पुरुष गुप्तवात को भी कहने लगे- और अनेक प्रकार का बोले- बिपरीत ज्ञान होय- वो गावे- हंसे- और रोवे- तथा मूर्ख होजाय ॥२५॥

विषजन्यउन्मादकेलक्ष.

रक्तेक्षणोहत्तबलेन्द्रियभाःसुदीनः। श्यावाननोविषकृतेनभवेद्विसंज्ञः २५

अर्थ-विषसे प्रगट उन्माद में नेत्र लाल होंय- बल- इन्द्री- और शरीर की कान्ति नष्ट हो जाय- अति दीन होजाय- उस्के मुख पर कालोंच आयजाय- और संज्ञा जाती रहै ॥२५॥

असाध्यलक्षण

अवाङ्मुखस्तून्मुखोवाक्षीणमांसवलोनरः।
जागरूकोह्यसन्देहमुन्मादेनविनश्यति। २६।

अर्थ - जिस्का मुख नीचे को होय- अथवा ऊपर को होय- और जिसका मांस और बल क्षीण हो गया होय- तथा जिस्की निद्रा जाती रही हो- ऐसा मनुष्य निश्चय इस उन्माद करके नाश को प्राप्त हो २६

भूतजउन्मादकेलक्षण

अमर्त्यवाग्विक्रमवीर्यचेष्टा ज्ञानादिविज्ञान बलादिभिर्यः। उन्मादकालोनियतश्चयस्य भूतोत्थमुन्मादमुदाहरेत्तम् २७

अर्थ- वाणी - पराक्रम- शक्ति-देह का व्यापार- तत्वज्ञान- शिल्पादि ज्ञान - अथवा ज्ञान कहिये शास्त्रज्ञान- और विज्ञान नाम तदर्थ निक्षेप आदि शब्द से स्मृत्यादिक ए जिस्की मनुष्य कोसी न होंय - और जिस्का उन्मत्त होने का काल निश्चय होय- ऐसे उन्माद को भूतोन्माद कहते हैं - भूत शब्द से यहां आगे कहेंगे सो सब देवता जानने ॥२७॥

देवग्रहकेलक्षण

सन्तुष्टःशुचिरतिदिव्यमाल्यगंधोनिस्तंद्रि
स्त्ववितथसंस्कृतप्रभाषी ॥ तेजस्वीस्थिरन-
यनोवरप्रदाता ब्रह्मण्योभवतिनरःसदेव
जुष्टः २८॥

अर्थ- सदा संतोष युक्त रहै- पवित्र रहै- देह में दिव्य पुष्पके समान सुगंध- नेत्रों के पलक लगे नहीं - सत्य और संस्कृत का बोलने वाला हो - तेजस्वी- स्थिर दृष्टी- वर का देने वाला - (तेरा कल्याण हो ऐसा वर देय) ब्राह्मण से प्रीति राखे - ऐसा जो मनुष्य होय वह (देवग्रह) पीड़ित जानना - देव शब्द से गण मात्रिकादि ग्राह्य है - सो (विदेह) ने कहा बी है ॥ २८॥

असुर पीड़ितकेलक्षण

संस्वेदी द्विजगुरुदेवदोषवक्ताजिह्माक्षोवि
गतभयोविमार्गदृष्टिः संतुष्टोनभवतिचान्नपा
नजातैर्दुष्टात्माभवतिसदेव शत्रुजुष्टः॥ २९॥

---

१ क्रोधनस्तब्ध सर्वांगो लाला फेना विलानन:
निद्रालु: कंपता मूको गण मात्रभिर्दित: १

अर्थ- पसीना युक्त देह- ब्राह्मण- गुरू- और देव-इन्में दोषारोपण करने वाला- टेढ़ी दृष्टि से देखने वाला-निर्भय-वेदबिरुद्ध मार्ग का चलने वाला- और बहुत अन्न जल से भी जिस्को संतोष न होय- और दुष्ट बुद्धि ऐसा जो मनुष्य है उस्को (दैत्यग्रह) पीड़ित जानना- ॥२६॥

गंधर्वग्रहकेलक्षण

हृष्टात्मापुलिनवनांतरोपसेवीस्वाचारः प्रियपरिगीतगंधमाल्यः। नृत्यन्वैप्रहसतिचारुचाल्पशब्दंगंधर्वग्रहपरिपीड़ितोमनुष्यः २०

अर्थ- गंधर्व ग्रह से पीड़ित मनुष्य- प्रसन्नचित्त-पुलिन- और बाग़ बग़ीचा में रहने वाला- अनिंदित-आचार का करनेवाला- गान- सुगंध- और पुष्प ये जिस्को प्यारे लगें- वह्न पुरुष नाचे- हंसे- सुन्दर बोले थोड़ा बोले- ॥२०॥

यक्षग्रहकेलक्षण

ताम्राक्षःप्रियतनुरक्तवस्त्रधारीगम्भीरोद्रुतगतिरल्पवाक्सहिष्णुः ॥ तेजस्वीबदतिचकिंददामिकस्मैयोयक्षग्रहपरिपीड़ितोमनुष्यः॥२१॥

अर्थ- यक्ष ग्रह से पीड़ित मनुष्य के नेत्र लाल हों- सुंदर बारीक ऐसे रक्त वस्त्र का धारण करने वाला- गंभीर- बुद्धिवान्- जल्दी चलने वाला- प्रमाण का बोलने वाला- सहनशील- तेजस्वी- किसको क्या देऊं ऐसें बोलने वाला ऐसा होय ॥२१॥

पितृग्रहकेलक्षण

प्रेतानांसदिशतिसंस्तरेषुपिंडान् शान्तात्माजलमपिचापसव्यहस्तः। मांसेप्सुस्तिल-

गुडपायसाभिकामस्तद्भक्तोभव तिपित्तग्र
हाभिजुष्टः॥२२॥

अर्थ- कुशा के ऊपर प्रेतों को (पितरोंको) पिंडबनायक
र देय - चित्त में भ्रांति रहै - और उत्तरीय वस्त्र अपसव्य करके
तर्पण भी करे उस पुरुष को मांस खाने की इच्छा होय - तथाति
ल-गुड़- खीर- इन पर मन चले (इस कहने का प्रयोजन यह
है कि जिसकी जिस पदार्थ पर इच्छा होय उसको उसी पदार्थ
की बली देने से उस ग्रह की शांति होती है- ऐसे ही सर्वत्र जान
ना) ये डल्हन का मत है- और वह मनुष्य पितरों की भक्ति क
रे ये लक्षण पित्त ग्रह पीड़ित मनुष्य के हैं -

सर्पग्रहयुक्तकेलक्ष॰

यस्तूर्व्यांप्रसरतिसर्पवत्कदाचित्सृक्किण्यौ
विलिहतिजिह्वयात्तथैव क्रोधालुर्मधुगु
डदुग्धपायसेप्सुर्विज्ञेयोभवतिभुजंगमेनजु
ष्टः॥२३॥

अर्थ- जो मनुष्य सर्प के समान पृथ्वी में लोटा करे अर्थात्
छाती के बल चले - तथा सर्प के समान अपने ओष्ठ प्रांत (हो
ठोंको) चाटा करे- सदा क्रोधी रहै- सहत- गुड़- दूध- और
खीर इच्छा रहै- वो सर्प ग्रह ग्रस्त जानना ॥२३॥

राक्षसग्रहपीड़ितकेलक्षण

मांसासृग्विविधसुराविकारलिप्सुर्निर्लज्जोभृ
शमतिनिष्ठुरोऽतिशूरः। क्रोधालुर्विपुलबलोनिशा
विहारीशौचद्विट्भवतिराक्षसैर्गृहीतः॥ २४॥

अर्थ -जो मनुष्य- मांस-रुधिर-नाना प्रकार के मद्य पीनेकी इच्छा करे और निर्लज्ज- अति निष्ठुर- अत्यन्त शूर-क्रोधी-बड़ा बली- रात्रि में डोलने वाला - अपवित्र- ऐसा होय वह (राक्षस करके ग्रस्त जानना ॥

पिशाचजुष्टकेलक्षण

उद्धस्तःकृशपरुषश्चिरप्रलापीदुर्गंधोभृश मशुचिस्तथाऽतिलोलः बह्वाशीविजनव नांतरोपसेवीव्याचेष्टन्भ्रमतिरुदन्पिशा चजुष्टः २५॥

अर्थ- जो अपने हाथ ऊपर को करे (उद्धस्त्र- ऐसा भी पाठ है) उस जगह उद्धस्त्र नाम नंगा हो जाय- तेज रहित- बहुत देर पर्यंत बकने वाला- जिस्के देह में दुर्गंध आवै- अपवित्र तथा अति चंचल कहिये सब अन्न पान में इच्छा करने वाला- खाने को मिलै तो बहुत भोजन करे- एकांत बनांतरों में रहने वाला- बिरुद्ध चेष्टा करने वाला- रुदन करता डोलने वाला- ऐसा मनुष्य पिशाच ग्रस्त जानना- प्रसंग बस से ब्रह्मराक्षस और भूतोन्माद के लक्षण ग्रंथान्तरों से लिखते हैं ॥

देवविप्रगुरुद्वेषीवेदवेदांगविच्छविः । आ शुपीडाकरोऽहिंस्रोब्रह्मराक्षससेवितः

अर्थ-देव- ब्राह्मण- गुरू- से द्वेष कर्त्ता- वेद और बेदके अंग (सिक्षा-) कल्प व्याकरणादि) का पढ़ा भया- शीघ्र पीडा का कर्त्ता- हिंसा करे नहीं- येलक्षण ब्रह्म राक्षससेवि मनुष्य के हैं॥

भूतोन्मादकेलक्षण

महापराक्रमोयस्यदिव्यंज्ञानंचभाषते । उ न्मादकालेनैश्चित्योभूतोन्मादीसउच्यते

अर्थ- महापराक्रमी- और जो श्रेष्ट ज्ञानको कहै- और जो उन्माद कालका निश्चै न होय- उस्को भूतोन्मादी कहते हैं- अब कहते हैं कि देवादिक ग्रह इस मनुष्य को तीन कार्य के वास्ते ग्रहण करते हैं- हिंसा अर्थात् मारनेके निमित्त- और पूजा केनिमित्त-तथा विहारकेनिमित्त-इसमें हिंसाकेनिमित्तग्रस्तभयाम नुष्यसाध्य (अच्छा) नहीं होय-उस्के लक्षण आगे कहते हैं ॥

स्थूलाक्षोद्रुतमटनःसफेनलेहीनिद्रालुः
पततिचकंपतेचयोऽति यश्चाद्रिद्विरदन
गादिविच्युतःस्यात्सोऽसाध्योभवतितथात्र
योदशेऽब्दे २६

अर्थ- नेत्र भयानक होजांय- शीघ्रचले- मुखमेंजोझागहैं उन्को चाटनेवाला- और जिस्को निद्रा बहुत आवै- तथा गिरप ड़ै- कांपे- और जो पर्वत- हाथी- अथवानगनाम वृक्ष- आदि शब्द से- भीति- मन्दिर आदि जानने- इन्से गिरकर ग्रहग्रस्त हो य वो असाध्य है- तैसे ही तेरवें वर्ष में सर्व देवादि उन्मादी अ साध्य जानने- (विदेह) ने विशेष लक्षण कहे हैं- सोग्रन्था न्तरों से जानलेने २६

देवादीनामावेशसमयः

देवग्रहाः पौर्णमास्यामसुराःसंध्ययोरपि
गन्धर्वाःप्रायशोऽष्टम्यांयक्षाश्चप्रतिपद्यथ २७
पितृग्रहास्तथादर्शेपंचम्यामपिचोरगाः। र
क्षांसिरात्रौपैशाचाश्चतुर्दश्यांविशंतिहि २८

अर्थ- देवग्रह पूर्णमासी को प्रवेश करते हैं- असुरग्रह-सा यंकाल में- अपि शब्द से पूर्णमासी को भी प्रवे श करते हैं- गंध

१ संध्यात्रिनाड़ीप्रमिताऽर्कविंबादर्द्धोदितास्तादधऊर्द्धमत्र इति

वग्रह- बहुधा अष्टमी को प्राय शब्दसें संध्या को भी गंधर्वग्रह प्रवेश करते हैं-यक्षग्रह पड़वाको पितृग्रह अमावास्या को-सर्प ग्रह पंचमी को अपिशब्द सें अमावास्या को वी प्रवेश करते हैं-राक्षस रात्रि में - और पिशाच चतुर्दशीको मनुष्य के देहमें प्रवेश करते हैं- तिथिकहनेका यह प्रयोजन है कि जिस जिस तिथी को जोजो यह मनुष्य को ग्रस्त करे उस्को उसी उसी तिथि में शांति के निमित्त बलि दानादिक कराने चाहियें। २८। ✢ शंका ✢ क्योंजी जब ग्रह ग्रस्त मनुष्यों को उन्माद होता है तौ वोग्रहमनुष्य की देह में प्रवेश करते क्यों नहीं दीखते हैं इस वास्ते कहते हैं-

दर्पणादीन्यथाछायाशीतोष्णंप्राणिनोयथा
स्वमणींभास्करांशुश्चयथादेहंचदेहधृक् ॥
विशंतिनचदृश्यंतेग्रहास्तद्वच्छरीरिणाम् २९

अर्थ- जैसे दर्पण में मनुष्यका प्रतिबिंब पड़े है- आदिशब्द इस जगाह प्रकार बाची है- अर्थात् जल- तैल- आदि जैसे छाया पड़ती है और- सरदी- गरमी- जैसे मनुष्यों को लगती है- अथवा जैसे सूर्य किरण- सूर्यकान्त मणि (आतसीकाच) में प्रवेश करे हैं- अथवा जैसे जीव देह में प्रवेश करे है- इसीप्रकार सव ग्रह मनुष्य के शरीरमें प्रवेशकरते हैं परंतुदीखते नहीं हैं- इसश्लोकके पोषक दृष्टांत और आचार्योंने बहुत दीने हैं- परंतु हमने ग्रन्थ बढ़ने के भय से नहिं लिखे।

इस उन्मादरोग में सर्वत्रदेव शब्द करके देवतानकेसे आचरण वाले देवतान के अनुचर (नौकर) जानने चाहियें- क्यौंकि देवतान्को मनुष्यनके अपवित्र देह में प्रवेश होना असंभ

१ ग्रहाग्रहन्ति येषुतेषां तेषु विशेषतः। दिनेषु बलिहोमादीन्प्रयुंजीत चिकित्सकः॥

व है सो (सुश्रुत) में लिखा है ॥

नतेमनुष्यैः सहसंविशान्ति नवामनुष्यान् क्वचिदाविशन्ति येत्वाविशन्तीतिवदन्तिमोहा त्नेभूतविद्याविषयादपोह्याः १ तेषांग्रहाणांपरिचारकायेकोटीसहस्रायुतपद्मसंख्याः। असृग्वसामांसभुजःसुभीमानिशाविहाराश्चतथाविशंति २

अर्थ- वो देवादिक मनुष्य के साथ मिलते नहीं हैं नवे मनुष्यों की देह में प्रवेश करते हैं- और जो वैद्य प्रवेश करते हैं- ऐसे कहते हैं- वो अज्ञान से कहते हैं- ऐसा वैद्य भूत विद्या वाला जान कर त्याज्य है ॥१॥ तौ कौन प्रवेश करते हैं इसवास्ते कहते हैं- तेषामिति- अर्थात् उन देवताओं के परिचारक (नोकर) जो करोड़ों हज़ारों - पद्म संख्यक - रुधिरबसा- मांसके भोजन करने वाले भयंकर- रात्रि में विचरने वाले हैं वो प्रवेश करते हैं ॥

इतिश्रीपण्डितदत्तराममाथुरनिर्मितभावार्थबोधनीमाथुरीभाषाटीकायांउन्मादरोगनिदानसमाप्तः

अथअपस्मार निदान

प्रथमसुश्रुतोक्तइसरोगकीनिरुक्ति लिखतेहैं

स्मृतिर्भूतार्थविज्ञानमयःस्तत्परिवर्जने। अपस्मारइतिप्रोक्तस्ततोयंव्याधिरन्तकृत्

अर्थ- स्मृतिशब्द प्राणियों के अर्थज्ञान को कहते हैं- और अपशब्द उसका नाशक है- इसीसे स्मृति और अपइन दोनों शब्दों से- अपस्मार यह शब्द भया इसी पूर्वोक्त हेतु को न ज्ञान के नाश से यह रोग जलादिक के बिषै प्रवेश होनेसे प्राणान्त कारक है ॥ १ ॥

अपस्मारस्यनिदानपूर्विकांसम्प्राप्तिमाह

चिंताशोकादिभिर्दोषाः क्रुद्धाहृत्स्रोतसिस्थिताः। कृत्वास्मृतेरपध्वंसमपस्मारं प्रकुर्वते ॥

अर्थ- चिंता- शोक- आदि शब्द से क्रोध लोभ मोहादि से कुपित भये जो दोष (बात-पित्त-कफ) सो हृदय में स्थित जो मन के बहने वाली नाड़ी उन में प्राप्त हो हर स्मरण (ज्ञान) का नाश कर अपस्मार रोग को प्रगट करे है ॥ २ ॥

वाग्भट के मत से निदान

मिथ्यायोगेन्द्रियार्थानांकर्मणामतिसेवनात्
विरुद्धमलिनांकर्मविहारकुपितैर्मलैः ३
वेगनिग्रहशीलानामहिताशुचिभोजनात्
रजस्तमोभिभूतानांगच्छतांवारजस्वलाम् । त
थाकामभयोद्वेगक्रोधशोकादिभिर्भृशम् चे
तसोभिभवैः पुंसामपस्मारोभिजायते ॥

अर्थ- इन्द्रीन्के अर्थ कहिये बिषय और कर्म इनका मिथ्यायोग- अतियोग- और अयोग के सेवन करने से- तथा बिरुद्ध और मलिन भोजन और बिहार से कुपित भये जो दोष उन से तथा मूत्र- मलादि वेगों के धारण करने वालों के- अहित और अपवित्र भोजन करने से - रजोगुण- तमोगुणी- मनुष्यों के-र

जस्वला स्त्री से गमन करने से तथा काम-भय-उद्वेग-क्रोध-शो क-इन कारणों से चित्त (मन) के बिगड़ने से मनुष्यों के अप स्मार रोग प्रगट होय है-तहां श्रवण-स्पर्शन-दर्शन-रसन-घ्राण-एइन्द्रीन्के अर्थ हैं-शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गंध-एइन्द्री न्के विषय हैं-इनके अति सेवन से-उदाहरण-दिखाते हैं-जैसे पुरुष का इष्ट नाशादि सुनना-मिथ्या योग है-पटहादि वाजोंका सुनना अति योग है-कुछ न सुनना अयोग है-ऐसेही अपवि त्र आदिको छूना-मिथ्या योग है-अति शीतल-अति गरम छू ना योगस्नान-उबटना आदिका सेवन अतियोग है। किसीको न छूना अयोग है-छोटी वस्तु का देखना मिथ्या योग है-बड़ीवस्तु का देखना अतियोग-और इसी को न देखना अयोग है-रसोंका अति सेवन अतियोग-थोड़ा सेवन मिथ्या योग है-ऐसे बन अयोग है-दुर्गंध का सूंघना-मिथ्या योग है-अति तीक्ष्णगंध का अतियोग है-किसी को न सूंघना अयोग है-तहां कायि ककर्म वाचिक-मानसिक कर्म-तीन प्रकार का कर्म कहा है-तहां कायिक कर्म जैसे कुसमय में दंड कसरत का करना मि थ्या योग-बहुत करना अति योग कुछ न करना अयोग है-खोटा और झूंठ बोलना वाणी का मिथ्या योग है-बहुत बोल-ना अति योग - चुप हो जाना अयोग है-मानस कर्म जैसे शो-कादि चिंतवन मानसिक मिथ्या योग है-अन्येतु चिंताकरना अति योग है-और किसी की चिंता न करना-अयोग है इति-॥ ५॥ आगे श्लोक सब माधव के हैं ॥

अपस्मारकेसामान्यल•

तमः प्रवेशः संरंभोदोषोद्रेकहतस्मृतिः॥

अपस्मारइतिज्ञेयोगदोघोरश्चतुर्विधः ॥ ✣ ॥

अर्थ- अन्धकार में प्रवेश करने के समान ज्ञान का न होना- नेत्र-टेढे-बाँके-फिरे-दोषों के बढने से ज्ञान का नष्ट होना -ये लक्षण जिस रोग में होंय ऐसा यह भयंकर (अपस्मार) रोग चार प्रकार का है इस्कौ लौकिक में मिरगी- फेफरे ऐसे कहते हैं ॥

पूर्वरूप

हृत्कंपः शून्यतास्वेदो ध्यानंमूर्च्छाप्रमूढ़ता ॥
निद्रानाशश्चतस्मिंस्तुभविष्यतिभवंत्यथ २

अर्थ- जब अपस्मार होने वाला होय है तबयेलक्षण होते हैं-हृदयकाँपे- औरशून्य पड़जाय- (कुछ सूझे नहीं) चिंता-मूर्च्छा पसीने आवे-ध्यान लगजाय- मूर्च्छा कहिये मन का मोह- और प्रमूढ़ता कहिये इन्द्री का मोह होय- निद्रा जाती रहै ॥

वातजअपस्मारकेलक्षण

कंपतेप्रदशेद्दंतान्फेनोद्वामीश्वसत्यपि । प
रुषारुणकृष्णानिपश्येद्रूपाणिचानिलात् ।

अर्थ- बात के अपस्मार से रोगी काँपे - दाँतों को चबावे- मुख से झाग गेरे- और श्वास भरे- तथा कर्कश- अरुण बर्ण- और कालावर्ण मनुष्यों का दीखै अर्थात् कोई नील वर्ण का मनुष्य मेरे पास दौड़ा आता है- इसी प्रकार पित्त से पीले बर्ण का पुरुष दौड़ा आता है- और कफ से सफ़ेद रंग का पुरुष मेरे सामने दौड़ा आता है ऐसे जानना ॥

पित्तकीमृगीकेलक्ष॰

पीतफेनांगवक्त्राक्षः पीतासृग्रूपदर्शनः ।

सत्तृष्णोष्णा ऽ नलव्याप्तलोकदर्शीचपै
त्तिकः ४॥

अर्थ-पित्तकी मिरगी वाले के झाग-देह-मुख-और नेत्र ए पीले होते हैं- और वह पीले-रुधिर के रंग कीसी सब ब स्तु देखे- प्यास युक्त और गरमी के साथ-अग्नि से व्याप्तभय ऐसा सब जगत को देखे

कफकीम्रगीकेलक्षण

शुक्लफेनांगवक्त्राक्षः शीत हृष्टांगजोगुरुः
पश्यन्शुक्लानिरूपाणिमुच्यतेश्लैष्मिकश्चि
रात् ५॥

अर्थ- कफ की म्रगी वाले के- झाग- अंग-मुख-और नेत्र सपेद होंय- देह शीतल होय-तथा देह के रोमांच खड़े रहैं-भारी होंय-और सब पदार्थ सपेद दीखैं - यह अपस्मार (मिरगी) रोग देर में छोड़े- यासे यह सूचना करी कि बात पित्त की म्रगी जलदी रोगी को छोड़ देती है

सन्निपातकीम्रगीकेलक्ष.

सर्वैरेतैः समस्तैश्चलिंगैर्ज्ञेय स्त्रिदोषजः।
अपस्मारः सचासाध्योयः क्षीणस्याऽनव
श्चयः

अर्थ- जिस में तीनों दोषों के लक्षण मिलते हों वो त्रिदोषज अपस्मार जानना-यह असाध्य है- और जो क्षीण पुरुष के होय वोभी असाध्य है-तथा पुराना पड़गया होय वोभी-अपस्मार (मिरगी) रोग असाध्य है ॥

मिरगीकेअसाध्य लक्षण

प्रतिस्फुरन्तंबहुशः क्षीणंप्रचलितभ्रुवम्
नेत्राभ्यांचविकुर्वाणमपस्मारोबिनाशयेत्।

अर्थ- बार बार कंप युक्त होय - क्षीण हो गया हो - भ्रकुटी (भोंह) का चलाने वाला - और नेत्र टेढ़े बांके करने वाला - अैसा अपस्मारी रोगी जीवे नहीं - ॥

मिरगीरोगकीपाली

पक्षाद्वाद्वादशाहाद्वामासाद्वाकुपितामलाः
अपस्मारायकुर्बन्तिवेगंकिंचिदथोत्तरम्

अर्थ- कोप को प्राप्त भये जो दोष सोपंद्रवे दिन अथवा बारवे दिन अथवा महीना भर में मिरगी रोग प्रगट करे - तिनमें पैत्तिक १५ दिन बातिक १२ दिन - और श्लैष्मिक ३० दिन में आती है इस जगह बारवें दिन के पिछाड़ी पक्ष कहना ठीक था फिर पहिले पक्ष धरने का यह प्रयोजन है कि अधिक काल करके ही दोष बेग करते हैं - यह कहा ((किंचिदथोत्तरम्)) इस पद से यह सूचना करी है कि जिस जिस दोष - का जो जो काल कहा है - उस्से पहिले बी दोषों के तारतम्य सें मिरगी रोग होय है अैसे जानना - (शंका) बेग उत्पन्न करके अपस्मार के प्रगट कर्त्ता दोष देह में सदा रहते हैं फिर वो सर्व काल में वेग क्यों नहीं करते द्वादशादि दिन में क्यों करते हैं इस बिषय में दृष्टान्तरूप समाधान कहते हैं ॥

देवेबर्षत्यपियथाभूमौबीजानिकानिचि
त्। शरदिप्रतिरोहन्तितथाव्याधिसमु-
च्छ्रयः॥

अर्थ- जैसे चातुर्मास में इन्द्र वर्षा करै वी है परन्तु कोई जब - गेंहूं - चना - आदि बीज शरदऋतु में ही ऊगते हैं - तैसेही सर्व

रोग के बीज रूप बातादिक दोष कदाचित् किसी अपस्मारा
दि व्याधि बिशेष के निदानादिक का संगम होने से उस रोग
को प्रगट करते हैं- अथवा इस्का असल प्रयोजन यह है
कि बीज के अङ्कुर फूटने के- तेज- बायु- पृथ्वी- जल- येस
हाय बी हैं परन्तु वे सब काल विशेष की प्रतीक्षा (इच्छा) क
रते हैं- अङ्कुर आने को कालही सहाय चाहिये अर्थात् जिस
काल में जिस अङ्कुर का बीज आता है- वो उसी काल में आवे
गा- बीच में कभी नहीं आने वाला- यही न्याय चातुर्थिक ज्वरा
दिकों में भी जानना ॥ ९ ॥

इति अपस्मार निदानम्

अथवातव्याधिनिदानम्

रूक्षशीताल्पलघ्वन्नव्यवायातिप्रजागरैः
विषमादुपचाराच्च दोषास्रक्स्रावणादपि
॥ १ ॥ लंघनप्लवनात्यध्वव्यायामातिविचे
ष्टनैः ॥ धातूनांसंक्षयाच्चिन्ताशोकरोः
गातिकर्षणात् ॥ २ ॥ वेगसंधारणादामाद
भिघाताद भोजनात् ॥ नर्मबाधाद्गजोष्ट्रा
श्व शीघ्रयानादिसेवनात् ॥ ३ ॥ देहे
स्रोतांसिरिक्तानि पूरयित्वाऽनिलोवली ॥
करोतिविविधान्व्याधीनसर्वांगैकांगसं
श्रयान् ॥ ४ ॥

अर्थ- रूखा- शीतल- थोड़ा- और हलका ऐसे अन्नखा
ने से- अति मैथुन के करने से- बहुत जागने से- विषमउपचार

करने से- दोष- (कफ- पित्त- मल- मूत्रइ·) और रुधिर इनके निकलने से अर्थात् बमन बिरेचन से- लंघन- अर्थात् अखाड़े आदि में कला खेलने से- नदि आदि में तैरने से- बहुत चलने से- अति दंड कसरत आदि श्रम के करने से- अत्यन्त बिरुद्ध चेष्टा करने से-रस-रुधिर आदि धातून्के क्षय होने से चिन्ता- शोक- और रोग द्वारा कृश होने से-मल- मूत्रादिकों के बेग रोकने से- आगे से लकड़ी- आदि की चोट लगने से- उपवास (व्रत) के करने से- हृदय ते आदि ले सब मर्म स्थानों में चोट के लगने से- हाथी- ऊंट- घोड़ा- इत्यादि जल्दी चलने वाली- सवारी पर बैठने से कोप को प्राप्त भई जो बलबान् बायु सो देह में खाली जो नस उनमें प्राप्त हो- सर्वांग- अथवा एक अंग में व्याप्त होने वाली ऐसी अनेक प्रकार की बात व्याधि उत्पन्न करे ॥४॥

पूर्वरूप

अव्यक्तंलक्षणंतेषांपूर्वरूपमितिस्मृतम्।
आत्मरूपंतुतद्व्यक्तमपायोलघुतापुनः ५

अर्थ- तिस वक्ष्माण बात ब्याधी के जो अप्रगट लक्षण उस्को- पूर्वरूप- ऐसे कहते हैं- ज्वरादिकों के सदृश बिशिष्ट नहीं हैं- और जो रूप प्रगट होय अर्थात् दोषादि भेद करके यथार्थ दीखे उस्को उस ब्याधि का लक्षण जानना । अपान वायु को चंचल होने से -स्तंभ- संकोच- कंपादिक का कदाचित् अभाव होय है- और लघुता शरीर की उस वायु करके धातु शोषण करने से अथवा अपाय लघुता कहिये-सब बात बिकारों का अपाय कहिये अभाव होय- और बात बिकारों की लघुता कहिये अल्पत्व करके जो स्थिति है सो निः शेष निवृत्ति नहीं होय ॥

अब नाना प्रकार की व्याधि करै है ये जो कहि आये हैं उसको आगे के श्लोक में कहते हैं

संकोचः पर्वणांस्तंभोभंगोऽस्थ्नांपर्वणामपि
लोमहर्षः प्रलापश्च पाणिपृष्ठशिरोग्रहः
॥ ६ ॥ खांज्यपांगुल्यकुब्जत्वंशोथोंऽगा
नामनिद्रता । गर्भशुक्ररजोनाशः स्पंदनं
गात्रसुप्तता ॥ ७ ॥ शिरोनासाक्षिजत्रूणांग्री
वायाश्चापिहुंडनम् ॥ भेदस्तोदोऽर्तिराक्षे
पोमोहश्चायासएवच ॥ ८ ॥ एवंविधानिरू
पाणिकरोतिकुपितोऽनिलः । हेतुस्थानवि
शेषाच्चभवेद्रोगविशेषकृत् ९

अर्थ- संधीन्का संकोच और स्तंभ- हड्डीन्का और संधीनका फूटने कीसी पीड़ा- रोमांच- वाह्यात् वकना- हाथ-पैर- और मुख- इनका जकड़जाना- खजत्व- पांगुरा होना- कुबड़ा पना- अंगों का सूजना- निद्राका नाश- गर्भका न रहना- शुक्र- और- रज- (स्त्री का आर्तव) इन्का नाश- कंप- अंगों में शून्यता- मस्तक- नाक- मुख- जत्रु- और नाड़- इनका भीतर जाना अथवा टेढे होजांय- भेद सदृश पीड़ा- नोचनेकी सी पीड़ा- शूल- आक्षेप रोग जो आगे कहेंगे- मोह- श्रम- कुपितभई जो वायु या प्रकार लक्षण करै है- वो वायु हेतु- और स्थान इनके भेद से विशिष्ट रोग उत्पन्न करने वाली होती है जैसे- कफावृत्तहोने से मन्यास्तंभ रोग करे- यदि पक्वाशय में वात स्थित होय तौ आंतों का गूंजना इत्यादि रोग करै है ॥ ९ ॥

कोष्ठाश्रितवायुकेकार्य

तत्रकोष्ठाश्रितेदुष्टेनिग्रहोमूत्रवर्चसोः । व

ध्मेहृद्रोगगुल्मार्शः पार्श्वशूलंचमारुते २०।

अर्थ- कोठे में स्थित बायु दुष्ट होने से - मल- मूत्र-का अवरोध होय- बदरोग- हृदयरोग- गोला- ववासीर- और पसवाड़ों में पीड़ा इतने रोग उत्पन्न करे

सर्वांगकुपितबायुकेकार्य

सर्वांगकुपितेबातेगात्रस्फुरणजृंभणम्। वेदनाभिः परीतस्यस्फुटंतीवास्यसंधयः२१

अर्थ- सब अंग की वायु कुपित होने से - अङ्गों का फरकना- जंभाई- और संधी-बेदनायुक्त-होती फूटनेकोसी पीड़ा होय २१

गुदामेंस्थितबायुकेकार्य

ग्रहो विण्मूत्रवातानां शूलाध्मानाश्मशर्कराः॥ जंघोरुत्रिकहृत्पृष्ठरोगशोफो गुदेस्थिते २२॥

अर्थ- वायु गुदा में स्थित होने से मल-मूत्र- और बायुकारुकना-शूल- अफरा-पथरी-रोग-जंघा-उरू- त्रिकस्थान- हृदय -पीठ-इन में पीड़ा और सूजन ये रोग होते हैं ॥ २२॥

आमाशयस्थितवायुकेकार्य

रुक्पार्श्वोदरहृन्नाभेस्तृष्णोद्गारविषूचिकाः॥ कासःकंठास्यशोषश्चश्वासश्चामाशयेस्थिते॥२३॥

अर्थ- वायु आमाशय में स्थित होने से-पसवाड़ा-उदर-हृदय- और नाभि-इन्में पीड़ा होय-प्यास- डकार- और हैज़ा-(मु

१ इस जगह गुदा शब्द करके उत्तर गुदा अर्थात् पक्वाशय जानना- गुदा नहीं जानना क्यों कि गुदा में कहे तौ उस्को अश्मरी (पथरी) कर्तृत्व नहीं होसके

ख और गुदा के द्वारा अन्नकी प्रवृत्ति) खाँसी - कंठ - मुखका सूखना श्वास ये लक्षण होते हैं ॥ २३ ॥

पक्वाशयस्थवायुकेकार्य

पक्वाशयस्थोऽन्त्रकूजं शूलाटोपौ करोति च।
मूत्रकृच्छ्रपुरीषत्वमानाहं त्रिकवेदनाम् ॥

वायु पक्वाशय में होय तौ आँतों का गूंजना - शूल - आटोप (गुडगुड़ा शब्द) मल - मूत्र - कष्ट से निकले - अफरा - त्रिकस्थान में पीड़ा - इन लक्षणों को करे ॥ २४ ॥

इन्द्रीनमें स्थितवायुकेकार्य

श्रोत्रादिष्विंद्रियवधं कुर्यात्क्रुद्धसमीरणः

अर्थ- कान से आदिजो और इन्द्री हैं उन में कुपित वायु यदि स्थित होय तौ इन्द्रीन्का नाश करे ॥

रसधातुगतबायूकेलक्ष.

त्वग्रूक्षा स्फुटिता सुप्ता कृशा कृष्णा च तुद्यते। आतन्यते सरागा च पर्वरुक् त्वग्गतेऽनिले ॥ २५ ॥

बायु त्वग्गत अर्थात् धातुरूपत्वचा में प्राप्त होने से त्वचा रूखी - और फटी - शून्य - कर्कशा - और काली होजाय और उसमें चमका चलैं - तथा तन जाय - कुछ तांवे के समान लाल-रंग होजाय - और हृदयादि मर्मों में पीड़ा होय ॥ २५ ॥

रक्तगतबायुकेलक्षण

रुजस्तीव्राः ससंतापा वैवर्ण्यं कृशताऽरुचिः।
गात्रे चारूंषि भुक्तस्य स्तंभश्चासृग्गतेऽनिले ॥ २६ ॥

अर्थ- वायुरुधिर मिश्रित होने से - सन्तापयुक्त - तीव्रवेदनाहो

य- देह का बिवर्ण होय- कृशता- अरुचि- और देह में फोड़ा तथा भोजन करने के उपरांत- देहका जिकड़जाना- ये लक्षण हैं

मांसमेदोगतबायुकेलक्ष॰

गुर्वंगन्तुद्यतेस्तब्धंदंडमुष्टिहतंयथा। स
रुक्श्रमितमत्यर्थंमांसमेदोगतेऽनिले ॥

अर्थ-मांस और मेद में बायु के पहुंचने से- अंग भारी होजाय - चोंटने के समान पीड़ा होय- अथवा निश्चल होजाय- अथवा मुक्का मारने कीसी- तथा लकड़ी मारने कीसी पीड़ा होय-

मज्जास्थिगतबायूकेलक्षण

मेदोऽस्थिपर्वणांसन्धिशूलंमांसबलक्षयः
अस्वप्नंसततारुक्चमज्जास्थिकुपितेऽनि-
ले ॥ १८ ॥

अर्थ-मज्जा और हड्डी इन ठिकाने परवायु का कोप होने से हड़ फूटनी हो- संधि २ में पीड़ा होय- मांस और बल ये क्षीण होजांय- निद्रा आवे नहीं- और निरन्तर पीड़ा होय- ॥१८॥ इसजगह सुश्रुतने कुछ विशेष लिखा है

शुक्रगतबायुकेलक्षण

क्षिप्रंसुंचतिबध्नातिशुक्रंगर्भमथापिवा। बि
कृतिंजनयेच्चापि शुक्रस्थःकुपितोऽनिलः १९

अर्थ-शुक्र स्थान की वायू का कोप होने से वो बायु शुक्र को जल्दी पतन करे और वंधन करे- अथवा गर्भ को जलदी छोड़े- और बंधन करे- और गर्भका अथवा शुक्र का विकार प्रगट करे ॥ १९ ॥

शिरागतबायूकेलक्ष०

कुर्याच्छिरागतःशूलं शिराकुंचनपूरणं ॥
सबाह्याभ्यन्तरायामखल्लीकुब्जत्वमेवच ॥

अर्थ-वायू शिरा (नाडी) गत होने सें शूल-नाडी का संकोच- और स्थूलत्व करे और बाह्यायाम- अभ्यंतरायाम- खल्ली और कुबड़ापन इन रोगों को उत्पन्न करे ॥२०॥

स्नायुगत औरसंधिगत बायूकेलक्षण

सर्वांगैकांगरोगांश्च कुर्यात्स्नायुगतोनिलः॥
हंतिसंधिगतःसंधीन् शूलशोथौकरोतिच

अर्थ-वायू स्नायुगत होने से सर्वांग और एकांगरोगों कोकरै- संधिगतहोने से संधिका विश्लेष (जुदाजुदाहोना) औरसंधि का जकड़जाना तथाशूल और सूजनइनरोगोंकोप्रगटकरे २१

पित्त औरकफइनसे आवृतहुई प्राणादिकवायू के आधेआधे श्लोकोंमेंलक्षणकहतेहैं

प्राणेपित्तावृतेछर्दिर्दाहश्चैवोपजायते। दौर्बल्यंसदनंतंद्रावैरस्यंचकफावृते २२ उदानेपित्तयुक्तेतुदाहोमूर्च्छाभ्रमःक्लमः। अस्वेदहर्षौमन्दाग्निः शीतताचकफावृते २३ स्वेददाहौष्ण्यमूर्च्छाःस्युःसमानेपित्तसंयुते। कफेनसंगोविण्मूत्रेगात्रहर्षश्चजायते २४ अपानेपित्तयुक्तेतुदाहौष्ण्यंरक्तमूत्रता। अधःकायेगुरुत्वंचशीतताचकफावृते। २५। व्यानेपित्तावृतेदाहोगात्रविक्षेपणंक्लमः ॥

स्तंभनोदंडकश्चापिशोथशूलोकफावृते२६

अर्थ- प्राणवायु- पित्तसंयुक्त होने से वमन- और दाह- उत्पन्न होय- और कफ संयुक्त होने से दुर्बलपना- ग्लानि- तन्द्रा- और मुख में विरसता ये होंय- उदानवायु- पित्तयुक्त होने से- दाह- मूर्च्छा- भ्रम- अनायास- श्रम- ये होंय- और कफ युक्त होय तौ पसीना नहीं आवैं- रोमांच- अग्निमंद हो- य- और शीत लगै- समानवायु- पित्त युक्त होने से- पसीना- दाह- गरमी- और मूर्च्छा- ये होते हैं- पित्त कफ युक्त होने से- म ल- मूत्र का रुकना और रोमांच होय- अपानवायु- पित्त युक्त हो ने से कमर के नीचे भाग में- भारीपना- और सरदी का लगना - व्यानवायु- पित्त युक्त होने से- दाह- गात्रों का विक्षेप अर्था त् इधर उधर को फेरना- और श्रम होय- कफ युक्त होने से श रीर लकड़ी के समान स्तंभ होय- सूजन और शूल होय- इस जगह प्राणादि पंचवायून के परस्पर मिलने से बीस प्रकार के आव- र्ण चरकोक्त जानलेने और वाग्भट के मत से आवर्ण बाईस प्रकार के हैं हमने ग्रंथ के बिस्तारभय से छोड़ दीने हैं ॥२६॥

आक्षेपकके सामान्यलक्षण

यदातुधमनीः सर्वाः कुपितोऽभ्येतिमारुतः
तदाक्षिपत्याशुमुहुर्मुहुर्देहंमुहुश्चरः मुहु
र्मुहुस्तदाक्षेपादाक्षेपकइतिस्मृतः ॥ २७ ॥

अर्थ- जिस काल में वायु कुपित होकर सब धमनी ना ड़ीन में जाय कर प्राप्त होय- तब उस जगे वह बार बार सं- चार कर के देह को बारंबार आक्षिप्त करती है अर्थात् हाथी प र बैठने वाले